सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

# परिवहन विशेष

वर्ष 02, अंक 357, नई दिल्ली । बुधवार, 05 मार्च 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

कष्ट सहने पर ही हमें अनुभव होता है और दर्द हो, तभी हम सीख पाते हैं

03 रक्षक कप 2025 की शानदार शुरुआत, ईस्टर्न रेंज ने ट्रैफिक एकादश...
06 रंगों के त्योहार होली के पीछे का विज्ञान
08 फोटो को लेकर विवादों में पीसीसी अध्यक्ष, लिंगराज मंदिर के अंदर ली गई फोटो अब वायरल

## राज्य परिवहन अपीलीय न्यायाधिकरण दिल्ली फिर से हुई शुरू

संजय बाटला

**नई दिल्ली।** दिल्ली के लिए राज्य परिवहन अपीलीय न्यायाधिकरण (एसटीएटी) एक निकाय है जो राज्य परिवहन प्राधिकरण या क्षेत्रीय परिवहन प्राधिकरण की अपीलों पर सुनवाई करता है। एसटीएटी इन प्राधिकरणों के निर्णयों की पुष्टि, संशोधन या निरस्तीकरण के लिए आदेश पारित कर सकता है। एसटीएटी उन लोगों की अपीलों पर सुनवाई कर सकता है जो राज्य परिवहन प्राधिकरण या क्षेत्रीय परिवहन प्राधिकरण के आदेशों से व्यथित हैं। एसटीएटी ऐसे आदेश पारित कर सकता है जो इन प्राधिकरणों के निर्णयों की पुष्टि, संशोधन या निरस्तीकरण कर सकते हैं। एसटीएटी मामले को अपीलीय प्राधिकारी, पुनरीक्षण प्राधिकारी या मूल प्राधिकारी को वापस भेज सकता है, एसटीएटी का निर्णय अंतिम होता है और कोई भी व्यक्ति जो राज्य परिवहन प्राधिकरण या क्षेत्रीय परिवहन प्राधिकरण के आदेश से व्यथित हो एसटीएटी में अपील कर सकता है। **एसटीएटी में एक न्यायिक अधिकारी शामिल होता है जो जिला न्यायाधीश के पद से नीचे नहीं होता है या जो उच्च न्यायालय का न्यायाधीश बनने के लिए योग्य होता है** जैसा की आप जानते है सन 2014 में दिल्ली सरकार ने ड्राइविंग लाइसेंस जारी करने में देरी, वाहन पंजीकरण और परिवहन विभाग से संबंधित अन्य मुद्दों के संबंध में लोगों की शिकायतों के निवारण के लिए एक न्यायाधिकरण का गठन किया था। उपराज्यपाल नजीब जंग ने परिवहन विभाग से संबंधित लोगों की शिकायतों के निवारण के लिए राज्य परिवहन अपीलीय न्यायाधिकरण की स्थापना के लिए अधिसूचना जारी की थी। **न्यायाधिकरण के बारे में जानकारी देते हुए परिवहन आयुक्त पुनीत कुमार गोयल ने बताया था "मोटर वाहन अधिनियम 1988 की धारा 89 में राज्य या क्षेत्र से संबंधित किसी भी पीड़ित व्यक्ति के लिए अपील की व्यवस्था है"।** 2022 में परिवहन आयुक्त के पद पर आसीन आशीष कुंद्रा तत्काल में प्रमुख सचिव उपराज्यपाल दिल्ली एवम्तत्काल में कार्यरत परिवहन आयुक्त प्रशांत गोयल की मेहरबानी से सितंबर 2022 से आज तक राज्य परिवहन अपीलीय न्यायाधिकरण दिल्ली कार्य नहीं कर पाई और दिल्ली के व्यवसायिक वाहन मालिक विभाग द्वारा जारी आदेशों से रहे परेशान। **विश्वस्त सूत्रों की माने तो राज्य परिवहन प्राधिकरण शाखा (एसटीए मुख्यालय) के भरसक प्रयास और वाहन स्वामियों की मांग पर बार बार राज्य परिवहन अपीलीय न्यायाधिकरण दिल्ली को शुरू करने के लिए चलाई गई फाइल के बाद आखिर सोमवार को राज्य परिवहन अपीलीय न्यायाधिकरण दिल्ली को शुरू करने के लिए परिवहन आयुक्त की आज्ञा प्राप्त कर 2 स्टाफ एवम्अन्य आवश्यक समान उपलब्ध करा दिया गया है।** लेकिन अभी भी परिवहन आयुक्त द्वारा राज्य परिवहन अपीलीय न्यायाधिकरण दिल्ली को शुरू करने के लिए कोई स्थाई स्थान उपलब्ध नहीं करवाया गया है जो अनिवार्य है पर उसके बावजूद वाहन मालिकों के लिए खुशी की बात यह है की राज्य विद्यालय अपीलीय न्यायाधिकरण जहां कार्यरत हैं और पूर्व में अगस्त 2022 तक जहां राज्य परिवहन अपीलीय न्यायाधिकरण दिल्ली कार्य कर रही थी या दिल्ली सचिवालय से सोमवार 10 मार्च 2022 तक राज्य परिवहन अपीलीय न्यायाधिकरण दिल्ली कार्य शुरू कर देगी। सितम्बर 2022 से अब तक मोटर वाहन अधिनियम 1988 की धारा 89 में राज्य या क्षेत्र से संबंधित किसी भी पीड़ित व्यक्ति जो अपील करना चाहते थे पर कर नहीं पा रहे थे और परेशान थे अब वह अपील कर पाएंगे। **विश्वस्त सूत्रों की माने तो जल्द ही परिवहन विभाग आधिकारिक तौर पर राज्य परिवहन अपीलीय न्यायाधिकरण दिल्ली के अस्थाई स्थान की घोषणा कर देगी।**

टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)

TOLWA

website : www.tolwa.in
Email : tolwadelhi@gmail.com
bathlasanjaybathla@gmail.com

रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल -0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण

रजिस्टर्ड कार्यालय :- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063
कॉरपोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मैन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

## देश के पहले हाइड्रोजन ट्रक का ट्रायल किया शुरू, नितिन गडकरी ने कही यह बात...

भारत की प्रमुख वाहन निर्माता टाटा मोटर्स की ओर से कई सेगमेंट और तकनीक के साथ वाहनों को बिक्री के लिए उपलब्ध करवाया जाता है। कंपनी की ओर से 04 मार्च 2025 को एक कार्यक्रम के दौरान देश के पहले हाइड्रोजन ट्रक का ट्रायल शुरू कर दिया है। इस मौके पर नितिन गडकरी ने क्या बयान दिया है। आइए जानते हैं।

**नई दिल्ली।** भारतीय बाजार में निजी वाहनों के साथ ही कमर्शियल वाहनों की बिक्री करने वाली प्रमुख वाहन निर्माता टाटा मोटर्स की ओर से कई तकनीक के साथ वाहनों को ऑफर किया जाता है। कंपनी की ओर से 04 March 2025 को Hydrogen तकनीक से चलने वाले ट्रक का ट्रायल शुरू किया है। इन ट्रकों में किस तरह की खासियतों को दिया गया है। इस मौके पर मौजूद केंद्रीय मंत्री Nitin Gadkari ने क्या बयान दिया है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

### टाटा ने शुरू किया हाइड्रोजन ट्रक का ट्रायल

टाटा मोटर्स की ओर से देश के पहले हाइड्रोजन तकनीक से चलने वाले ट्रक्स का ट्रायल शुरू कर दिया है। तीन मार्च 2025 को आयोजित एक कार्यक्रम में केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी के साथ प्रल्हाद जोशी ने इन ट्रक्स को हरी झंडी दिखाकर ट्रायल के लिए रवाना किया।

### हाइड्रोजन तकनीक वाले ट्रक्स का दो साल तक होगा ट्रायल

टाटा मोटर्स की ओर से जानकारी दी गई है कि नई तकनीक वाले इन ट्रक्स का दो साल तक ट्रायल किया जाएगा। इस दौरान इन ट्रक्स को देश के अलग-अलग हिस्सों में चलाया जाएगा। कंपनी की ओर से कुल 16 ट्रक्स को मुंबई, पुणे, दिल्ली-एनसीआर, सूरत, वदोडरा, जमशेदपुर और कलिंगनगर में चलाया जाएगा। इनमें अलग अलग क्षमता और पेलोड के ट्रक्स शामिल होंगे। जिसके बाद ही इनके लॉन्च को लेकर कोई निर्णय किया जाएगा।

### नितिन गडकरी ने कही यह बात

केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने इस मौके पर कहा कि हाइड्रोजन भविष्य का ईंधन है जिसमें उत्सर्जन को कम करके और ऊर्जा आत्मनिर्भरता को बढ़ाकर भारत के परिवहन क्षेत्र को बदलने की अपार क्षमता है। इस तरह की पहल भारी-भरकम ट्रकिंग में टिकाऊ गतिशीलता के लिए संक्रमण को गति देगी और हमें एक कुशल, कम कार्बन वाले भविष्य के करीब ले जाएगी।

### प्रल्हाद जोशी ने दिया यह बयान

नितिन गडकरी के साथ ही इस मौके पर केंद्रीय नवीन एवं नवीनीकरण ऊर्जा मंत्री प्रल्हाद जोशी भी मौजूद थे। केंद्रीय मंत्री प्रहलाद जोशी ने बताया कि भारत के टिकाऊ और शून्य-कार्बन भविष्य की ओर बढ़ने के लिए हाइड्रोजन एक महत्वपूर्ण ईंधन है। इस परीक्षण की शुरुआत भारत के परिवहन क्षेत्र को कार्बन मुक्त करने में हरित हाइड्रोजन की क्षमता को प्रदर्शित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। राष्ट्रीय हरित हाइड्रोजन मिशन का हिस्सा यह पहल वैश्विक जलवायु लक्ष्यों में योगदान करते हुए नवाचार को बढ़ावा देने और भारत की ऊर्जा स्वतंत्रता प्राप्त करने की हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाती है।

### अलग अलग तकनीक के साथ आएंगे ट्रक

टाटा की ओर से हाइड्रोजन ICE, हाइड्रोजन फ्यूल सेल इलेक्ट्रिक जैसी तकनीक के साथ इन ट्रक्स को लाया जाएगा। जिनके टैंक में एक बार हाइड्रोजन भरने के बाद 300 से 500 किलोमीटर तक चलाया जा सकेगा।

## रेलवे स्टेशन पर भगदड़ : रेल मंत्रालय ने बदला डीआरएम, पुष्पेश आर. त्रिपाठी को कमान

सुखविंदर सिंह को जुलाई 2023 में दिल्ली मंडल डीआरएम नियुक्त किया गया था और उनका दो साल का कार्यकाल इस साल के अंत में समाप्त हो रहा था। रेल मंत्रालय द्वारा जारी तबादला आदेश में कहा गया है कि उत्तर मध्य रेलवे जोन से पुष्पेश आर त्रिपाठी सिंह की जगह लेंगे। हालांकि आदेश में सिंह की नई पोस्टिंग के बारे में कुछ नहीं कहा गया।

परिवहन विशेष न्यूज

**नई दिल्ली।** नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर भगदड़ में 18 यात्रियों की मौत के एक पखवाड़े बाद जारी एक आधिकारिक आदेश के अनुसार, दिल्ली मंडल रेल प्रबंधक सुखविंदर सिंह का मंगलवार को तबादला कर दिया गया।

### 2023 में नियुक्त हुए थे सुखविंदर सिंह

सुखविंदर सिंह को जुलाई 2023 में दिल्ली मंडल डीआरएम नियुक्त किया गया था और उनका दो साल का कार्यकाल इस साल के अंत में समाप्त हो रहा था।

रेल मंत्रालय द्वारा जारी तबादला आदेश में कहा गया है कि उत्तर मध्य रेलवे जोन से पुष्पेश आर त्रिपाठी सिंह की जगह लेंगे। हालांकि, आदेश में सिंह की नई पोस्टिंग के बारे में कुछ नहीं कहा गया।

### राष्ट्रपति की मंजूरी से निर्णय लिया

आदेश में कहा गया है, रेल मंत्रालय ने राष्ट्रपति की मंजूरी से निर्णय लिया है कि पुष्पेश आर त्रिपाठी, एनएफएचएजी (गैर-कार्यात्मक उच्च प्रशासनिक ग्रेड)/आईआरएसईई (भारतीय रेलवे विद्युत इंजीनियर्स सेवा)/उत्तर मध्य रेलवे को सुखविंदर सिंह, आईआरएसईई के स्थान पर डीआरएम/दिल्ली/उत्तर रेलवे के पद पर स्थानांतरित और तैनात किया जाना चाहिए, जिनके लिए आदेश बाद में जारी किए जाएंगे।"

रेलवे अधिकारियों ने इस बात से इनकार किया कि सिंह का तबादला 15 फरवरी की भगदड़ से जुड़ा है, लेकिन सूत्रों ने बताया कि नई दिल्ली स्टेशन पर हुई त्रासदी के कारण उनकी नई तैनाती आगे बढ़ा दी गई है, जिसमें 18 लोग मारे गए थे और दर्जनों घायल हो गए थे।

## यातायात विभाग अन्य एजेंसियों के साथ मिलकर 100 दिन में सड़कों पर होने वाली समस्याओं का होगा समाधान

दिल्ली में सड़कों पर लगने वाले जाम और बढ़ते सड़क हादसों की समस्या से निपटने के लिए यातायात विभाग ने एक 100-दिवसीय मास्टर प्लान तैयार किया है। इस योजना के तहत दिल्ली में 114 पॉइंट्स की पहचान की गई है जहां सड़कों पर गड्ढे आवारा पशु खराब लाइटें साइनेज का अभाव खराब सड़कें और अन्य कारणों से जाम लगता है।

**नई दिल्ली।** राजधानी में सड़कों पर लगने वाले जाम की समस्या यातायात पुलिसकर्मियों के लिए एक बड़ी चुनौती है। इसके अलावा आए दिन होने वाले सड़क हादसों (delhi road accidents) में लोगों की मौतों का बढ़ता आंकड़ा भी चिंता का विषय है। दिल्ली में लगने वाले जाम और सड़क हादसों पर अंकुश लगाने के लिए सौ दिन का मास्टर प्लान तैयार किया है।

इसके लिए यातायात विभाग ने दिल्ली में 114 प्वाइंट्स चयनित किए हैं, जहां सड़कों पर गड्ढों, आवारा पशुओं, खराब लाइटों, साइनेज का अभाव, खराब सड़कें और अन्य मुख्य कारण हैं, जिससे सड़क पर जाम लगता है और हादसे का खतरा भी बढ़ा रहता है।

### सड़कों पर गाड़ियों का भार, जाम की मुख्य वजह

इस प्लान की खास बात यह है कि समस्या से निपटने के लिए यातायात विभाग के साथ, पीडब्ल्यूडी, नगर निगम, एनडीएमसी, डीटीसी, दिल्ली जल बोर्ड, धार्मिक समिति और शिक्षा विभाग आदि एजेंसियों को सड़क प्रस्तावों को सख्ती से पालन करने और जाम की समस्या को कम करने के निर्देश दिए गए हैं।

यातायात पुलिस के एडिशनल सीपी दिनेश कुमार गुप्ता के मुताबिक, दिल्ली में जाम की समस्या का मुख्य कारण सड़कों पर गाड़ियों का अधिक भार है। इसके अलावा बाटलनेक, टूटी सड़कें, पर्याप्त साइनेज का अभाव भी जाम और हादसों का मुख्य कारण हैं।

इन समस्याओं को हल करने के उद्देश्य से यातायात विभाग ने एक मार्च से एक कार्ययोजना शुरू की है, जिसमें सभी एजेंसियों के सहयोग से सड़कों पर होने वाली समस्याओं को दूर किया जाएगा।

यातायात विभाग ने ऐसे 114 प्वाइंट्स का चयन किया है, जहां सबसे अधिक शिकायतें मिलती थीं। इसमें मुख्य रूप से रिंग रोड, तुगलक रोड, आसफ अली रोड, आउटर रिंग रोड शामिल हैं।

### सड़कों पर होने वाली इन समस्याओं का होगा हल

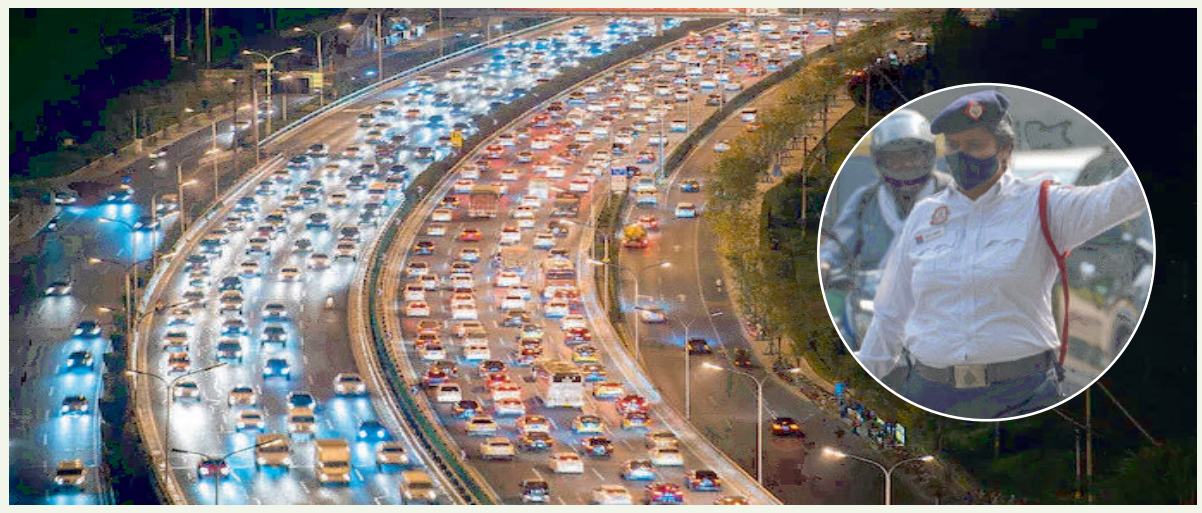

सड़कों की मरम्मत और कारपेटिंग।
रोड मार्किंग, साइनेज, जेब्रा क्रॉसिंग।
जल निकासी, गड्ढों और पानी के रिसाव की मरम्मत।
बिजली के खंभे, ट्रांसफार्मर आदि की शिफ्टिंग।
कूड़ाघर को हटाना व स्थानांतरण करना।
आवारा पशुओं को हटाना।
सड़कों पर कट को खोलना व बंद करना।
दिल्ली नगर निगम द्वारा साप्ताहिक बाजारों का प्रबंधन/स्थानांतरण और वेंडिंग जोन निर्धारित करना।
अधिकृत पार्किंग का प्रबंधन और अवैध पार्किंग को खत्म करना।
अंडरपास व फुट ओवर ब्रिज का उचित उपयोग।
हाई मास्ट रोशनी की स्थापना।
पेड़ों व झाड़ियों की छटाई।
यातायात प्रबंधन के लिए होमगार्ड व सिविल डिफेंस स्वंयसेवकों की तैनाती।
भीड़भाड वाले क्षेत्रों में टैक्स वसूलने के लिए नीतियां बनाना।

### एजेंसियों द्वारा किए जाने वाले कार्य

| एजेंसियों के नाम | किए जाने वाले कार्यों की संख्या |
|---|---|
| पीडब्ल्यूडी | 59 |
| एमसीडी | 13 |
| एनडीएमसी | 10 |
| डीटीसी | 12 |
| बागवानी विभाग | 04 |
| धार्मिक समिति और शिक्षा विभाग | 02 |
| दिल्ली जल बोर्ड | 02 |
| बीएसईएस | 02 |
| दिल्ली मेट्रो | 01 |
| होमगार्ड | 01 |
| दिल्ली यातायात पुलिस | 09 |

### पिछले 10 सालों में सड़क हादसों से होने वाली मौतें

| वर्ष | मौतें |
|---|---|
| 2015 | 1582 |
| 2016 | 1548 |
| 2017 | 1565 |
| 2018 | 1657 |
| 2019 | 1433 |
| 2020 | 1163 |
| 2021 | 1206 |
| 2022 | 1428 |
| 2023 | 1432 |
| 2024 | 1504 |

# ज्योतिषशास्त्र में मुहूर्त विचार का महत्व

ज्योतिषाचार्य पंडित योगेश पौराणिक( इंजी)

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार मुहूर्त का एक अपना महत्व है। किसी भी शुभ काम को करने से पूर्व लोग अक्सर शुभ मुहूर्त का विचार करते हैं। जिसमे तिथि, वार, नक्षत्र, करण तथा योग आदि से देख कर शुभ मुहूर्त विचार किया जाता है। हमारे ज्योतिष विद्वानों ने गर्भाधान, गृहारंभ, सूतिका स्नान, अन्नप्राशन, मुंडन, विवाह, विद्यारंभ, यात्रा, वधु प्रवेश आदि शुभ कार्यों के लिए शुभ मुहूर्त विचार आवश्यक समझा।

कुछ विशेष शुभ कार्यों के लिए विशेष मुहूर्तों का संक्षिप्त रूप में वर्णन निम्न प्रकार से किया जा रहा है।

**विवाह मुहूर्त:**

मूल, अनुराधा, मृगशिर, रेवती, उतराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़, उत्तराभाद्र, स्वाति, हस्त, मघा, रोहिणी इन नक्षत्रों तथा ज्येष्ठ, माघ,

फाल्गुन, वैशाख, मार्गशीर्ष, आषाढ़ इन महीनो में विवाह करना शुभ है।

इसके अलावा कन्या के लिए गुरु बल, वर के लिए सूर्य बल तथा दोनो के सूर्य बल का विचार भी आवश्यक होता है।

**विधारांभ मुहूर्त:**

मृगशिर, आर्द्रा, पुनर्वसु, हस्त, चित्रा, स्वाति, श्रवण,

धनिष्ठा, शतभिषा, अश्वनी, मूल, तीनो उतरा, पुष्य नक्षत्रों तथा रवि, गुरु,

बुध, शुक्र इन वारों और पंचमी, तृतीया, एकादशी, दशमी, द्वादशी, द्वितीया आदि तिथियों में विद्यारंभ करना अत्यंत शुभ माना गया है।

**मुंडन मुहूर्त:** जन्म से तीसरे, पांचवे, सातवे या विषम वर्षों में तथा अष्टमी, द्वादशी, नवमी, प्रतिपदा, अमावस्या, पूर्णिमा आदि तिथियों और सोमवार, बुधवार, शुक्र और बृहस्पति आदि वारों में इसके अलावा मृगशिर, रेवती,

चित्रा, स्वाति, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, शतभषा, हस्त आदि नक्षत्रों में मुंडन करवाना शुभ माना गया है।

**कर्ण भेद मुहूर्त:**

श्रवण, धनिष्ठा, पुनर्वसु, मृगशिर, रेवती, चित्रा, अनुराधा तथा सोम, बुध, गुरु और शुक्रवार आदि तथा प्रथम, द्वितीया, तृतीया, पंचमी, सप्तमी, दशमी, एकादशी, द्वादशी, पूर्णिमा आदि तिथियों तथा जन्म से छठे, सातवें, आठवें महीने में कर्णभेद संस्कार अत्यंत शुभ माना गया है।

**गृहारंभ मुहूर्त:**

मृगशिर, पुष्य, अनुराधा, शतभिषा, चित्रा, हस्त, स्वाति,

रोहिणी, रेवती, तीनों उतरा आदि नक्षत्रों और सोम, बुध, गुरु, शुक्र, शनि आदि वारों तथा

द्वितीया, पंचमी, सप्तमी, दशमी, एकादशी, त्रत्रयोदशी,

पूर्णिमाआदि तिथियों में इसके अलावा वैशाख, श्रावण, माघ, पौष और फाल्गुन आदि मास में गृहारंभ करवाना अत्यंत शुभकारी होता है।

**यात्रा मुहूर्त:**

अश्वनी, अनुराधा, पुनर्वसु, मृगशिर, पुष्य, रेवती, हस्त, श्रवण, और धनिष्ठा आदि नक्षत्र तथा

ीया, पंचमी, सप्तमी, दशमी, एकादशी

और त्रियोदशी आदि तिथियां यात्रा हेतु अत्यंत उत्तम मानी गई हैं।

इसके अलावा यात्रा से पूर्व दिशा शूल और चंद्रवास पर भी विचार करना अत्यंत आवश्यक होता है।

# कुबेर धन और ऐश्वर्य के देवता

धन के स्वामी ( धनेश ) व धनवानता के देवता माने जाते हैं। वे यक्षों के राजा भी हैं। वे उत्तर दिशा के दिक्पाल हैं और लोकपाल ( संसार के रक्षक ) भी हैं। इनके सौतेले छोटे भाई रावण , कुम्भकर्ण और विभीषण थे। इनमें रावण ही बाद में असुरों का सम्राट बना। भद्रा, सूर्य देवता और छायदेवी की पुत्री थीं। धनवनता के देवता कुबेर ने उनसे विवाह किया। रामायण में कुबेर भगवान शंकर को प्रसन्न करने के लिए कुबेर ने हिमालय पर्वत पर तप किया। तप के अंतराल में शिव तथा पार्वती दिखायी पड़े। कुबेर ने अत्यंत सात्त्विक भाव से पार्वती की ओर बायें नेत्र से देखा। पार्वती के दिव्य तेज से वह नेत्र भस्म होकर पीला पड़ गया। कुबेर वहां से उठकर दूसरे स्थान पर चला गया। वह घोर तप या तो शिव ने किया था या फिर कुबेर ने किया, अन्य कोई भी देवता उसे पूर्ण रूप से संपन्न नहीं कर पाया था। कुबेर से प्रसन्न होकर शिव ने कहा-'तुमने मुझे तपस्या से जीत लिया है। तुम्हारा एक नेत्र पार्वती के तेज से नष्ट हो गया, अतः तुम एकाक्षी पिंगल कहलाओंगे। कुबेर ने रावण के अनेक अत्याचारों के विषय में जाना तो अपने एक दूत को रावण के पास भेजा। दूत ने कुबेर का संदेश दिया कि रावण अधर्म के क्रूर कार्यों को छोड़ दे। रावण के नंदनवन उजाड़ने के कारण सब देवता उसके शत्रु बन गये हैं। रावण ने क्रुद्ध होकर उस दूत को अपनी खड्ग से काटकर राक्षसों को भक्षणार्थ दे दिया। कुबेर का यह सब जानकर बहुत बुरा लगा। रावण तथा राक्षसों का कुबेर तथा यक्षों से युद्ध हुआ। यक्ष बल से लड़ते थे और राक्षस माया से, अतः राक्षस विजयी हुए। रावण ने माया से अनेक रूप धारण किये तथा कुबेर के सिर पर प्रहार करके उसे घायल कर दिया और बलात उसका पुष्पक विमान ले लिया। विश्वश्रवा की दो पत्नियां थीं। पुत्रों में कुबेर सबसे बड़े थे। शेष रावण, कुंभकर्ण और विभीषण सौतेले भाई थे। उन्होंने अपनी मां से प्रेरणा पाकर कुबेर का पुष्पक विमान लेकर लंका पुरी तथा समस्त संपत्ति छीन ली। कुबेर अपने पितामह के पास गये। उनकी प्रेरणा से कुबेर ने शिवाराधना की। फलस्वरूप उन्हें 'धनपाल' की पदवी, पत्नी और पुत्र का लाभ हुआ। गौतमी के तट का वह स्थल धनदतीर्थ नाम से विख्यात है।

# आयुर्वेद के अनुसार भोजन के अंत में पानी पीना जहर के समान हैं। ऐसा क्यों ?

आज हम इसको विज्ञान की कसौटी पर कसने का एक सार्थक प्रयास करते हैं।

**अजीर्णे भेषजं वारि, जीर्णे वारि बलप्रदम।**
**भोजने चाऽमृतम्वारि, भोजनान्तें विषप्रदम्॥**

इस श्लोक के अनुसार अपच की अवस्था में पानी औषध के समान होता है। भोजन पचने के बाद की अवस्था में पानी बल प्रदान करता है तो भोजन के बीच में घूंट भर थोड़ा सा जल अमृत के समान होता है, जबकि भोजन के बाद में पिया हुआ पानी जहर के समान होता है। भोजन करने के बाद हमारे पेट के जठर में जाकर खाना पचने की प्रक्रिया शुरू करता है। यह जठर हमारे शरीर की नाभि के बांई ओर एक थैली नुमा छोटा सा अंग है। वर्तमान की अपनी लोक भाषा में इसको हम आमाशय कहते हैं। जठर में एक प्रकार की हल्की अग्नि प्रदीप होती है। जब भूख लगती है तब वास्तव में आमाशय में वो अग्नि ही हमें संकेत करती है कि शरीर के लिए ईंधन भेजा जाए, गाडी रिजर में आ गई हैं। आपने महसूस किया होगा कि जब अच्छी भूख लगती है

तो कैसा भी भोजन कर लिया जाए बहुत मीठा भी लगता है और पच भी जाता है। जठर की अग्नि भोजन के एक घंटे बाद तक प्रदीप्त रहती हैं। हमारी पुरानी बोली में इसको जठराग्नि कहते हैं। 1 घंटे तक जठराग्नि को अपना काम करने के लिए ऊपर से कुछ भी डालना अग्नि को बंद करने का कारण बनता है। इसलिए भूख अनुसार जब भोजन पूर्ण हो जाए तो हमें अपना भोजन बंद कर देना चाहिए। तब जठराग्नि अपनी प्रक्रिया 1 घंटे में आराम से चला कर भोजन से प्राप्त मात्रा में आहार रस हमारे शरीर के विभिन्न अंगों को भेजता है। अब अगर जठराग्नि की चलती हुई प्रक्रिया के ऊपर हमने लोटा भरकर ठंडा पानी डाल दिया तो पेट की अग्नि बुझ जाएगी। जिसके चलते भोजन के उत्तम पाचन की प्रक्रिया तो एकदम रूक जायेगी। वैसे आपने भी देखा होगा अग्नि के ऊपर पानी डालने से आग बुझ जाती है। इसी भांति पेट की जठर अग्नि भी पानी डालने से बुझ जाएगी और भोजन जठर में अपने नियत समय 1 घंटे में पच नहीं पाएगा और जब 1 घंटे से अधिक समय तक भोजन वहां पर रहेगा तो भोजन अंदर पड़ा पड़ा खराब होगा, गैस कारक होगा। गंधनुमा होगा जिसकी गैस ऊपर व नीचे दोनों जगह से निकलनी शुरू हो जाएगी। इसलिए भोजन के अंत में कभी भी पानी नहीं पिएं।

# दस पवित्र पक्षी और उनका रहस्य

**जाने दस दिव्य और पवित्र पक्षियों के बारे मे जिनका हिंदू धर्म में बहुत ही महत्व माना गया है**

1. हंस- जब कोई व्यक्ति सिद्ध हो जाता है तो उसे कहते हैं कि इसने हंस पद प्राप्त कर लिया और जब कोई समाधिस्थ हो जाता है, तो कहते हैं कि वह परमहंस हो गया। परमहंस सबसे बड़ा पद माना गया है हंस पक्षी प्यार और पवित्रता का प्रतीक है। यह बहुत ही विवेकी पक्षी माना गया है। आध्यात्मिक दृष्टि मनुष्य के निःश्वास में 'हं' और श्वास में 'स' ध्वनि सुनाई पड़ती है। मनुष्य का जीवन क्रम ही 'हंस' है क्योंकि उसमें ज्ञान का अर्जन संभव है।अतः हंस 'ज्ञान' विवेक, कला की देवी सरस्वती का वाहन है। यह पक्षी अपना ज्यादातर समय मानसरोवर में रहकर ही बिताते हैं या फिर किसी एकांत झील और समुद्र के किनारे।हंस दांपत्य जीवन के लिए आदर्श है। यह जीवन भर एक ही साथी के साथ रहते हैं। यदि दोनों में से किसी भी एक साथी की मौत हो जाए तो दूसरा अपना पूरा जीवन अकेले ही गुजार या गुजार देती है।जंगल के कानून की तरह इनमें मादा पक्षियों के लिए लड़ाई नहीं होती। आपसी समझबूझ के बल पर ये अपने साथी का चयन करते हैं। इनमें पारिवारिक और सामाजिक भावनाएं पाई जाती है। हिंदू धर्म में हंस को मारना अर्थात पिता, देवता और गुरु को मारने के समान है। ऐसे व्यक्ति को तीन जन्म तक नर्क में रहना होता है।

2. मोर- मोर को पक्षियों का राजा माना जाता है। यह शिव पुत्र कार्तिकेय का वाहन है। भगवान कृष्ण के मुकुट में लगा मोर का पंख इस पक्षी के महत्व को दर्शाता है। यह भारत का राष्ट्रीय पक्षी है।अनेक धार्मिक कथाओं में मोर को बहुत ऊंचा दर्जा दिया गया है। हिन्दू धर्म में मोर को मार कर खाना महापाप समझा जाता है।

3. कौआ कौए को अतिथि-आगमन का सूचक और पितरों का आश्रम स्थल माना जाता है। इसकी उम्र लगभग 240 वर्ष होती है। श्राद्ध पक्ष में कौओं का बहुत महत्व माना गया है।इस पक्ष में कौओं को भोजना कराना अर्थात अपने पितरों को भोजन कराना माना गया है। कौए को भविष्य में घटने वाली घटनाओं का पहले से ही आभास हो जाता है।

4. उल्लू उल्लू को लोग अच्छा नहीं मानते और उससे डरते हैं, लेकिन यह गलत धारणा है। उल्लू लक्ष्मी का वाहन है। उल्लू का अपमान करने से लक्ष्मी का अपमान माना जाता है। हिन्दू संस्कृति में माना जाता है कि उल्लू समृद्धि और धन लाता है।भारत वर्ष में प्रचलित लोक विश्वासों के अनुसार भी उल्लू का घर के ऊपर छत पर स्थित होना तथा शब्दोच्चारण निकट संबंधी की अथवा परिवार के सदस्य की मृत्यु का सूचक समझा जाता है। सचमुच उल्लू को भूत-भविष्य और वर्तमान में घट रही घटनाओं का पहले से ही ज्ञान हो जाता है।वाल्मीकि रामायण में उल्लू को मूर्ख के स्थान पर अत्यन्त चतुर कहा गया। रामचंद्र जी जब रावण को मारने में असफल होते हैं और जब विभीषण उनके पास जाते हैं, तब सुग्रीव राम से कहते हैं कि उन्हें शत्रु की उलूक-चतुराई से बचकर रहना चाहिए। ऋषियों ने गहरे अवलोकन तथा समझ के बाद ही उलूक को श्रीलक्ष्मी का वाहन बनाया था।

5. गरूड़- इसे गिद्ध भी कहा जाता है। पक्षियों में गरूढ़ को सबसे श्रेष्ठ माना गया है। यह समझदार और बुद्धिमान होने के साथ-साथ तेज गति से उड़ने की क्षमता रखता है। गरूड़ के नाम पर एक पुराण भी है गरूड़ पुराण। यह भारत का धार्मिक और अमेरिका का राष्ट्रीय पक्षी है।गरूड़ के बारे में पुराणों में अनेक कथाएं मिलती है। पौराणिक कथाओं के अनुसार भगवान विष्णु की सवारी और भगवान राम को मेघनाथ के नागपाश से मुक्ति दिलाने वाले गरूड़ के बारे में कहा जाता है कि यह सौ वर्ष तक जीने की क्षमता रखता है।

6. नीलकंठ- नीलकंड को देखने मात्र से भाग्य का दरवाजा खुल जाता है। यह पवित्र पक्षी माना जाता है। दशहरा पर लोग इसका दर्शन करने के लिए बहुत ललायित रहते हैं।

7. तोता- तोते का हरा रंग बुध ग्रह के साथ जोड़कर देखा जाता है। अतः घर में तोता पालने से बुध की कुदृष्टि का प्रभाव दूर होता है। घर में तोते का चित्र लगाने से बच्चों का पढ़ाई में मन लगता है। आपने बहुत से तोता पंडित देखें होंगे जो भविष्यवाणी करते हैं। तोते के बारे में बहुत सारी कथाएं पुराणों में मिलती है। इसके अलवा, जातक कथाओं, पंचतंत्र की कथाओं में भी तोते को किसी न किसी कथा में शामिल किया गया है।

8. कबूतर- इसे कपोत कहते हैं। यह शांति का प्रतीक माना गया है। भगवान शिव ने जब अमरनाथ में पार्वती को अजर अमर होने के वचन सुनाए थे तो कबतरों के एक जोड़े ने यह वचन सुन लिए थे तभी से वे अजर-अमर हो गए।आज भी अमरनाथ की गुफा के पास ये कबूतर के जोड़े आपको दिखाई दे जाएंगे। कहते हैं कि सावन की पूर्णिमा को ये कबूतर गुफा में दिखाई पड़ते हैं। इसलिए कबूतर को महत्व दिया जाता है।

9. बगुला- आपने कहावत सुनी होगी बगुला भगत। अर्थात ढोंगी साधु। धार्मिक ग्रंथों में बगुले से जुड़ी अनेक कथाओं का उल्लेख मिलता है। पंत्रतंत्र में एक कहानी है बगुला भगत। बगुला भगत पंचतंत्र की प्रसिद्ध कहानियों में से एक है जिसके रचयिता आचार्य विष्णु शर्मा हैं।बगुला के नाम पर एक देवी का नाम भी है जिसे बगुलामुखी कहते हैं। बगुला ध्यान भी होता है अर्थात बगुले की तरह एकटक ध्यान लगाना। बगुले के संबंध में कहा जाता है कि ये जिस भी घर के पास के किसी वृक्ष आदि पर रहते हैं वहां शांति रहती है और किसी प्रकार की अकाल मृत्यु नहीं होती।

10. गोरैया- भारतीय पौराणिक मान्यताओं अनुसार यह चिड़ियां जिस भी घर में या उसके आंगन में रहती है वहां सुख और शांति बनी रहती है। खुशियां उनके द्वार पर हमेशा खड़ी रहती है और वह घर दिनोदिन तरक्की करता रहता है।

## ------: झाँइयां :-------

आयुर्वेदिक उपचार करने के लिए, आपको आहार, दिनचर्या और घरेलू उपायों का सही संयोजन अपनाना होगा। आयुर्वेद के अनुसार, झाइयाँ आमतौर पर पित दोष के असंतुलन के कारण होती हैं। नीचे झाइयों को जड़ से खत्म करने के लिए, कुछ आयुर्वेदिक और घरेलू उपाय दिए गए हैं

1. आयुर्वेदिक औषधीय उपचार

(1) मंजिष्ठा चूर्ण – 1 चम्मच शहद या गुनगुने पानी के साथ नित्य लें।

(२) आंवला – आंवला रस या चूर्ण लेने से त्वचा स्वच्छ और चमकदार बनती है।

(3) नीम पत्तियाँ – नीम का काढ़ा या पत्तियों का पेस्ट झाइयों को कम करता है।

(4) चंदन पाउडर – गुलाब जल के साथ लगाएं, यह त्वचा को ठंडक देता है।

(5) एलोवेरा जेल – नित्य रात को, सोने से पहले, चेहरे पर लगाएं।

२. घरेलू उपाय

(1) हल्दी और दूध – हल्दी में दूध मिलाकर लगाएं, 15 मिनट बाद धो लें।

(२) आलू का रस – नित्य 10-15 मिनट लगाएं, यह झाइयाँ हल्की करता है।

(3) नींबू और शहद – (सेंसिटिव स्किन वालों के लिए नहीं) 5-10 मिनट लगाकर धो लें।

(4) बादाम और दूध – रातभर भिगोए हुए बादाम को पीसकर, दूध के साथ लगाएं।

(4) टमाटर का रस – चेहरे पर लगाने से, दाग-धब्बे कम होते हैं।

३. आहार और जीवनशैली

(1) ठंडी चीजें खाएं – नारियल पानी, खीरा, गाजर, पपीता, तरबूज, दही आदि।

(२) गर्म और तली-भुनी चीजों से बचें – मसालेदार और ज्यादा नमक वाले पदार्थों के सेवन से बचें।

(3) भरपूर पानी पिएं – दिनभर में, 8-10 गिलास पानी अवश्य पिएं।

(4) योग और प्राणायाम करें – अनुलोम-विलोम, भ्रामरी और शीर्षासन से, चेहरे पर ग्लो आता है।

(5) सनस्क्रीन लगाएं – धूप में निकलने से पहले आयुर्वेदिक सनस्क्रीन या एलोवेरा जेल लगाएं।

4. पंचकर्म थेरेपी (गंभीर झाइयों के लिए) अगर झाइयाँ ज्यादा गहरी हैं, तो आयुर्वेदिक पंचकर्म थेरेपी जैसे वमन, विरेचन, रक्तमोक्षण आदि, किसी अच्छे आयुर्वेद विशेषज्ञ से करवा सकते हैं। अगर आप इन उपायों को २-३ महीने तक नियमित रूप से अपनाते हैं तो झाइयाँ धीरे-धीरे कम होने लगेंगी और आपकी त्वचा फिर से स्वच्छ और निखरी हो जाएगी।

# मंगलवार व्रत

भगवान हनुमान का आशीर्वाद पाने के लिए अगर आप मंगलवार का व्रत करने के बारे में सोच रहे हैं तो आपको इन नियमों के बारे में जान लेना चाहिए। हिंदू धर्म में मंगलवार के दिन का विशेष महत्व होता है। यह दिन भगवान हनुमान जी को समर्पित किया गया है। कहा जाता है कि जो व्यक्ति मंगलवार के दिन भगवान हनुमान का व्रत कर उनकी पूजा अर्चना करता है उस पर भगवान अपनी कृपा सदैव बनाए रखते हैं और उसके सभी दुख-परेशानियों का नाश करते हैं। ऐसे में अगर आप भी मंगलवार का व्रत करने के बारे में सोच रहे हैं तो आपको इस व्रत को शुरू करने से पहले इससे जुड़े कुछ जरूरी नियमों के बारे में जान लेना चाहिए। इन नियमों को जानने के बाद इन्हें अपनाकर आपको हनुमान जी का व्रत शुरू करना चाहिए। जाने मंगलवार के व्रत के लिए आपको किन-किन नियमों का पालन करना चाहिए।

**मंगलवार व्रत के नियम**

1. मंगलवार का व्रत करते समय शरीर की शुद्धि करने से पहले मन को शुद्ध करें, क्योंकि ये व्रत पूरी तरह से ब्रह्मचर्य होना चाहिए। इसलिए मन में किसी प्रकार की द्वेष या हीन भावना उत्पन्न न होने दें।

2. इस दिन मंदिर में जाकर हनुमान जी की पूजा-अर्चना शुरू करें और उन्हें चोला अर्पित करें।

3. हिंदू धर्म में बंदर को भगवान हनुमान का रूप माना जाता है, इसलिए मंगलवार के व्रत में बंदर को कुछ न कुछ जरूर खिलाएं। इससे हनुमानजी जल्दी प्रसन्न होंगे।

4. मंगलवार के दिन हनुमान जी के नाम का जाप करने से पहले श्री राम के नाम का जाप करें। ऐसा माना जाता है कि जहां राम होते हैं वहां हनुमान जरूर होते हैं। इसलिए अगर आप मंगलवार व्रत के दौरान रामजी का नाम लेते हैं तो भगवान हनुमान भी इससे प्रसन्न होकर आप पर अपनी कृपा दृष्टि बनाए रखेंगे।

5. मंगलवार के व्रत में दिन में केवल एक बार भोजन करना चाहिए। इसमें भी आपको नमक, मिर्च मसाले, मांस आदि का सेवन नहीं करना है।

6. मंगलवार का व्रत करते समय भगवा रंग के वस्त्र जरूर पहनें। हनुमान जी को यह रंग अति प्रिय है।

7. इस व्रत में हनुमान चालीसा का पाठ करना बिल्कुल न भूलें।

8. हनुमान जी के व्रत में बूंदी का प्रसाद अवश्य चढ़ाएं।

मंगलवार को करें इन मंत्रों का जाप

ॐ तेजसे नमः।
ॐ रूवीर्य समुद्भवाय नमः।
ॐ प्रसन्नात्मने नमः।
ॐ शूराय नमः।
ॐ शान्ताय नमः।
ॐ मारुतात्मजाय नमः।

# आत्महत्या का पाप

(१) नाशौचं नोदकं नाग्निं नाश्रुपातं च कारयेत्।वोढारोऽग्निप्रदातारः पाशच्छेद-करास्तथा ॥ तप्तकृच्छ्रेण शुद्धयन्तीत्येवमाह प्रजापतिः।(पाराशर स्मृतिः ४.,४) आत्महत्या करनेवाले प्राणी की अशुद्धि (अशौच) न मानें, पाश का छेदन न करें, आँसू भी न गिरायें, अग्नि संस्कार, अस्थि-संचय और जलदान (श्राद्ध-तर्पण) भी न करें। ऐसे प्राणी के शरीर को ले जानेवाले तथा दाह संस्कार करनेवाले तप्तकृच्छ्र व्रत करने से शुद्ध होते हैं।

(२) अतिमानादतिक्रोधात्स्नेहाद्वा यदि वा भयात । उद्बध्नीयात् स्त्री पुमान् वा गतिरेषा विधीयते ॥ पूयशोणितसम्पूर्णे त्वन्धे तमसि मज्जति। षष्टिवर्षसहस्राणि नरकं प्रतिपद्यते॥(पाराशर स्मृतिः ४.१,२) आत्महत्या करनेवाला मनुष्य ६० हजार वर्षों तक अंधतामिस्र नरक में निवास करता हैं।

(*) हत्वाऽऽत्मानमात्मना प्राप्नुयात्स्त्वं वधाद् भ्रातुर्नरकं चातिघोरम् ॥(महाभारत, कर्ण पर्व :७०.२८) भाई का वध करने से जिस अत्यंत धोर नरक की प्राप्ति होती है, उससे भी भयानक नरक स्वयं ही अपनी हत्या करने से प्राप्त होता हैं।

(४) अन्धन्तमोविशेयुस्ते ये चैवात्महनो जनाः । भुक्त्वा निरयसाहस्रं ते च स्युर्गामसूकराः ।। आत्मघातो न कर्तव्यस्तस्मात् क्वापि विपश्चिता। इहापि च परत्रापि न शुभान्यात्मघातिनाम् ।।(स्कन्द पुराण, काशी. पू. १२.१२,१*) आत्महत्यारे घोर नरकों में जाते हैं और हजारों नरक-यातनाएँ भोगकर फिर देहाती सूअरों की योनि में जन्म लेते हैं। इसलिए समझदार मनुष्य को कभी भूलकर भी आत्महत्या नहीं करनी चाहिए। आत्महत्यारों का न तो इस लोक में और न परलोक में ही कल्याण होता हैं।

(५) जलाग्न्युद्बन्धनभ्रष्टा प्र व ज्या न श न च यु ताः । विषप्रपतनप्रायशस्त्रघातच्युताश्च ये ॥ सर्वे ते प्रत्यवसिताः सर्वलोकवहिष्कृताः।चान्द्रायणेन शुध्यन्ति तप्तकृच्छ्रद्वयेन वा ।।(यम स्मृतिः २,*) यदि आत्महत्या का प्रयत्न करनेवाला मनुष्य किसी प्रकार बच जाता है अथवा जो संन्यास लेकर उसे त्याग देता है तो वे दोनों 'प्रत्यवसित' कहलाते हैं। ऐसे मनुष्य सभी के द्वारा बहिष्कृत होते हैं। उनकी शुद्धि चान्द्रायण व्रत अथवा दो तप्तकृच्छ्र व्रत करने से होती हैं।

(६) रज्जुशस्त्रविषैर्वापि कामक्रोधवशेन यः। घातयेत्स्वयमात्मानं स्त्री वा पापेन मोहिता ।।रज्जुना राजमार्गे तां चण्डालेनापकर्षयेत्। न श्मशानविधिस्तेषां न सम्बन्धिक्रियास्तथा ॥ बन्धुस्तेषां तु यः कुर्यात्प्रेतकार्यक्रियाविधिम्।

तद्गतिं स चरेत्पश्चात्स्वजनाद्वा प्रमुच्यते ॥ (कौटिल्य अर्थशास्त्र : ४.७) जो पुरुष या स्त्री काम या क्रोध के वशीभूत होकर, फाँसी लगाकर, शस्त्र के द्वारा या विष लेकर आत्महत्या करे उसका शव चाण्डाल रस्सी से बाँधकर राजमार्ग से घसीटता हुआ ले जाय। ऐसे व्यक्तियों के लिए दाह संस्कार और तिलांजलि आदि संस्कार वर्जित हैं। ऐसे व्यक्ति का कोई बंधु दाहादि संस्कार (प्रेतकार्य) करता है तो मरने के बाद उसको भी वही गति प्राप्त होती है और इस लोक में उसे जातिच्युत कर दिया जाता हैं।

# घर में क्यों लगाते हैं बहते झरने, नदी और पानी की तस्वीर

जानें आपकी किस्मत पर क्या पड़ता है इसका असर

आपने कई लोगों के घरों में देखा होगा कि बहते हुए झरने, नदियों और पानी की तस्वीर या शो-पीस रहते हैं। ऐसे में वास्तु की दृष्टि से बहुत कम लोग इसका महत्व जानते हैं, वास्तुशास्त्र के अनुसार माना जाता है बहते हुए पानी की तस्वीर घर में लगाना शुभ होता है। इन तस्वीरों या शो पीस को घर में लगाते समय कुछ बातों का ध्यान रखना चाहिए-

1. घर के सदस्यों या फैमिली बिजनेस को बेडलक या लोगों की बुरी नजर से बचाए रखने के लिए गलियारे या बालकनी में पानी से संबंधित कोई तस्वीर या शो-पीस रखना चाहिए।

2. पानी से जुड़ा कोई भी शो-पीस या तस्वीर किचन में नहीं लगाना चाहिए। किचन में पाने से पानी या किचन के काम में प्रयोग आने वाले पानी के अलावा जल संबंधी कोई भी वस्तु रखना अच्छा नहीं माना जाता।

3. यदि आप फाउंनटेन घर में लगवा रहे हैं

तो इसे घर की उत्तर या दक्षिण-पूर्व दिशा में लगना सकते हैं। ऐसा करने से फाउंनटेन गुडलक और तरक्की लाता है।

4. घर की उत्तर-पूर्व दिशा में मिट्टी के बने बर्तन या सुराही में पानी भरकर रखना चाहिए। ऐसा करने से घर के लोगों का दुर्भाग्य खत्म होता है और हर काम में सफलता मिलती है।

5. यदि आपके घर में गार्डन एरिया है तो आप वहां वाटरफॉल लगवा सकते हैं। घर में वाटरफॉल की दिशा इस तरह से होनी चाहिए कि पानी का प्रवाह आपके घर की दिशा में हो। यह बाहर की ओर कभी नहीं जाना चाहिए।

# ऋषि के श्राप से धरती पर आयीं गंगा मैय्या

गंगा नदी को हमारे धर्म में पतित पावन और मोक्ष दायिनी कहा गया है। इतनी पवित्र नदी को कौन दे सकता है श्राप? वो श्राप जो असल में सारे सनातनी धरती वासियों के लिए बना एक बहुत बड़ा वरदान। आज उसी के बारे में जानते है जिसके श्राप से गंगा मां धरती पर अवतरित हुईं। दुर्वासा ऋषि अत्रि और उनकी पत्नी अनुसूया के पुत्र थे। इनके बारे में आपको अग्नि पुराण, मत्स्य पुराण और ऋग्वेद जैसे कई पुराणों में लिखा हुआ मिलेगा। अब दुर्वासा के नाम में ही इनका आचरण भी छुपा हुआ है। दुर्वासा का विच्छेद करें तो आता है दुर यानि की मुश्किल और वास यानि की रहना या फिर रहने में दुष्कर. दुर्वासा ऋषि का लम्बा कद, मटमैला रंग, फटे हुए कपड़े और नाक पर बैठा गुस्सा सभी दिशाओं में प्रसिद्ध था। जब वो अपने दस हज़ार शिष्यों संग कहीं भी निकलते तो हर कोई उनके रास्ते से हट जाता ताकि गलती से भी वो गुस्से में उन्हें श्राप न दे दें। अब यह कथा ऋग्वेद में बताई जाती है की एक बार ऋषि दुर्वासा ब्रह्मलोक में गए। वहां पर छोटी सी गंगा इस बड़े से ऋषि को देख कर उत्सुक हुई। दुर्वासा नदी पर नहाने को गए तो अचानक वहां तेज़ हवा चली जिसमे उनके कपड़े उड़ गए। भोली सी बच्ची गंगा ने जब यह दृश्य देखा तो उसकी हंसी छूट गई। वो ज़ोर ज़ोर से हंसने लगी और दुर्वासा का गुस्सा सांतवे आसमान के पार हो गया। दुर्वासा ने उसे अपना अपमान करने के कारण श्राप दिया की वो भविष्य में स्वर्ग लोक से निकल कर धरती पर जाएंगी। इस श्राप से गंगा को बहुत दुःख हुआ और उसके भोले से चेहरे को देख दुर्वासा ने आगे कहा ₹₹धरती पर जा कर भी तुम्हारा तेज कम नहीं होगा गंगा₹₹ और तुम धरती के लोगों को मोक्ष प्रदान करोगी। सालों बाद राजा भगीरथ के मनाने पर गंगा धरती पर आयी और तब से यहां की सबसे पावन नदियों में इनका नाम आता है और इस प्रकार दुर्वासा ऋषि का श्राप हम सभी धरती वासियों के लिए इतना बड़ा वरदान बन गया और हमे देवी गंगा नदी स्वरुप में मिलीं!

# पांच बैठकों में 18 घंटे 18 मिनट चली कार्रवाई

## विधानसभाध्यक्ष ने रखा पांच दिनों की कार्यवाही का लेखाजोखा

मुख्य संवाददाता/सुषमा रानी

**नई दिल्ली।** दिल्ली विधानसभा अध्यक्ष के रूप में मंगलवार को विजेंद्र गुप्ता ने अपनी पहली प्रेस वार्ता को संबोधित करते हुए पांच दिन तक चली सदन की कार्रवाई का लेखा जोखा रखा। उन्होंने बताया कि आठवीं विधानसभा का पहला सत्र 24 फरवरी को शुरू हुआ और 03 मार्च, 2025 को सदन अनिश्चितकाल तक के लिए स्थगित हुआ। इन पांच बैठकों के दौरान कुल 18 घंटे 18 मिनट तक सदन की कार्यवाही चली। पांच दिनों तक विभिन्न अवसरों पर कुल 126 बार सदस्यों ने सदन में अपने विचार व्यक्त किए। विधानसभा के पहले ही सत्र में इतने सदस्यों को बोलने का अवसर मिलना किसी रिकॉर्ड से कम नहीं है। विधानसभाध्यक्ष विजेंद्र गुप्ता ने बताया कि सदस्यों ने पहले दिन 24 फरवरी, 2025 को शपथ ली। वरिष्ठ सदस्य अरविंदर सिंह लवली को प्रोटेम स्पीकर नियुक्त किया गया। दिनांक 25 फरवरी, 2025 को उपराज्यपाल ने सदन को संबोधित किया और उन मुद्दों के बारे में व्याख्या की, जिन पर सरकार दिल्ली के विकास और लोगों की भलाई के लिए कार्य करेगी। उपराज्यपाल के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव सदन में 28 फरवरी, 2025 को पारित किया गया। विजेंद्र गुप्ता ने कहा कि आने वाले समय में सदन पूरी गरिमापूर्ण तरीके से चलेगा। विधानसभा अध्यक्ष ने आगे कहा कि पिछली सरकार ने सदन का इस्तेमाल राजनीतिक हथियार के रूप में किया। सदन का सत्रावसान नहीं किया जाता था। सदन को बुलाने का तरीका भी गलत रहा। हम सत्रावसान नहीं करने की परंपरा को आज से खत्म करते हैं। अब नियमानुसार विधिवत रूप से विधानसभा के सत्रावसान होंगे।

विधानसभा अध्यक्ष ने कहा कि सत्रावसान न होने का नुकसान ये होता है कि आपात स्थिति में सरकार कोई अध्यादेश नहीं ला सकती। अब ऐसा नहीं होगा। विपक्ष का रवैया शपथ ग्रहण के दिन ही बहुत गैरजिम्मेदाराना रहा। पहले ही दिन उन्होंने शपथ लेने के दिन ही हंगामा किया। चेयर चाहती तो उस दिन भी कार्रवाई हो सकती थी, लेकिन संयम बरता गया। अगले दिन फिर जब उपराज्यपाल के अभिभाषण में भी विपक्ष का दुर्भावनापूर्ण रवैया जारी रहा तो मजबूरन निलंबन की कार्रवाई करनी पड़ी, जो नहीं होना चाहिए था। पांच दिन में नियम 280 के तहत 242 मामले उठाए गए। इनको संबंधित विभाग को उत्तर देने के लिए भेज दिया गया है। विजेंद्र गुप्ता ने ये भी कहा कि विधानसभा में जो भी सदस्य अब सवाल उठाएंगे वे सिर्फ सवाल उठाने तक सीमित नहीं रहेंगे। संबंधित विभाग से सदस्य को उस सवाल का उत्तर जरूर भेजा जाएगा, जिससे सदस्य को संतुष्टि मिले। अभी तक चले सदन में सभी को बोलने का मौका दिया। विपक्ष की तरफ से जितने नाम आए सभी को बुलवाया गया। सीएजी की रिपोर्ट जिसे सदन में बहुत पहले आ जाना चाहिए था। पिछले सदन में इस मांग को लगातार हम उठा रहे थे। सीएजी की रिपोर्ट पेश हुई है लेकिन ये अभी शुरुआत है इसे अंजाम तक पहुंचाया जाएगा। पीएसी 3 महीने में रिपोर्ट देगी। एक्शन टेकन नोट एक महीने में आ जाएगा। दोषियों को सजा मिलनी चाहिए। दोषियों को सजा देने की जिम्मेदारी सदन की है। विधानसभा अध्यक्ष ने कहा कि मैं ज्यादा से जायद सदस्यों से चर्चा में भाग लेने का आव्हान करता हूं। सोमवार को एक सदस्य ने सदन की गरिमा को ठेस पहुंचाई, उन पर कार्रवाई की गई। उन्होंने फिर सदन में माफी भी मांगी, अपना ट्वीट डिलीट किया। यह सदन के मजबूती की ओर बढने का संदेश है।

# प्रधानमंत्री मोदी ने गारंटी दी थी कि 8 मार्च को सभी महिलाओं के खाते में 2500 रुपए की पहली किस्त आएगी, हम उसका इंतजार कर रहे हैं- आतिशी

मुख्य संवाददाता/ सुषमा रानी

**नई दिल्ली,** दिल्ली की महिलाओं को 8 मार्च तक 2500 रुपए देने की प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की गारंटी का अब काउंट डाउन शुरू हो चुका है। 8 मार्च में अब मात्र 4 दिन और बचे हैं। ऐसे में भाजपा को उसके वादे को याद दिलाने के लिए आम आदमी पार्टी मंगलवार को सड़क पर उतर गई। पूर्व मुख्यमंत्री और नेता प्रतिपक्ष आतिशी के नेतृत्व में दिल्ली के अलग-अलग इलाकों से बड़ी संख्या में महिलाएं हाथों में 'बस चार दिन और' लिखा प्लेकार्ड लेकर मंडी हाउस पहुंची और भाजपा से पूछा कि 8 मार्च में अब चार दिन और शेष हैं, उनके खाते में 2500 रुपए कब आएंगे? इस दौरान विधायक कुलदीप कुमार समेत आम आदमी पार्टी के कार्यकर्ता भी मौजूद रहे।

इस दौरान दिल्ली की पूर्व सीएम आतिशी ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी ने कहा था कि 8 मार्च को दिल्ली की महिलाओं के खाते में 2500 रुपए की पहली किस्त आएगी। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा था कि यह मोदी की गारंटी है। आज चार मार्च हो चुकी है। आठ मार्च मे अब सिर्फ 4 दिन और बचे हैं। हम इंतजार कर रहे हैं कि चार दिन के अंदर दिल्ली की सभी महिलाओं के खाते में 2500 रुपए की पहली किश्त मिलेगी।

आतिशी ने कहा कि दिल्ली की महिलाएं इंतजार कर रही हैं कि 8 मार्च को उनके खाते में 2500 रुपए की पहली किश्त आ जाएगी। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा था कि सभी महिलाएं अपने फोन नंबर को बैंक अकाउंट से लिंक करा लीजिए, 8 मार्च को 2500 रुपए खाते में आने का बैंक से मैसेज आएगा। इसलिए दिल्ली की सभी महिलाएं इंतजार कर रही हैं कि अगले चार दिनों में महिलाओं के खाते में 2500 रुपए आएंगे।

आतिशी ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी झूठ नहीं बोलते हैं। वैसे प्रधानमंत्री मोदी ने एक झूठ तो बोल दिया है। उन्होने कहा था कि पहली कैबिनेट में ही महिलाओं को 2500 रुपए देने की स्कीम को पास करेंगे, लेकिन पहली कैबिनेट में स्कीम पास नहीं हुई। प्रधानमंत्री मोदी की दूसरी गारंटी थी कि 8 मार्च को पहली किस्त आएगी, उसका हम इंतजार कर रहे हैं।

वहीं, ''आप'' के वरिष्ठ नेता कुलदीप कुमार ने कहा कि 8 मार्च में अब सिर्फ 4 दिन और बचे हैं, दिल्ली की महिलाएं पूछ रही हैं कि उनके खाते में 2500 रुपए कब आएंगे? प्रधानमंत्री मोदी ने कहा था कि 8 मार्च को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर महिलाओं के खाते में 2500 रुपए आ जाएंगे। अब 8 मार्च में चार दिन और बचे हैं। पहली कैबिनेट बैठक में यह स्कीम पास नहीं हुई और प्रधानमंत्री मोदी की गारंटी झूठी साबित हुई। हमें पूरी उम्मीद है कि दिल्ली की सीएम रेखा गुप्ता प्रधानमंत्री मोदी की गारंटी को जुमला साबित नहीं होने देंगी और महिलाओं को 2500 रुपए महीना देने का काम करेंगी।

कुलदीप कुमार ने कहा कि हम भाजपा को जगाने आए हैं कि अभी तक सरकार ने महिलाओं से कोई डिटेल नहीं ली है। इसलिए दिल्ली की महिलाएं जानना चाहती हैं कि उनके खाते में 2500 रुपए कैसे और कब आएंगे? सीएम रेखा गुप्ता से कहना चाहते हैं कि प्रधानमंत्री मोदी की पहली गारंटी तो जुमला साबित हो गई, अब 8 मार्च आने में 4 दिन बचे हैं। प्रधानमंत्री मोदी की दूसरी गारंटी को पूरा कीजिए। अब सीएम रेखा गुप्ता बताएं कि कहीं यह मोदी की गारंटी 15 लाख की तरह जुमला तो साबित होने नहीं जा रही है? महिलाओं को 2500 रुपए मिलने तक आम आदमी पार्टी का संघर्ष जारी रहेगा।

# डीयू में मनुस्मृति और बाबरनामा जैसे किसी भी अध्ययन की नहीं है कोई योजना: कुलपति प्रो. योगेश सिंह

सुषमा रानी

**नई दिल्ली।** दिल्ली विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. योगेश सिंह ने कहा कि दिल्ली विश्वविद्यालय में मनुस्मृति या बाबरनामा जैसा कोई भी कोर्स या अध्ययन सामग्री प्रस्तुत करने की हमारी कोई योजना नहीं है। कुलपति ने कहा कि डीयू प्रशासन के सामने न तो ऐसा कोई विषय विचारणीय है और भविष्य में भी हम ऐसे विषयों को अस्वीकार करते हैं।

कुलपति ने कहा की बाबरनामा तो वैसे भी एक आताताई की आत्मकथा है। उसके पढ़ाने की न तो कोई जरूरत है और आज के समय में न ही उसकी कोई प्रासंगिकता है। उन्होंने कहा कि नई शिक्षा नीति (एनईपी 2020) के तहत हम भारतीय परम्पराओं के अनुरूप नए-नए कोर्स लाना चाहते हैं और ला भी रहे हैं, जिनसे देश और समाज का भला हो। हम विकसित भारत की ओर बढ़ रहे हैं, इस दिशा में देश की अर्थव्यवस्था कैसे मजबूत हो और समाज का दायरा कैसे बेहतर हो सके, हम इसकी ओर अग्रसर हैं। दिल्ली विश्वविद्यालय अपनी अध्ययन सामाग्री इस बात को मध्यनजर रखके डिजाइन कर रहा है कि हम 2047 तक विकसित राष्ट्र के संकल्प को कैसे प्राप्त कर सकते हैं, और डीयू का उसमें क्या योगदान हो सकता है।

# 40वें मुफ्त नेत्र जाँच और मोतियाबिन्द सर्जरी शिविर से सैकड़ों लोगों की आँखों की रोशनी फिर से वापिस आई

मुख्य संवाददाता /सुषमा रानी

**नई दिल्ली :** संत राजिन्दर सिंह महाराज के मार्गदर्शन में सावन कृपाल रूहानी मिशन मोतियाबिन्द के कारण से होने वाले अंधेपन को खत्म करने की दिशा में साल में दो बार मुफ्त आँखों की जाँच और मोतियाबिन्द सर्जरी शिविरों का आयोजन करता है ताकि उन लोगों की आँखों की रोशनी फिर से वापिस लाई जा सके, जो इसके ऑपरेशन का खर्च उठा नहीं सकते। इस नेक कार्य को साकार करने के लिए इस गैर-लाभकारी आध्यात्मिक मिशन ने नौएडा के ICARE आँखों के अस्पताल के साथ साझेदारी की है ताकि मरीजों की निःशुल्क मोतियाबिन्द सर्जरी की जा सके। ये सर्जरी ICARE अस्पताल के डॉक्टरों के साथ-साथ संयुक्त राज्य अमेरिका से आए आँखों के विशेषज्ञों द्वारा की जाती है, जो निस्वार्थ सेवा की भावना से मरीजों को अपनी सेवा मुफ्त में प्रदान करते हैं।

इस वर्ष 2 मार्च तक संत दर्शन सिंह धाम और कृपाल बाग़, दिल्ली में आयोजित किया गया। सभी मरीजों की प्रारंभिक जाँच

23 फरवरी को संत दर्शन सिंह धाम, बुराड़ी में की गई। यहां जाँचे गए 1,956 भाई-बहनों में से 830 का सावधानीपूर्वक पैरामीटर जाँच के बाद मोतियाबिन्द का ऑपरेशन किया गया। उसके बाद पूरे सप्ताह 2 मार्च तक इन मरीजों को नौएडा के ICARE आँखों के अस्पताल में मुफ्त आवास, भोजन और अस्पताल आने-जाने की सुविधा भी मुफ्त में प्रदान की गई। जहाँ उनकी मोतियाबिन्द सर्जरी भी मुफ्त में हुई।

23 फरवरी को ICARE आँखों के अस्पताल के डॉक्टरों और मेडिकली रूप से प्रशिक्षित कर्मचारियों ने 2000 से ज्यादा भाई-बहनों की मोतियाबिन्द हटाने की सर्जरी करने के लिए उनकी आँखों की गहन जाँच की। जिन मरीजों को उनकी सर्जरी की तारीख बताई गई थी, उन्हें पूरे एक सप्ताह तक कृपाल बाग में रहने और खाने-पीने की सुविधा मुफ्त में प्रदान की गई। कृपाल बाग से, रोगियों को अस्पताल द्वारा उपलब्ध कराई गई बसों में नौएडा के अस्पताल में ले जाया गया।, जहाँ उनकी सर्जरी की जानी थी। मरीजों को सर्जरी के बाद उनकी सहायता और मदद करने के लिए सावन कृपाल रूहानी मिशन द्वारा उन्हें पढ़ने के लिए चश्मे और आवश्यक सुविधाएँ भी मुफ्त में प्रदान की गईं।

# रक्षक कप 2025 की शानदार शुरुआत, ईस्टर्न रेंज ने ट्रैफिक एकादश को हराया

मुख्य संवाददाता

**यमुना स्पोर्ट्स कांप्लेक्स, दिल्ली:** रक्षक कप 2025 का उद्घाटन शानदार तरीके से हुआ, जब ईस्टर्न रेंज ने पहले मैच में ट्रैफिक एकादश को हराकर टूर्नामेंट की रोमांचक शुरुआत की। इस उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि विशेष पुलिस आयुक्त अजय चौधरी थे, जिन्होंने खेल का उद्घाटन किया और खिलाड़ियों को शुभकामनाएं दीं।

पहले मैच में ईस्टर्न रेंज के कप्तान दीपेंद्र सिंह और ट्रैफिक एकादश के कप्तान शशांक जायसवाल के बीच टॉस हुआ। टॉस जीतने के बाद ईस्टर्न रेंज ने पहले बल्लेबाजी करने का फैसला लिया। टीम ने 20 ओवरों में 9 विकेट के नुकसान पर 141 रन बनाए। ट्रैफिक एकादश के गेंदबाजों ने काफी प्रयास किए, लेकिन वे ईस्टर्न रेंज के बल्लेबाजों को बड़ा स्कोर बनाने से रोक नहीं पाए। ट्रैफिक की टीम को 142 रन का लक्ष्य मिला, लेकिन वे इसे हासिल नहीं कर पाए। खिलाड़ियों में अतिरिक्त आयुक्त ट्रैफिक पुलिस दिनेश गुप्ता, डीसीपी राजीव रावल सहित कई ट्रैफिक इंस्पेक्टर नें मैच जीतने के लिए में ट्रैफिक टीम ने पूरा जोर लगाया, लेकिन 19.5 ओवर में 139 रन पर ऑल आउट हो गई। इस तरह, ईस्टर्न रेंज ने मैच को 2 रनों से जीत लिया। इस अवसर पर विशेष पुलिस आयुक्त अजय चौधरी ने कहा, ₹पिछले 7 साल से रक्षक कप का आयोजन हो रहा है, और यह पुलिस विभाग के लिए एक बेहतरीन मंच है, जहां टीमों को प्रतिस्पर्धा करने और एक-दूसरे से जुड़ने का मौका मिलता है। यह खेल केवल फिटनेस ही नहीं, बल्कि पुलिस कर्मियों के बीच भाईचारे और सहयोग की भावना को भी बढ़ावा देता है।" इंडियन मीडिया वेलफेयर एसोसिएशन के अध्यक्ष राजीव निशाना ने बताया, ₹रक्षक कप में इस साल 12 टीमों ने भाग लिया है, और हम उम्मीद करते हैं कि यह टूर्नामेंट हर साल और अधिक रोमांचक होता जाएगा।" रक्षक कप 2025 की शानदार शुरुआत ने साबित कर दिया कि यह टूर्नामेंट पुलिस कर्मियों के बीच एकता, खेल भावना और टीमवर्क को बढ़ावा देने का काम कर रहा है।

# निरस्त्रीकरण आज विश्व की आवश्यकता है (5 मार्च दिवस विशेष आलेख)

हर वर्ष 5 मार्च को 'अंतर्राष्ट्रीय निरस्त्रीकरण और अप्रसार जागरूकता दिवस' के रूप में मनाया जाता है। पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि यह दिवस विशेष रूप से युवाओं में निरस्त्रीकरण के मुद्दों के बारे में जागरूकता और समझ को बढ़ावा देने के लिए मनाया जाता है। गौरतलब है कि इस दिवस की शुरुआत 'शांति और सुरक्षा' के लिए निरस्त्रीकरण और अप्रसार के महत्व को बढ़ावा देने के लिए वर्ष 2021 में संयुक्त राष्ट्र महासभा (यूएनजीए) द्वारा इसकी स्थापना की गई थी। यदि हम यहां इसके इतिहास की बात करें तो इस संदर्भ में 7 दिसंबर 2022 को संयुक्त राष्ट्र महासभा ने एक प्रस्ताव अपनाया और प्रति वर्ष 5 मार्च को 'अंतर्राष्ट्रीय निरस्त्रीकरण और अप्रसार जागरूकता दिवस' के रूप में घोषित किया। गौरतलब है कि 5 मार्च 2023 को अंतर्राष्ट्रीय निरस्त्रीकरण और अप्रसार जागरूकता दिवस का पहला आयोजन किया गया। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि प्रति वर्ष 24 से 30 अक्टूबर तक 'संयुक्त राष्ट्र निरस्त्रीकरण सप्ताह' मनाया जाता है।कहना चाहूंगा कि इस सप्ताह का आयोजन निरस्त्रीकरण के महत्व के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए किया जाता है।इसी तरह से, परमाणु हथियारों के पूर्ण उन्मूलन के लिए अंतरराष्ट्रीय दिवस 26 सितंबर को मनाया जाता है।सच तो यह है कि आज पूरा विश्व बारूद के ढ़ेर पर खड़ा हुआ है। संपूर्ण विश्व में हथियारों की होड़ लगी हुई है। पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि आज विश्व में अमेरिका सबसे बड़ा हथियार निर्यातक देश है, जबकि रूस दूसरे स्थान पर है।फ्रांस, चीन और जर्मनी, इटली, यूनाइटेड किंगडम, स्पेन, दक्षिण कोरिया, इजरायल भी शीर्ष हथियार निर्यातक देशों में शामिल हैं।वास्तव में, वैश्विक हथियार व्यापार एक बहुत बड़ा उद्योग है, जो सदियों-सदियों से अस्तित्व में है। कहना ग़लत नहीं होगा कि हर साल दुनिया में अरबों डॉलर के हथियारों की खरीद-फरोख्त की जाती है। आंकड़े बताते हैं कि वर्ष 2021 में दुनिया भर में हथियारों का व्यापार 127 बिलियन डॉलर था।आज स्थिति यह है कि दुनिया के विभिन्न हथियार निर्यातक देश हर साल हथियार बेचकर अरबों-खरबों रुपये कमाते हैं।स्वीडिश थिंक टैंक स्टॉकहोम इंटरनेशनल पीस रिसर्च इंस्टीट्यूट के अनुसार, वर्ष 2019-23 की अवधि के लिए भारत दुनिया का शीर्ष हथियार आयातक था, जिसमें वर्ष 2014-18 की अवधि की तुलना में आयात में 4.7% की वृद्धि हुई थी। वहीं, यूक्रेन में युद्ध की पृष्ठभूमि में, रिपोर्ट में यह बात कही गई है कि वर्ष 2014-18 और वर्ष 2019-23 के बीच यूरोपीय देशों द्वारा हथियारों के आयात में 94% की वृद्धि हुई है। आंकड़े बताते हैं कि वर्ष 2019-23 में 10 सबसे बड़े हथियार आयातकों में से नौ, जिनमें भारत, सऊदी अरब और कतर के शीर्ष 3 शामिल हैं, एशिया और ओशिनिया या मध्य पूर्व में थे। वर्ष 2022-23 में 30 से अधिक देशों से प्रमुख हथियारों का हस्तांतरण प्राप्त करने के बाद यूक्रेन वैश्विक स्तर पर चौथा सबसे बड़ा हथियार आयातक बन गया। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि यूरोप के राज्यों ने वर्ष 2014-18 और वर्ष 2019-23 के बीच प्रमुख हथियारों के अपने आयात को लगभग दोगुना (+94 प्रतिशत) कर दिया। वर्ष 2019-23 में एशिया, ओशिनिया और मध्य पूर्व में हथियारों की कहीं बड़ी मात्रा प्रवाहित हुई, जहां 10 सबसे बड़े हथियार आयातकों में से नौ हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका ने वर्ष 2014-18 और वर्ष 2019-23 के बीच अपने हथियारों के निर्यात में 17 प्रतिशत की वृद्धि की, जबकि रूस के हथियारों का निर्यात आधा हो गया। रूस पहली बार तीसरा सबसे बड़ा हथियार निर्यातक था, जो फ्रांस से ठीक पीछे था। बहरहाल, कहना चाहूंगा कि आज अमरीका, रूस और चीन जैसी बड़ी ताक़तों की आपसी होड़ बढ़ने के कारण हथियारों के

वैश्विक कारोबार में लगातार बढ़ोतरी हुई है।हैरानी की बात तो यह है कि आज पूरे विश्व में हथियारों का कारोबार तेज़ी से फल-फूल रहा है। हर साल हथियारों का कई बिलियन डॉलर का अंतरराष्ट्रीय कारोबार होता है। आंकड़े बताते हैं कि आज भारत दुनिया के हथियार बेचने वाले 25 बड़े देशों में की सूची में शामिल है।भारत 2015 से 2019 की अवधि तक दूसरा सबसे ज्यादा हथियार खरीदने वाला देश रहा। गौरतलब है कि वित्त वर्ष 2023-24 देश में 1.27 लाख करोड़ रुपये के हथियारों का निर्माण हुआ यानी रक्षा उत्पादन किया गया। यह उत्पादन वर्ष 2014-15 की तुलना में 2.7 गुना ज्यादा है। एक उपलब्ध जानकारी के अनुसार केंद्र सरकार 2029 तक रक्षा निर्यात को 50,000 करोड़ रुपये तक बढ़ाने के लक्ष्य पर काम कर रही है। बहरहाल, कहना ग़लत नहीं कि हथियारों की होड़ के कारण आज दुनिया विनाश के मुहाने पर खड़ी हुई है। यदि हम यहां रूस-यूक्रेन युद्ध की ही बात करें तो तीन साल की जंग में यूक्रेन 18 प्रतिशत तक सिकुड़ गया है। दोनों देशों (रूस-यूक्रेन) के बीच विध्वंस, तबाही और बर्बादी में हजारों लाखों लोग मारे जा चुके हैं। एक उपलब्ध जानकारी के अनुसार रूस-यूक्रेन युद्ध से अब तक 1-1.5 खरब डॉलर (लगभग 80-125 लाख करोड़ रुपये) का नुकसान हो चुका है, जो कि बहुत बड़ी क्षति है। युद्ध के कारण कोई भी देश बहुत पीछे चला जाता है और उससे उबरना बहुत ही मुश्किल होता है। युद्ध के कारण आर्थिक व जान-माल को तो नुकसान पहुंचता ही है पर्यावरण और पारिस्थितिकी तंत्र भी व्यापक असर पड़ता है। पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि इजरायल में युद्ध ने 67.57 अरब डॉलर का नुकसान पहुंचाया है, जहां स्वास्थ्य और शिक्षा का बजट जंग में खर्च हुआ। वहीं, गाजा और वेस्ट बैंक में 50 अरब डॉलर का निवेश बर्बाद हुआ, बेरोज़गारी दर 80% तक पहुंच गई और 61% लोग गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन कर रहे हैं। बहरहाल, पाठकों को बताता चलूं कि निरस्त्रीकरण का मतलब है-' हथियारों को कम करना, सीमित करना या खत्म करना।' वास्तव में, यह आम तौर पर किसी देश के सैन्य या किसी खास तरह के हथियारों को संदर्भित करता है। कहना ग़लत नहीं होगा कि निरस्त्रीकरण के ज़रिए, हथियारों की होड़ को रोका जा सकता है और मानवता के लिए खतरे को कम किया जा सकता है। यह निरस्त्रीकरण ही है जो किसी देश के नागरिकों के बीच पीड़ा को रोक सकती है, राज्यों से सैन्य व्यय का बोझ खत्म कर सकती है, परमाणु युद्ध की संभावना को कम कर सकती है तथा इसके जरिए ही सुरक्षा, शांति और मानवता के अस्तित्व को बढ़ाया जा सकता है। दूसरे शब्दों में कहें तो निरस्त्रीकरण और अप्रसार जागरूकता के लिए अंतर्राष्ट्रीय दिवस सामूहिक विनाश के हथियारों से उत्पन्न मौजूदा खतरे का एक अनुस्मारक है। वास्तव में यह वैश्विक कार्रवाई के लिए एक मंच प्रदान करता है और निरस्त्रीकरण और अप्रसार प्रयासों पर अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देता है और जागरूकता बढ़ाने और संवाद को बढ़ावा देकर, यह दिवस सभी के लिए एक सुरक्षित दुनिया बनाने में मदद करता है।यदि हम यहां इस दिवस के लक्ष्यों और उद्देश्यों की बात करें तो यह दिवस सामूहिक विनाश के हथियारों के खतरों और निरस्त्रीकरण और अप्रसार के महत्व के बारे में जागरूकता को बढ़ावा देता है।यह आम आदमी के बीच निरस्त्रीकरण और अप्रसार मुद्दों के बारे में शिक्षा को बढ़ावा देता है तथा हथियारों के खतरे को कम करने और शांति और सुरक्षा को बढ़ावा देने के लिए कार्रवाई को प्रोत्साहित करता है। अंत में यही कहूंगा कि निरस्त्रीकरण प्रयास शांति और सुरक्षा को बढ़ाने, विभिन्न सशस्त्र संघर्षों को रोकने और उन्हें समाप्त करने और हथियारों के कारण होने वाली मानवीय पीड़ा को कम करने में योगदान करते हैं। वास्तव में आज मानवता की रक्षा के लिए अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा बनाए रखना, मानवता के सिद्धांतों को बनाए रखना, देश के सभी नागरिकों की सुरक्षा करना, सतत विकास को बढ़ावा देना, राज्यों के बीच विश्वास और भरोसा बढ़ाना और सशस्त्र संघर्ष को रोकना और समाप्त करना बहुत ही जरूरी और आवश्यक है।

**सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा साहित्यकार,**

# ओपन टेलीकॉम AI प्लेटफॉर्म के लिए जियो, एएमडी, सिस्को और नोकिया ने हाथ मिलाया

सुषमा रानी

**नई दिल्ली।** दुनिया की चार बड़ी तकनीकी कंपनियां साथ मिलकर जल्द ही एक नया ओपन टेलीकॉम AI प्लेटफॉर्म लॉन्च करेंगी। जियो प्लेटफॉर्म्स लिमिटेड (JPL), एएमडी, सिस्को और नोकिया ने बर्सिलोना में चल रही मोबाइल वर्ल्ड कांग्रेस 2025 में इस योजना का खुलासा किया। यह नया प्लेटफॉर्म टेलीकॉम ऑपरेटर्स को AI सॉल्युशन्स देने के लिए डिज़ाइन किया जाएगा। नए टेलीकॉम AI प्लेटफ़ॉर्म से नेटवर्क की सुरक्षा, दक्षता और क्षमता तो बढ़ेगी ही, कमाई के भी नए रास्ते खुलेंगे। यह मल्टी-डोमेन इंटेलिजेंस फ्रेमवर्क नेटवर्क ऑपरेशन्स और ऑटोमेशन को एकीकृत कर, एंड-टू-एंड नेटवर्क इंटेलिजेंस उपलब्ध कराएगा।

रिलायंस जियो के ग्रुप सीईओ मैथ्यू ओमन ने कहा, ₹सभी टेल्को लेयर्स में एजेंटिक एआई का उपयोग करके, हम एक मल्टीमॉडल, मल्टीडोमेन ऑर्केस्ट्रेटेड वर्कफ़्लो प्लेटफ़ॉर्म बना रहे हैं जो टेलीकॉम इंडस्ट्री की दक्षता, इंटेलिजेंस और सुरक्षा को फिर से परिभाषित करेगा। एएमडी, सिस्को और नोकिया के सहयोग से, जियो ओपन टेलीकॉम एआई प्लेटफ़ॉर्म को आगे बढ़ा रहा है। यह ऑटोमेशन मात्र नही है - यह एआई से चलने वाला एक ऐसा ऑटोनोमस नेटवर्क होगा जो उपयोगकर्ताओं के एक्सपीरियंस के हिसाब से अपने आप को ढाल लेगा। यह डिजिटल इको सिस्टम में नई सर्विस और रेवेन्यू के नए अवसर पैदा करेगा।"

एएमडी के सीईओ लिसा सु ने कहा, ₹एएमडी को अगली पीढ़ी के एआई-संचालित दूरसंचार बुनियादी ढांचे के लिए जियो प्लेटफॉर्म्स लिमिटेड, सिस्को और नोकिया के साथ सहयोग करने पर गर्व है। साथ मिलकर हम ऑपरेटरों और उपयोगकर्ताओं दोनों तक एआई के फायदे पहुंचाएंगे और संचार और कनेक्टिविटी के भविष्य को आकार देंगे।

सिस्को के सीईओ चक रॉबिंस ने कहा, ₹जियो प्लेटफॉर्म्स लिमिटेड, एएमडी और नोकिया के साथ यह साझेदारी, इंडस्ट्री की विशेषज्ञता का उपयोग करेगी। हम यह देखने के लिए उत्सुक हैं कि टेलीकॉम एआई प्लेटफॉर्म किस तरह दक्षता, सुरक्षा को बढ़ाएगा और सेवा प्रदाता ग्राहकों के लिए नए राजस्व स्रोतों को अनलॉक करेगा।

नोकिया के प्रेसीडेंट और सीईओ पेक्का लुंडमार्क ने कहा, ₹नोकिया कई क्षेत्रों में टेक्नोलॉजी लीडर है, जिसमें RAN, कोर, फिक्स्ड ब्रॉडबैंड, IP और ऑप्टिकल ट्रांसपोर्ट शामिल हैं। हम इस व्यापक विशेषज्ञता को साझा कर खुशी महसूस कर रहे हैं। टेलीकॉम AI प्लेटफ़ॉर्म बेहतर प्रदर्शन, सुरक्षा, परिचालन दक्षता, स्वचालन और बेहतर ग्राहक अनुभव देगा। यह सब कृत्रिम बुद्धिमत्ता की अपार शक्ति के माध्यम से होगा। मुझे गर्व है कि नोकिया इस काम में योगदान दे रहा है।"

# आगराइट्स बोलें - "इतिहास लिखने वालो ने भारत का इतिहास बताया कम और छिपाया ज्यादा हैं"

"लुटेरे, हत्यारे, आक्रांताओं को महान बताया और मातृभूमि पर मर मिटने वालों को बड़ी चतुराई से जातिवाद में बांटकर कमजोर दर्शाया ताकि हमारे सशक्त इतिहास, मातृभूमि पर मर मिटने वालों का त्याग, बलिदान और वीरता को दबाया जा सके

**आगरा, संजय साग़र सिंह।** लोगों के यह विचार उन महत्वपूर्ण मुद्दों को उजागर करते हैं, जो भारतीय इतिहास को लेकर समाज में लंबे समय से चल रहे गलत दृष्टिकोणों से संबंधित हैं। इस परिप्रेक्ष्य में, इतिहास लेखन की प्रक्रिया पर गहरी चिंता व्यक्त की गयी है, विशेष रूप से कई ऐतिहासिक घटनाओं और पात्रों को कमजोर करके प्रस्तुत किया गया है। इतिहासकारों ने कई महत्वपूर्ण भारतीय वीरों को उचित स्थान नहीं दिया और उन्हें कमतर दिखाया और छुपाया हैं। जबकि विदेशी आक्रांताओं और लुटेरों को महान बनाया हैं। जबकि मातृभूमि पर मर मिटने वाले भारतीय वीरों योद्धाओं के बारे में अधिक जानकारी और सम्मान दिया जाना चाहिए था। इसके अतिरिक्त, भारतीय समाज को जातिवाद में बांटकर उसे कमजोर करने का कार्य किया गया, ताकि हमारे सशक्त इतिहास, मातृभूमि पर मर मिटने वालों का त्याग, बलिदान और वीरता को दबाया जा सके। समाजसेवीयों यह दृष्टिकोण भारतीय इतिहास के पुनर्लेखन की ओर इशारा करता है।

इस सन्दर्भ में उपेंद्र सिंह ने कहा,₹हमारे यहां क्रूर आक्रांता को भी महान दिखाया और पढ़ाया जाता हैं, लेकिन चीन में, सेंट्रल एशिया में, और मध्यपूर्व में कहीं भी इन्हे महान नहीं, हत्यारे, लुटेरे आक्रांता ही पढ़ाया जाता है। फिर भारत में हत्यारे, लुटेरे क्रूर आक्रांता महान कैसे हुए ? बस भारत में ही रीत उल्टी है, यहाँ हत्यारे, लुटेरे, क्रूर आक्रांता महान बताये जाते हैं और जो मिट्टी पर मर मिटे उन्हें बड़ी चतुराई से जातिवाद में बांटकर छोटा मोटा कमजोर राजा करार दे दिया जाता है। जबकि हमारे देश के लिए वो महान नहीं, जिसका बड़ा साम्राज्य, बड़ी सेना रही हो, बड़ा विजेता रहा हो, बल्कि महान वो हैं जिन्होंने अपनी मातृभूमि और उसके लोगों के लिए जीवन अर्पित किया। हत्यारे, लुटेरे क्रूर आक्रांता सिर्फ़ उनके लोगों के लिए ही महान हो सकते हैं, हमारी सनातनी सभ्यता के लिए नहीं।₹साथ ही, श्री सिंह ने कहा, इतिहास लिखने वालो ने भारत का इतिहास बताया कम और छिपाया ज्यादा हैं। लुटेरे, हत्यारे, आक्रांताओं को महान बताया हैं और मातृभूमि पर मर मिटने वालों को बड़ी चतुराई से भारतीय समाज को जातिवाद में बांटकर कमजोर कार्य किया गया हैं। ताकि हमारे सशक्त इतिहास, मातृभूमि पर मर मिटने वालों का त्याग, बलिदान और उनकी वीरता को दबाया जा सके। इसलिए राष्ट्रहित में, भारतीय इतिहास का पुनर्लेखन किया जाना चाहिए जिसमें सत्य और वास्तविकता को सामने लाया जाए, इससे भारतीय समाज में जागरूकता बढ़ेगी और भविष्य की पीढ़ियों को अपने सच्चे इतिहास के बारे में सही जानकारी मिलेगी।

अरविन्द पुष्कर एडवोकेट ने कहा, ₹भारत का इतिहास लिखने वाले कुछ इतिहासकारों द्वारा हमारी मातृभूमि पर मर मिटने वाले हमारे वीरों के इतिहास को बताया कम और छिपाया ज्यादा हैं।

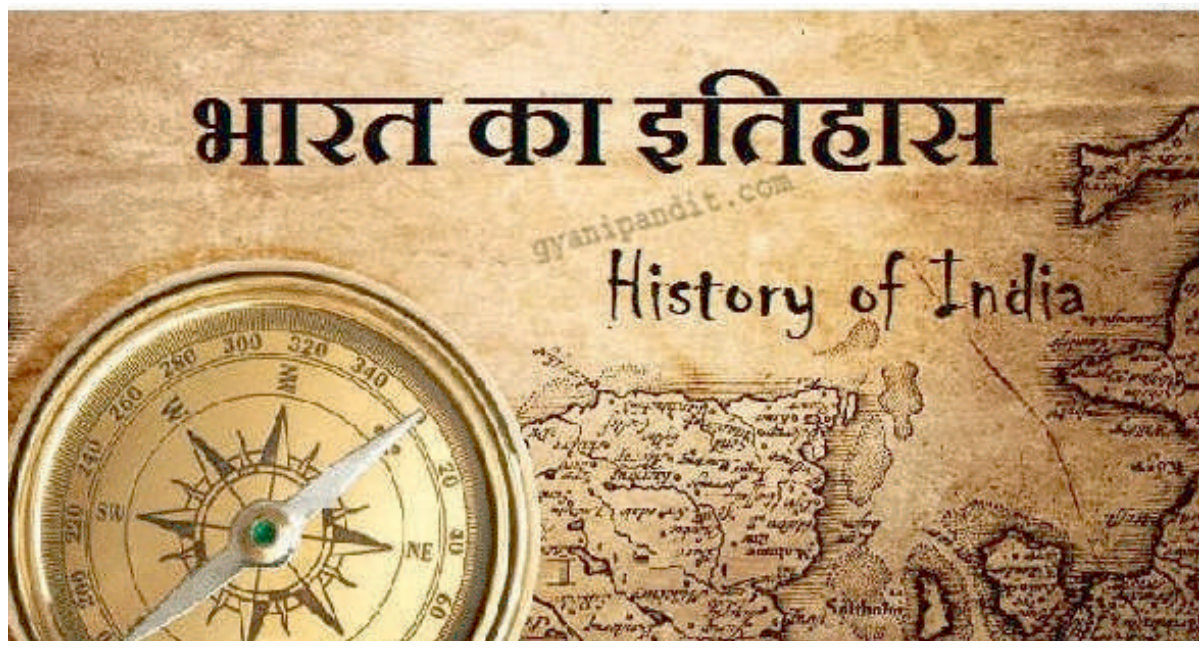


ऐसा माना जाता है कि कुछ इतिहासकारों ने हत्यारे, लुटेरे, क्रूर आक्रांता के साम्राज्य की महिमा बढ़ाने के लिए भारतीय वीरों की वीरता को कम करके प्रस्तुत किया गया हैं। उदाहरण के लिए, छत्रपति शिवाजी महाराज और उनके पुत्र संभाजी महाराज की वीरता को उचित स्थान नहीं मिला। यहां तक कि कुछ इतिहासकारों ने तो हत्यारे, लुटेरे क्रूर आक्रांताओं को महान बताने के लिए छत्रपति संभाजी महाराज सहित हजारों वीर बलिदानियों के इतिहास को भी छुपाया और हत्यारे, लुटेरे क्रूर आक्रांताओं को महान बताकर बढ़ाया गया।

समाजसेवी पंकज जैन ने कहा, ₹क्या आपको लगता है कि पुरानी पार्टी की सरकार के शासन में कोई छावा जैसी फ़िल्म बनाने की जुर्रत कर सकता था? नहीं, क्युकी वॉलीवुड सनातन सभ्यता विरोधी हैं। यह समय समय पर हकीकत से दिग्भ्रमित करता रहा हैं। आपको लगेगा की धीरे-धीरे यह बदल रहे है, लेकिन ऐसा नहीं हैं। ये अब लाचार दिख रहे हैं। इसीलिए 'छावा' जैसी फिल्में हमारे इतिहास को सही रूप में प्रस्तुत करने और हमारे वीरों की वीरता को सम्मान देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। जबकि, हमे स्कूलों में तो सिर्फ यही पढ़ाया गया कि अकबर महान था, महाराणा प्रताप जी जंगल में भाग गए, गौरी से पृथ्वीराज चौहान हर गए, छत्रपति शिवाजी महाराज को बंदी बना लिया गया था और तो और अभी तक तो हमें मुगल-ए-आज़म, ताजमहल, जोधा-अकबर जैसी फ़िल्में दिखाई गई जिनमें हत्यारे, लुटेरे, जाहिल आक्रांताओं को न्यायप्रिय, दयालु, भव्य दिखाया जाता रहा है। जबकि मातृभूमि पर मर मिटने वाले सभी महानायक, वीर, महा पराक्रमी भारत के सच्चे सपूत थे। लेकिन पहले की सरकारों ने भारत के महान योद्धाओं का इतिहास स्कूलों में कभी भी नहीं पढ़ाया बल्कि देश का पहला शिक्षा मंत्री भी आक्रांता का चाहने वाला बनाया गया था। जिसने सारे देश के वीर योद्धाओं का इतिहास मिट्टी में मिला दिया और खामखा जाहिल, लुटेरे और हत्याओं को महान बनाकर हमको खामखा पढ़ा दिया और बड़ी चालाकी से हमारे वीरों को कमज़ोर दिखाने का प्रयास किया गया लेकिन 'छावा' जैसी फिल्में हमारे वीरों की वीरता और संघर्ष को उजागर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

विजय पाल नरवार ने कहा, "हमलोगों को देश विरोधियों, व एक्सीडेंटल हिन्दूओं द्वारा रचित फ़र्ज़ी इतिहास पढाया गया। जो कि देश विरोधियों, व एक्सीडेंटल हिन्दूओं ने करवाया था और ये सभी इतिहास छुपाकर लुटेरे और हत्यारों का साम्राज्य स्थापित करने मे लगे थे। हिन्दू एकता को जातिवाद में बांटने वाले गद्दारों की वजह से ही लुटेरे हत्यारे आक्रांताओं और अंग्रेजों ने राज किया। उन्होंने आगे कहा कि भारत के बलिदानी वीरों का इतिहास इतिहासकारों ने बताया कम छुपाया ज्यादा हैं। जो चीज़ें बतानी और पढ़ानी चाहिए थी उनको बड़ी चालाकी से जातिवाद में छिपाया है और हत्यारे लुटेरे को हमको खामखा पढ़ाकर देश विरोधियों ने हमारे समाज को कमज़ोर दिखाने का प्रयास किया गया हैं। उदाहरण के लिए महाराजा सूरजमल, गोकुला जाट जैसे वीर योद्धा हुए हैं, जिन्होंने लुटेरे, हत्यारे, जाहिल, आक्रांताओं के साम्राज्य की जड़े खोद दी थी। महाराजा सूरजमल जी ने आगरा को 1761 में इनसे मुक्त कराया। आज उनकी एक मूर्ति तक आगरा किले पर नहीं है और जन्मदिवस को आगरा किले में मनाने की मांग की जा रही है।

# कानपुर की जिला पंचायत अध्यक्ष स्वप्निल वरुण की सास को भाजपाइयों ने दी श्रद्धांजलि

- सांसद और यूपी सरकार की पूर्व मंत्री स्वर्गीय कमल रानी वरुण की पुत्री हैं कानपुर की जिला पंचायत अध्यक्ष स्वप्निल वरुण

सुनील बाजपेई

**कानपुर।** संसार में जन्म और इसके बाद मृत्यु के क्रम में स्थूल शरीर छोड़कर सूक्ष्म शरीर में प्रवेश करने वाली समाज सेविका भी रही लक्ष्मी देवी को यहां भाजपा के जनप्रतिनिधियों और नेताओं समेत अन्य गण मान्य लोगों ने भी उनके त्रयोदशी संस्कार में भाग लेकर अपनी भाव भीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। साकेत नगर में रहने वाली लक्ष्मी देवी अपने पीछे भरा पूरा परिवार मनीष सिंह, आशीष सिंह को छोड़ गईं हैं। वह जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती स्वप्निल वरुण की सास भी थीं।

हर किसी के सुख दुख में सदैव खड़े होने वाली सरल और शालीन स्वभाव की व्यवहार कुशल जिला पंचायत अध्यक्ष भाजपा नेता स्वप्निल वरुण की मां कमल रानी वरुण भी घाटमपुर से दो बार सांसद एक बार विधायक के साथ ही यूपी सरकार में मंत्री भी रह चुकी हैं। सन 2020 मृत्यु के मामले में विश्व व्यापी रहे कोरोना महामारी ने उन्हें यह संसार छोड़ने के लिए मजबूर कर दिया था। फिलहाल अब हर जाति, हर धर्म और हर वर्ग के लोगों में मजबूत पकड़ रखने वाली जिला पंचायत अध्यक्ष स्वप्निल वरुण भी समाज सेवा और जनहित के मामले में लोक प्रिय रहीं अपनी मां कमल रानी वरुण के ही पद चिन्हों पर चल रही हैं।

शोषित वंचित और दलितों के हित कार्यो में भी अग्रणी और जन समस्याओं के खिलाफ शुरू से ही जुझारू तेवरों वाली जिला पंचायत अध्यक्ष स्वप्निल वरुण की सास लक्ष्मी देवी को श्रद्धांजलि देने वालों में भाजपा समेत विभिन्न दलों के जनप्रतिनिधि नेताओं में क्षत्रिय जागरण मंच के संयोजक मुखिया और भारतीय प्रधान संगठन यूपी के अध्यक्ष ठाकुर एसके सिंह ,भाजपा नेत्री निशा तिवारी, राकेश शर्मा ,आर के तिवारी केडी तिवारी और विधानसभा अध्यक्ष सतीश महाना के प्रतिनिधि भाजपा नेता सुरेंद्र अवस्थी समेत अनेक गणमान्य लोग शामिल रहे।

# सीएम योगी इस दिन आएंगे नोएडा, लोगों को मिलेगी नई सौगात

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ 8 मार्च को नोएडा और ग्रेटर नोएडा का दौरा करेंगे। इस दौरान वह ग्रेटर नोएडा में एक सोलर कंपनी का लोकार्पण और भूमिपूजन करेंगे। इसके बाद नोएडा में अलग-अलग कंपनियों का लोकार्पण और शिलान्यास करेंगे। मुख्यमंत्री के आगमन को लेकर नोएडा प्राधिकरण ने तैयारियां शुरू कर दी हैं।

**नोएडा।** प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ आठ मार्च को नोएडा और ग्रेनो आएंगे। इसके लिए नोएडा प्राधिकरण ने तैयारी शुरु की है। सेक्टर-145 के आसपास सड़कों की रिसरफेसिंग शुरू की गई है। साफ-सफाई पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है।

यहां डिवाइडर पर पेंट किया जा रहा है। मुख्यमंत्री पहले ग्रेटर नोएडा जाएंगे। इसके बाद सड़क मार्ग से नोएडा आएंगे। नोएडा से हेलीकॉप्टर के जरिये लखनऊ वापस जाएंगे। इसके लिए सेक्टर-145 में हेलीपेड बनाया जा रहा है।

**तीनों कंपनियां नोएडा-ग्रेनो एक्सप्रेसवे के आसपास**

ग्रेटर नोएडा में सोलर कंपनी का लोकार्पण और भूमिपूजन करेंगे। इसके बाद नोएडा में अलग-अलग कंपनियों का लोकार्पण और शिलान्यास करेंगे। यह तीनों कंपनियां नोएडा-ग्रेनो एक्सप्रेसवे के आसपास हैं।

नोएडा प्राधिकरण ने उनके आगमन की तैयारी तेज कर दी है। हालांकि इस बार नोएडा प्राधिकरण के किसी भी प्रोजेक्ट का शिलान्यास और लोकार्पण सीएम नहीं करेंगे। इसके लिए मई में उनका कार्यक्रम तय किया गया है।

**माइक्रोसॉफ्ट कंपनी के भूखंड का भी करेंगे शिलान्यास**

नोएडा प्राधिकरण के अधिकारियों ने बताया कि सेक्टर-145 एमएक्यू सॉफ्टवेयर कंपनी की इमारत बनकर तैयार है। मुख्यमंत्री इसका शुभारंभ करेंगे। सेक्टर-145 स्थित माइक्रोसॉफ्ट कंपनी के भूखंड का शिलान्यास भी करेंगे। सेक्टर-132 में सीपी कंपनी का डाटा सेंटर बनकर तैयार है।

**सेक्टर 145 में बनाई जा रही है सड़क। सौ. नोएडा प्राधिकरण**

वह इसका भी लोकार्पण करेंगे। मुख्यमंत्री के आगमन को लेकर मंगलवार को नोएडा प्राधिकरण सीईओ डा लोकेश एम ने अपर मुख्य कार्यपालक अधिकारी, ओएसडी, जन स्वस्थ्य विभाग महाप्रबंधक और डीजीएम सिविल के साथ बैठक की। निर्देश दिया कि मुख्यमंत्री आगमन से पहले सभी कार्य पूरे कर लिए जाए।

**अप्रैल से शुरू हो सकती है एयरपोर्ट से कमर्शियल फ्लाइट की उड़ान**

साफ-सफाई से लेकर हेलीपैड का निर्माण पूरा कर लिया जाए। ताकि किसी प्रकार की दिक्कत या परेशानी न हो। इसके अलावा यातायात पुलिस और पुलिस अधिकारियों के साथ बैठक कर यातायात प्रबंधन को भी देखा जाए। नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट की प्रगति रिपोर्ट जानने मौके पर मुख्यमंत्री जा सकते हैं।

अप्रैल में नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट (Noida International Airport) से कमर्शियल फ्लाइट उड़ान भर सकती है। इस सिलसिले में सोमवार को मुख्य सचिव मनोज कुमार सिंह भी ग्रेटर नोएडा में रहे, यमुना एक्सप्रेस की बोर्ड बैठक के बाद वह एयरपोर्ट और अन्य स्थानों पर भी गए।

# नीति आयोग की रिपोर्ट 2025 जारी - उधारकर्ताओं से निर्माणकर्ताओं तकःभारत के वित्तीय विकास की कहानी में महिलाओं की विशेष भूमिका

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर पूरी दुनियाँ हृदय से स्वीकार करती है कि, भारत में महिलाओं को मान सम्मान पूश परख व अनेक शासकीय योजनाओं में प्राथमिकता से दरज़ा मिलता है जिसका आभास लेडीज फर्स्ट के एक तरह के प्रोटोकॉल से ही होता चला आ रहा है। अभी 8 मार्च 2023 को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस भी आ रहा है। एक और हम देखते हैं कि आज के युग में महिलाएं हर क्षेत्र में पुरुषों से आगे निकल रही है, जिसका सटीक उदाहरण हम पढ़ाई में फर्स्ट से लेकर महिला कामकाजी पेशवारों में भी आज महिलाएं अग्रणी है, इसलिए हीआज हर जॉब में कंपनियों द्वारा महिलाओं को प्राथमिकता दी जाती है, तो दूसरी ओर निजी क्षेत्र में भी महिलाओं को प्राथमिकता दी जाती है। मेरा मानना है कि उनमें जवाबदारी, जिम्मेदारी की सजता होना व हर काम को सीरियसली लेने का एक अभूतपूर्व गुण होता है। आज हम इस विषय पर बात इसलिए कर रहे हैं क्योंकि आज दिनांक 3 मार्च 2025 को देर शाम नीति आयोग ने उधारकर्ताओं से निर्माणकर्ताओं, तक भारत के वित्तीय विकास की कहानी में महिलाओं की भूमिका पर एक रिपोर्ट जारी की गई, जिसमें महिलाओं में वित्तीय जागरूकता पिछले वर्ष की तुलना में 42 पर्सेंट बढ़ी है इत्यादि अनेक सकारात्मक बातें महिलाओं के पक्ष में बताई गई है, इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, भारत की आर्थिक वृद्धि व प्रगति में महिला कामकाजी पेशेवरों की प्रतिभा समर्पण उत्साह व मेहनत का सराहनीय योगदान रहा है।

साथियों बात अगर हम 3 मार्च 2025 को देर शाम नीति आयोग द्वारा महिलाओं के वित्तीय क्षेत्र में उपलब्धियों सहयोग की रिपोर्टिंग जारी करने की करें तो,नीति आयोग ने आज उधारकर्ताओं से निर्माणकर्ताओं तकःभारत की वित्तीय विकास की कहानी में महिलाओं की भूमिका शीर्षक से एक रिपोर्ट जारी की। नीति आयोग के सीईओ द्वारा जारी की गई रिपोर्ट से पता चलता है कि भारत में अधिक महिलाएं ऋण लेना चाहती हैं और सक्रिय रूप से वे अपने क्रेडिट स्कोर की निगरानी कर रही हैं। दिसंबर 2024 तक, 27 मिलियन महिलाएं अपने क्रेडिट की निगरानी कर रही थीं, जो पिछले वर्ष की तुलना में 42 प्रतिशत की वृद्धि को दर्शाता है और ये बढ़ती वित्तीय जागरूकता का संकेत देता है।इस रिपोर्ट कोट्रांसयूनियन सीआईबीआईएल, नीति आयोग के महिला उद्यमिता मंच (डब्ल्यूईपी) और माइक्रोसेव कंसल्टिंग द्वारा प्रकाशित किया गया है। लॉन्च के दौरान, नीति आयोग के सीईओ ने महिला उद्यमियों को सशक्त बनाने में वित्त तक पहुंच की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा,सरकार मानती है कि वित्त तक पहुंच महिला उद्यमिता के लिए एक बुनियादी प्रवर्तक है। महिला उद्यमिता मंच( डब्ल्यूईपी) का एक समावेशी इको-सिस्टम बनाने की दिशा में काम करना जारी है, जो वित्तीय साक्षरता, ऋण तक पहुंच, परामर्श और बाजार लिंकेज को बढ़ावा देता है। हालांकि, न्यायसंगत वित्तीय पहुंच सुनिश्चित करने के लिए एक सामूहिक प्रयास की आवश्यकता है। महिलाओं की जरूरतों के अनुरूप समावेशी उत्पादों को डिज़ाइन करने में वित्तीय संस्थानों की भूमिका साथही संरचनात्मक बाधाओं को संबोधित करने वाली नीतिगत पहलें, इस गति को बढ़ाने में सहायक होंगी। डब्ल्यूईपी के तत्वावधान में इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए, फाइनेंसिंग वूमेन कोलैबोरेटिव (एफडब्ल्यूसी) का गठन किया गया है। हम चाहते हैं कि वित्तीय क्षेत्र के और अधिक हितधारक एफडब्ल्यूसी से जुड़ें और इस मिशन में अपना योगदान दें। नीति आयोग की प्रमुख आर्थिक सलाहकार और डब्ल्यूईपी की मिशन निदेशक ने कहाः महिला उद्यमिता को प्रोत्साहित करना भारत के कार्यबल में प्रवेश करने वाली महिलाओं के लिए रोजगार के अवसर सुनिश्चित करने का एक तरीका है। यह समान आर्थिक विकास को गति देने के लिए एक व्यवहार्य रणनीति के रूप में भी काम करता है। महिला उद्यमिता को बढ़ावा देने से 150 से 170 मिलियन लोगों के लिए रोजगार के अवसर पैदा हो सकते हैं और साथ ही इससे श्रम बल में महिलाओं

की अधिक भागीदारी को बढ़ावा मिल सकता है। रिपोर्ट उजागर करती है कि कुल स्व- निगरानी आधार में महिलाओं की हिस्सेदारी दिसंबर 2024 में बढ़कर 19.43 प्रतिशत हो गई, जो 2023 में 17.89 प्रतिशत थी। गैर-मेट्रो क्षेत्रों की महिलाएं, मेट्रो क्षेत्रों की तुलना में, अपने ऋण की सक्रिय रूप से स्वयं निगरानी कर रही हैं, गैर-मेट्रो क्षेत्रों में 48 प्रतिशत और मेट्रो क्षेत्रों में 30 प्रतिशत की वृद्धि हुई है।2024 में,महाराष्ट्र, तमिलनाडु कर्नाटक, उत्तर प्रदेश और तेलंगाना में सभी स्व-निगरानी महिलाओं का 49 प्रतिशत हिस्सा होगा, जिसमें दक्षिणी क्षेत्र 10.2 मिलियन के साथ सबसे आगे है। राजस्थान, उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश सहित उत्तरी और मध्य राज्यों में पिछले पांच वर्षों में सक्रिय महिला उधार कर्ताओं में सबसे अधिक चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर (सीएजीआर) देखी गई। 2019 से, व्यवसाय ऋण उत्पत्ति में महिलाओं की हिस्सेदारी में 14 प्रतिशत की वृद्धि हुई है और गोल्ड लोन में उनकी हिस्सेदारी 6 प्रतिशत बढ़ी है,दिसंबर 2024 तक व्यवसाय उधारकर्ताओं में महिलाओं की हिस्सेदारी 35 प्रतिशत थी। हालांकि, ऋण से बचने, खराब बैंकिंग अनुभव, ऋण तत्परता में बाधाएं और कलैटरल और गारंटर के साथ समस्याएं जैसी चुनौतियां बनी हुई हैं। बढ़ती ऋण जागरूकता और बेहतर स्कोर के साथ, वित्तीय संस्थानों के पास महिलाओं की अनूठी आवश्यकताओं के अनुरूप जैंडर-स्मार्ट वित्तीय उत्पाद पेश करने का अवसर है।

साथियों बात अगर हम किसी राष्ट्र की प्रगति के अच्छे मापदंडों में से एक महिलाओं की प्रतिभा समर्पण उत्साह की करें तो, एक महान बुद्धि और शक्ति वाले बुद्धिमान व्यक्ति ने एक बार कहा था, ₹किसी राष्ट्र की प्रगति का सबसे अच्छा मापदंड यह है कि वह अपनी महिलाओं के साथ कैसा व्यवहार करता है। सदियों से, महिलाओं ने चुनौतियों और बाधाओं का सामना किया है और इसने उन्हें असीम धैर्य, दृढ़ता प्रदान की है और उन्हें और अधिक मजबूत बनने में मदद की है।पिछले कुछ दशकों में, महिला कामकाजी पेशेवरों ने अपनी प्रतिभा, समर्पण और उत्साह के साथ कड़ी मेहनत की है। वे भारत की आर्थिक वृद्धि और समृद्धि में बहुत बड़ा योगदान देती हैं।ग्रामीण भारत में भी, महिलाएँ हर रोज़ नई उपलब्धियाँ हासिल कर रही हैं। सामाजिक और पारिवारिक बहिष्कार के बावजूद, महिलाओं ने वित्तीय स्वतंत्रता के अपने अधिकार का दावा किया है, शून्य से व्यवसाय खड़ा किया है और अपने आस-पास के लोगों को प्रेरित किया है। पंचायत प्रणाली में महिलाओं को 50 पेर्सेंट आरक्षण दिया जाता है, जबकि 'राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन' जैसे कई राष्ट्रीय कार्यक्रम उन्हें जमीनी स्तर पर नेतृत्व के अवसर प्रदान कर रहे हैं। 'स्वच्छ भारत मिशन' और 'महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम जैसी सरकारी पहलों ने महिला कार्यबल को पर्यवेक्षी नौकरी के अवसर प्रदान किए हैं।आज, भारत दुनिया में स्टार्टअप के मामले में तीसरा सबसे बड़ा पारिस्थितिकी तंत्र है और साथ ही, यूनिकॉर्न समुदाय में भी तीसरा सबसे बड़ा है। हालाँकि, उनमें से केवल 10 पेर्सेंट का नेतृत्व महिला संस्थापकों द्वारा किया गया है। समय की मांग है कि महिला उद्यमियों के लिए मानसिक और वित्तीय रूप से अधिक समर्थन जुटाया जाए और उन्हें अपनी यात्रा शुरू करने में मदद की जाए। सौभाग्य से, पिछले कुछ वर्षों में महिलाओं के व्यवसायिक नेता बनने और कंपनियों की स्थापना करने की पूरी प्रक्रिया में एक बड़ा बदलाव देखा गया है।

साथियों बात अगर हम रिपोर्टिंग के कुछ महत्वपूर्ण अंशो की करें तो,रिपोर्ट उजागर करती है कि,रिपोर्ट बताती है कि भारतीय महिलाएं तेजी से कर्ज ले रही हैं और वित्तीय स्वतंत्रता की ओर बढ़ रही हैं,हालांकि, व्यावसायिक उद्देश्यों के लिए कर्ज लेने की प्रवृत्ति अभी भी कम है. सरकार और वित्तीय संस्थानों द्वारा महिलाओं के लिए बेहतर वित्तीय उत्पाद और नीति समर्थन देने से यह रुझान और तेज हो सकता है।रिपोर्ट के अनुसार, भारत में 27 मिलियन महिला उधारकर्ता दिसंबर 2024 में अपने ऋण की सक्रिय रूप से निगरानी कर रही थीं, जो कि दिसंबर 2023 में ऐसा करने वाली लगभग 19 मिलियन महिलाओं की तुलना में 42 पेर्सेंट अधिक है। यह दर्शाता है कि महिला उधारकर्ता वित्तीय सशक्तिकरण की आधारशिला के रूप में क्रेडिट हेल्थ के महत्व को तेजी से पहचान रही हैं।युवा महिलाएं लोन निगरानी में आगे हैंजैसे-जैसे अधिक महिलाएं कार्यबल से जुड़ रही है या उद्यमी बन रही हैं, औपचारिक ऋण तक पहुँच उन्हें अपने करियर को आगे बढ़ाने या अपने बिजनेस आगे बढ़ाने का मार्ग प्रदान करती है। इसके अतिरिक्त, अपने ऋण की निगरानी करने से महिला उधारकर्ताओं को अपने फिनांशियल हेल्थ बनाए रखने, बेहतर ऋण शर्तों को सुरक्षित करने और पहचान की चोरी से बचाने में मदद मिलती है। उधारकर्ता अपनी क्रेडिट स्थिति के बारे में सतर्क रहकर बेहतर वित्तीय निर्णय ले सकते हैं।रिपोर्ट में यह भी बताया गया है कि कुल स्व-निगरानी आधार में महिलाओं की हिस्सेदारी दिसंबर 2024 में बढ़कर 19.43 पेर्सेंट हो गई, जो दिसंबर 2023 में 17.89 पेर्सेंट थी।रिपोर्ट के निष्कर्षों पर बोलते हुए, एमएससी के प्रबंध निदेशक मनोज कुमार शर्मा ने कहाः निष्कर्ष चौंकाने वाले हैं। 2019 से ऋण चाहने वाली महिलाओं की संख्या 22 पेर्सेंट की सीएजीआर से बढ़ी है, जिसमें 60 पेर्सेंट उधारकर्ता अर्ध-शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों से आते हैं। यह मेट्रो शहरों से परे एक गहरी वित्तीय छाप को रेखांकित करता है। इसके अलावा, युवा जेन जेड महिलाएं ऋण निगरानी में अग्रणी हैं, इस समूह में संख्या में साल-दर-साल 56 पेर्सेंट की वृद्धि हुई है, जिससे 2024 में स्व-निगरानी करने वाली महिला आबादी में उनकी हिस्सेदारी 22 पेर्सेंट हो गई है। मिलेनियल3 महिलाओं की संख्या में 38 पेर्सेंट साल दर साल वृद्धि देखी गई, जिससे उसी अवधि के लिए स्व-निगरानी करने वाली महिला आबादी में उनकी हिस्सेदारी 52 पेर्सेंट हो गई।यहां तक कि कुल स्व-निगरानी आबादी के भीतर भी, दिसंबर 2024 में जेन जेड महिला उधारकर्ताओं की हिस्सेदारी दिसंबर 2023 में 24.9 पेर्सेंट से बढ़कर 27.1 पेर्सेंट हो गई। इन मेट्रिक्स में वृद्धि वित्तीय जागरूकता के उच्च स्तर और वित्तीय स्वतंत्रता प्राप्त करने की दिशा में क्रेडिट प्रबंधन उपकरणों की व्यापक स्वीकृति को इंगित करती है।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि नीति आयोग की रिपोर्ट 2025 जारी-उधारकर्ताओं से निर्माणकर्ताओं तकः भारत के वित्तीय विकास की कहानी में महिलाओं की विशेष भूमिका।महिलाओं में वित्तीय जागरूकता पिछले वर्ष की तुलना में 42 पर्सेंट बढ़ी।भारत की आर्थिक वृद्धि व प्रगति में महिला कामकाजी पेशेवरों की प्रतिभा समर्पण उत्साह मेहनत का सराहनीय योगदान है।

# भारत में इन 2 शहरों में टेस्ला खोलेगी सबसे पहले शोरूम

## किराया जान उड़ जाएंगे होश, पहले शोरूम के लिए जगह भी कंफर्म

परिवहन विशेष न्यूज

दुनिया के सबसे अमीर आदमी Elon Musk की इलेक्ट्रिक कंपनी Tesla जल्द ही भारत में एंट्री मारने वाली है। कंपनी ने अपनी गाड़ियों के लिए शोरूम भी तलाशना शुरू भी कर दिया है। इतना ही नहीं पहले शोरूम के लिए जगह भी कंफर्म कर ली है और अब दूसरे शोरूम के लिए जगह तलाश कर रही है। आइए जानते हैं कि Tesla के शोरूम सबसे पहले कहां खुलेंगे।

**नई दिल्ली।** इलेक्ट्रिक कार कंपनी Tesla जल्द ही भारत में एंट्री मारने वाली है। इसके शोरूम खोलने को लेकर कंपनी काफी तेजी से काम कर रही है। भारत में शोरूम खोलने की तेजी दुनिया के सबसे अमीर व्यक्ति एलन मस्क और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की USA में हुई मुलाकात के बाद से बढ़ गई है। कंपनी ने अपना पहला शोरूम खोलने के लिए जगह भी फाइन कर ली है। आइए जानते हैं कि भारत में इलेक्ट्रिक कार कंपनी Tesla किन दो शहरों में सबसे पहले अपना शोरूम खोलेगी और इसका किराया कितना होने वाला है।

**मुंबई और दिल्ली में खुलेगा पहला शोरूम**

Tesla भारत में सबसे पहले अपना शोरूम मुंबई में खोलेगी। मुंबई में टेस्ला ने जगह भी तलाश कर ली है। टेस्ला का पहला शोरूम मुंबई के पॉश इलाके बांद्रा कुर्ला कॉम्प्लेक्स (BKC) में खोला जाएगा। इसके लिए कंपनी ने BKC में टेस्ला शोरूम एक कमर्शियल टावर के ग्राउंड फ्लोर पर 4 हजार वर्ग फीट एरिया में बनाया जाएगा। टाइम्स ऑफ इंडिया की एक रिपोर्ट के अनुसार, टेस्ला ने BKC में अपने शोरूम के लिए सबसे ज्यादा किराया दे रही है। कंपनी ने बीकेसी में जितना बड़ा शोरूम किराये पर लिया है उसका किराया करीब 35 लाख रुपये प्रति महीना है। इसी तरह से कंपनी दिल्ली में भी अपनी गाड़ियों के लिए शोरूम की तलाश कर रही है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, टेस्ला, दिल्ली में अपना दूसरा शोरूम के लिए जगह की डील फाइनल करने के लिए आखिरी स्टेज पर है।

**भारत में टेस्ला का प्लान**

इलेक्ट्रिक कार बनाने वाली कंपनी टेस्ला टॉप-डाउन-अप्रोच के साथ भारतीय बाजार में एंट्री मारने की तैयारी कर रही है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, कंपनी का प्लान भारत में सबसे पहले अपनी महंगी गाड़ियों को लॉन्च करना है। उसके बाद कंपनी देश में अपने सस्ते मॉडल को लेकर आएगी। जिस तरह से कंपनी ने मुंबई में शोरूम के लिए जगह पक्की कर ली है उसे देखते हुए कहा जा सकता है कि टेस्ला की गाड़ियों की पहली खेप मुंबई के बंदरगाह पर उतारा जा सकता है। इनकी बिक्री को लेकर जानकारी है कि इसे साल के त्योहारी सीजन में भारत में लॉन्च किया जा सकता है।

**दुनिया में टेस्ला का हाल**

भारतीय बाजार के जरिए इलेक्ट्रिक कार कंपनी टेस्ला दुनिया की सबसे बड़े बाजार में जगह बनाना चाहती है। दरअसल, हाल में टेस्ला को दुनिया भर में कई तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है, क्योंकि चीनी कंपनियां टेस्ला को कड़ी टक्कर दे रही है। वहीं, ग्लोबल बाजार में ईवी की कम बिक्री भी टेस्ला के बिजनेस को प्रभावित कर रही है। यही वजह है कि टेस्ला वापस ईवी मार्केट में भारत के लिए टॉप पर आना चाहती है।

# भारत में लॉन्च हुई 2025 वॉल्वो XC90, जानें करोड़ों की कार के फीचर्स और खूबियां

परिवहन विशेष न्यूज

वॉल्वो ने अपनी लग्जरी एसयूवी 2025 Volvo XC90 को भारत में लॉन्च कर दिया है। इस बार XC90 को एकदम नए डिजाइन और बेहतर टेक्नोलॉजी के साथ उतारा गया है।

वॉल्वो ने अपनी लग्जरी एसयूवी 2025 Volvo XC90 को भारत में लॉन्च कर दिया है। इस एसयूवी की शुरुआती एक्स-शोरूम कीमत करीब 1 करोड़ रुपये रखी गई है। अंतरराष्ट्रीय बाजार में लॉन्च होने के एक साल बाद अब यह भारत में आई है। इस बार XC90 को एकदम नए डिजाइन और बेहतर टेक्नोलॉजी के साथ उतारा गया है। साथ ही, इसमें नया 2.0-लीटर 'मिलर इंजन' भी दिया गया है, जो इसे पहले से ज्यादा दमदार बनाता है।

**2025 Volvo XC90: इंजन और परफॉर्मेंस**

भारत में लॉन्च होने वाली XC90 अब माइल्ड हाइब्रिड 'मिलर इंजन' के साथ आती है। यह B5 इंजन ऑल-व्हील ड्राइव सिस्टम से लैस है और 8-स्पीड ऑटोमैटिक गियरबॉक्स के जरिए पावर ट्रांसफर करता है। एसयूवी में 2.0-लीटर, चार-सिलेंडर इंजन दिया गया है, जो 246.5 बीएचपी की पावर और 360 एनएम का टॉर्क जनरेट करता है। इस माइल्ड हाइब्रिड इंजन को 48-वोल्ट इलेक्ट्रिक मोटर से जोड़ा गया है, जिससे यह ज्यादा एफिशिएंट बनती है।

**2025 Volvo XC90: क्या है साइज**

एसयूवी की ग्राउंड क्लीयरेंस 238 मिमी है, लेकिन एयर सस्पेंशन के साथ यह 267 मिमी तक बढ़ जाती है। इसकी लंबाई 4,953 मिमी, चौड़ाई 1,931 मिमी और ऊंचाई 1,773 मिमी है। साइड मिरर के साथ इसकी कुल चौड़ाई 2,140 मिमी है, और व्हीलबेस 2,984 मिमी दिया गया है।

**2025 Volvo XC90: दमदार लुक और एक्सटीरियर**

नई XC90 में कई बदलाव किए गए हैं, जिससे यह पहले से ज्यादा आकर्षक दिखती है। इसका फ्रंट ग्रिल अब नए डिजाइन के साथ आता है, जिसमें डायगोनल स्लैट्स दिए गए हैं। LED DRLs अब भी थॉर के हथौड़े जैसी डिजाइन में आते हैं, लेकिन इनमें कुछ छोटे बदलाव किए गए हैं। साथ ही, फ्रंट बम्पर को ज्यादा एयर वेंट्स के साथ अपडेट किया गया है।

एसयूवी के लुक को और बेहतर बनाने के लिए नए अलॉय व्हील्स और LED टेललाइट्स भी दिए गए हैं। इस बार XC90 को कुल छह कलर ऑप्शन में पेश किया गया है, जिसमें एक नया शेड 'मलबेरी रेड' भी शामिल है।

**2025 Volvo XC90: लग्जरी से भरपूर इंटीरियर**

XC90 के केबिन में भी कई अपडेट किए गए हैं, जिससे यह पहले से ज्यादा मॉडर्न और कम्फर्टेबल हो गई है। इसमें अब 11.2-इंच का नया इंफोटेनमेंट डिस्प्ले दिया गया है, जो पहले के 9-इंच स्क्रीन को रिप्लेस करता है। यह स्क्रीन AC वेंट्स के बीच और HVAC पैनल के ऊपर फिट की गई है, जिससे इसका इस्तेमाल आसान हो जाता है।

वॉल्वो ने एसयूवी की राइड क्वालिटी को भी बेहतर बनाया है। इसमें फ्रिक्वेंसी सेलेक्टिव डैम्पिंग टेक्नोलॉजी, बेहतर साउंड इंसुलेशन और ज्यादा स्टोरेज ऑप्शन जोड़े गए हैं। इसके इंटीरियर में ब्लॉन्ड हेडलाइनिंग, ग्रे ऐश डेकोर, चारकोल में तैयार किया गया स्टीयरिंग व्हील, क्रिस्टल गियर शिफ्ट, नप्पा लेदर अपहोल्स्ट्री, एक्सक्लूसिव टेक्सटाइल फ्लोर मैट्स और इलुमिनेटेड सिल मोल्डिंग्स जैसे लग्जरी एलिमेंट्स दिए गए हैं।

# कैसे तय होती है किसी कार की आईडीवी वैल्यू, यहां जानिए आसान शब्दों में सबकुछ

परिवहन विशेष न्यूज

कार का बीमा लेने के दौरान या नई कार खरीदने के दौरान आपने जरूर IDV के बारे में सुना होगा। हम यहां पर आपको बता रहे हैं कि IDV (Insured Declared Value) क्या होता है। यह किसी कार के लिए कैसे तय किया जाता है और इसका कार के बीमा पर किस तरह से असर डालता है।

**नई दिल्ली।** अगर आपने हाल ही में कार की बीमा खरीदी हो या फिर नई कार खरीदने की प्लानिंग कर रहे हैं, तो आपने IDV (Insured Declared Value) शब्द को सुना होगा। यह वो वैल्यू होती है, जिस पर आपकी कार की बीमा तय होती है, लेकिन क्या आपको पता है कि IDV कैसे तय की जाती है और इसका आपकी कार के बीमा पर क्या असर पड़ता है? अगर आपको नहीं पता तो कोई बात नहीं, हम यहां पर आपको आसान भाषा में बता रहे हैं कि इसे कैसे तय किया जाता है।

**IDV क्या है?**

आइए सबसे पहले जान लेते हैं कि IDV यानी Insured Declared Value क्या होती है। यह आपकी कार की बीमित राशि होती है। इसे आप एक तरह से आपकी कार की बाजार मूल्य भी मान सकते हैं। जब आप अपनी कार के लिए बीमा खरीदते हैं, तो बीमाधारक यानी आप बीमा कंपनी को एक निश्चित राशि को बताते हैं, जो आपकी कार का अनुमानित बाजार मूल्य होता है। इस राशि को ही IDV कहा जाता है। इसे आप इस तरह से भी समझ सकते हैं कि IDV वह रकम होती है, जिसे बीमा कंपनी आपकी कार को होने वाले नुकसान या चोरी होने पर आपको चुकाती है।

**IDV कैसे तय होती है?**

आपकी कार का मॉडल क्या है और उसे बनाया कब गया है, इसकी सीधा असर कार की IDV (IDV calculation) पर पड़ता है। नए मॉडल की कार का IDV ज्यादा और पुरानी कार के मॉडल का IDV कम होगा।

यह कार की उम्र पर भी निर्भर करती है। अगर आपकी कार 5 साल पुरानी है, तो उसका मूल्य और बीमित राशि भी कम हो जाएगी।

कार की ऑन रोड कीमत भी IDV तय करने में भूमिका निभाती है। अगर आप नई कार खरीदते हैं, तो उसका IDV मूल्य खरीदी गई कार के मूल्य के बराबर होगा।

अगर आपकी कार का किसी तरह का डेंट या फिर खराबी आ जाती है, जो बीमा कंपनी इस स्थिति में आपकी कार का IDV कर सकते हैं।

अगर आपने अपनी कार में किसी तरह की एक्सेसरीज जैसे- साउंड सिस्टम, टायर्स, अलॉय व्हील्स को लगवाया है, तो उसकी कीमत को IDV में जोड़ा जा सकता है।

**IDV और बीमित राशि में अंतर**

आपके कार का IDV मूल्य, बीमित राशि (car insurance value) से अलग होता है। बीमा की राशि वह होती है, तो बीमा पॉलिसी के तहत आपको नुकसान की स्थिति में दी जाती है। हालांकि, IDV बीमा पॉलिसी की शुरुआत में तय की जाती है और यह आपकी कार के वास्तविक बाजार मूल्य को प्रतिनिधित्व करता है।

**IDV का महत्व**

आपकी कार के लिए IDV मूल्य का महत्व बहुत होता है। खासकर उस स्थिति के लिए जब आपकी कार में कोई बड़ा नुकसान या चोरी हो जाए। अगर आपकी कार का IDV मूल्य सही तय किया गया हो, तो आपको उसी आधार पर मुआवजा दिया जाता है। वहीं, अगर IDV मूल्य कम तय होगा, तो बीमा के लिए दावा करते समय आपको उतनी ही कम राशि मिलेगी, जितनी आपकी कार की सही कीमत हो सकती है।

कैसे बढ़ा सकते हैं IDV?

आप अपनी कार की IDV मूल्य को बढ़ाने के लिए कुछ उपाय कर सकते हैं, जो निम्नलिखित है।

आपको अपनी कार की स्थिति का ध्यान रखना चाहिए।

बीमा पॉलिसी को समय-समय पर रिन्यू करवाते रहें।

# भारत में लॉन्च होने जा रही नई टाइगुन, पुरानी से कितनी दिखेगी अलग

परिवहन विशेष न्यूज

जर्मन ऑटोमेकर Volkswagen अप्रैल-जून 2025 में नई Tiguan को लॉन्च करने जा रही है। भारत में पहली बार इसका स्पोर्टी R-Line वर्जन लॉन्च होने जा रहा है। कंपनी इसके नए जनरेशन को भारत में लाने जा रही है। इसके साथ ही कंपनी इसके डिजाइन में भी बदलाव किया है। आइए जानते हैं कि Volkswagen Tiguan 2025 पुराने मॉडल की तुलना में कितना अलग दिखाई देगी।

**नई दिल्ली।** जर्मन ऑटोमेकर Volkswagen ने हाल ही में एलान किया है कि वह नई जनरेशन की Volkswagen Tiguan को अप्रैल-जून 2025 के बीच लॉन्च करने वाली है। कंपनी ने पहली बार भारत में स्पोर्टी R-Line वर्जन को लॉन्च करने जा रही है। R-Line वर्जन पुराने मॉडल की तुलना में बेहतर डिजाइन और कॉस्मेटिक बदलाव के साथ एंट्री मारने वाली है। जिसे देखते हुए हम यहां पर आपको नई Volkswagen Tiguan और नई का डिजाइन (Volkswagen SUV Comparison) की तुलना करते हुए बता रहे हैं कि यह कार कितनी बदलने वाली है।

**डिजाइन**

Volkswagen शुरू से ही अपने डिजाइन के लिए जानी जाती है, जो सरल होने के साथ ही अट्रैक्टिव होती है। जिसकी वजह से इसका डिजाइन हर उम्र और वर्ग के लोगों को पसंद आता है। पुराने मॉडल में Volkswagen ने इसके स्पोर्टी टच और ब्लैक-आउट एलिमेंट्स दिया गया था, लेकिन इसके R-Line में नए बदलाव किए गए हैं, जो इसके स्पोर्टी लुक और भी अट्रैक्टिव (New vs Old Tiguan) बना देते हैं।

**फ्रंट डिजाइन**

इसके फ्रंट की बात करें तो दोनों ही मॉडल में Volkswagen की स्पेशल और मिनिमलिस्टिक डिजाइन दिया गया है, लेकिन पुराने मॉडल के ग्रिल में कई होरिजेंटल क्रोम एलिमेंट्स दिए गए हैं, जो इसे क्लासिक बनाते हैं। नई जनरेशन की Tiguan R-Line में ग्रिल बहुत ही साफ दी गई है, जो इसे ज्यादा स्लीक और अट्रैक्टिव बनाते हैं।

नई Tiguan R-Line में स्लिम LED हेडलाइट्स दी गई है, जो इसे ज्यादा अट्रैक्टिव और मॉडर्न दिखाते हैं। इसके अलावा, नए मॉडल में फ्रंट बम्पर आक्रामक और ग्रिल पर R बैजिंग दी गई है, जो इसे स्पोर्टी लुक देता है।

**साइड प्रोफाइल**

पुरानी और नई पीढ़ी के Volkswagen Tiguan 2025 की साइड प्रोफाइल में काफी बदलाव देखने के लिए मिला है। पुराने मॉडल का डिजाइन सीधा और सामान्य है, जबकि नई जनरेशन के मॉडल में ज्यादा डाइनमिक और आधुनिक सिल्हूट दिए गए हैं।

नए मॉडल में विंडो लाइन ऊपर की तरफ जाती है, जिससे इसे पहले से ज्यादा स्पोर्टी और अट्रैक्टिव लुक मिलता है। इसके अलावा, नई मॉडल में चौड़े व्हील आर्चेज भी दिए गए है, जिससे इसे मस्कुलर लुक मिलता है।

नए मॉडल में एलॉय व्हील्स नए डिजाइन के और बड़े दिए गए हैं, जो पुराने के मुकाबले ज्यादा प्रीमियम और स्पोर्टी दिखते हैं। पुराने Tiguan में मिलने वाले साइड स्टेप को नए मॉडल से हटा दिया गया है, जिससे ये और साइनिंग और स्पोर्टी लगती है।

**रियर डिजाइन**

इसके रियर डिजाइन में काफी बदलाव किया गया है। पुराने Tiguan में जो LED टेल लाइट्स मिलती थी उसे बदल दिया गया है। नए Tiguan R-Line में स्लिम और कनेक्टेड टेल लाइट्स दी गई है, जिससे यह मॉडर्न और आकर्षक दिखती है।

इसके बंपर के डिजाइन को बदला गया है। पुराने मॉडल में मिलने वाले क्रोम एलिमेंट्स को हटाकर उसकी जगह पर ब्लैक-आउट स्टाइलिंग एलिमेंट्स दिए गए है। इसके दोनों ही मॉडल में शार्क फिन एंटीना और रूफ-माउंटेड स्पॉयलर को बरकरार रखा गया है।

# होण्डा की कारों में लोगों को पसंद आया बेहतरीन सेफ्टी फीचर, धड़ाधड़ खरीद ली 50 हजार कारें

परिवहन विशेष न्यूज

जापानी वाहन निर्माता Honda की ओर से भारतीय बाजार में सेडान और एसयूवी सेगमेंट के वाहनों की बिक्री की जाती है। कंपनी की ओर से हाल में ही नया कीर्तिमान बनाया गया है। सुरक्षा के मामले में किस तरह का कीर्तिमान बनाया है। किस तरह के सेफ्टी फीचर्स को कंपनी की ओर से अपनी कारों में दिया जाता है। आइए जानते हैं।

**नई दिल्ली।** देश में बड़ी संख्या में सड़क हादसे होते हैं, जिनमें लाखों लोगों की मौत हो जाती है। सड़कों पर हादसे कम करने के लिए वाहन निर्माताओं की ओर से कई सेफ्टी फीचर्स को ऑफर किया जाता है। जापानी वाहन निर्माता Honda Cars ने भी सेफ्टी फीचर से जुड़ी नई उपलब्धि को हासिल किया है। किस तरह की उपलब्धि कंपनी ने हासिल (Honda Cars Achieves Milestone 2025) की है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

**हासिल की नई उपलब्धि**

भारत में हर महीने लाखों की संख्या में सड़क हादसे होते हैं। जिनमें कई लोगों की मौत हो जाती है और कई लोग घायल हो जाते हैं। जिसे देखते हुए वाहन निर्माताओं की ओर से कई सेफ्टी फीचर्स को अपनी कारों में दिया जाता है। ऐसे ही जापान की वाहन निर्माता Honda Cars की ओर से भी कई सेफ्टी फीचर्स को अपनी कारों मे दिया जाता है। जिससे हादसा होने का खतरा कम हो जाता है। कंपनी ने हाल में ही नई उपलब्धि को हासिल किया है।

**ADAS के साथ कारों की बिक्री की उपलब्धि हुई हासिल**

कंपनी की ओर से दी गई जानकारी के मुताबिक सेफ्टी फीचर के तौर पर ऑफर किए जाने वाले ADAS के साथ कंपनी की अब तक 50 हजार कारों को खरीदा (Honda 50,000 car sales India) जा चुका है।

**किन कारों में इस सेफ्टी फीचर को किया जाता है ऑफर**

कंपनी की ओर से भारतीय बाजार में तीन कारों की बिक्री की जाती है। इनमें कॉम्पैक्ट सेडान कार के तौर पर Honda Amaze की बिक्री की जाती है। इसके बाद मिड साइज सेडान कार सेगमेंट में Honda City की बिक्री की जाती है और मिड साइज एसयूवी सेगमेंट में होंडा की ओर से Elevate को लाया जाता है। इन तीनों की कारों में कंपनी की ओर से Honda Sense नाम से ADAS (Advanced driver assistance system) जैसे बेहतरीन सेफ्टी फीचर (Honda ADAS cars) को दिया जाता है।

**इस फीचर के साथ किस कार की सबसे ज्यादा मांग**

होंडा की ओर से दी गई जानकारी के मुताबिक कंपनी की ओर से ADAS से लैस जिन यूनिट्स की बिक्री की जाती है उनमें सबसे ज्यादा मांग Honda City की होती है। इसके बाद Elevate को इस सेफ्टी फीचर के साथ खरीदा जाता है और उसके बाद हाल में ही लॉन्च की गई Amaze को पसंद किया जाता है।

**कंपनी के अधिकारियों ने कही यह बात**

होंडा कार इंडिया में मार्केटिंग और सेल्स के उपाध्यक्ष कुणाल बहल ने कहा कि भारतीय सड़कों पर 50,000 ADAS-सक्षम वाहनों की उपलब्धि हासिल करना सभी के लिए सुरक्षा बढ़ाने के लिए हमारी अटूट प्रतिबद्धता को दर्शाता है। यह उपलब्धि न केवल हमारे वैश्विक सुरक्षा दृष्टिकोण के अनुरूप है, बल्कि उन्नत ड्राइवर सहायता तकनीकों के लिए भारतीय उपभोक्ताओं की बढ़ती प्राथमिकता और स्वीकृति को भी दर्शाती है। हर दिन, हम सक्रिय और निष्क्रिय सुरक्षा सुविधाओं में लगातार सुधार करके अपने वाहनों को सुरक्षित बनाने के लिए काम कर रहे हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि हम सभी के लिए एक सुरक्षित ड्राइविंग अनुभव प्रदान करें।

**मिलते हैं ये सेफ्टी फीचर्स**

कंपनी की ओर से अपनी कारों में कई बेहतरीन सेफ्टी फीचर्स को दिया जाता है। इनमें छह एयरबैग, एबीएस, ईबीडी, हिल असिस्ट, पार्किंग सेंसर, लेन वॉच कैमरा, ईएसएस, वीएसए, ऑटो डिमिंग इनसाइड रियर व्यू मिरर, आइसोफिक्स चाइल्ड एंकरेज जैसे कई सेफ्टी फीचर्स को तीनों कारों में ऑफर किया जाता है।

# सर्दियां सिकुड़ क्यों रही हैं हैं

विजय गर्ग

अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, गोरखपुर के चिकित्सा विशेषज्ञों ने अप्रैल से लेकर अगस्त 2024 के बीच आए इन मरीजों के डाटा का गहराई से अध्ययन किया। मालूम पड़ा कि अप्रैल से अगस्त के बीच 39 दिन तापमान 40 डिग्री से अधिक था, जो सामान्य से कहीं ज्यादा है। एम्स के ये आंकड़े बताते हैं कि 2021 में गोरखपुर और उसके आसपास के इलाके में 40 डिग्री या उससे अधिक तापमान वाले महज छह दिन थे। तीन साल में छह गुना से अधिक यह बढ़ोतरी क्या कहती है ? यह सवाल तब और काबिलेगौर हो उठता है, जब हम उन भविष्यवाणियों पर नजर डालते हैं। उनके अनुसार यह वर्ष पिछले से कहीं अधिक गर्म हो सकता है।

क्या आपको भी सर्दियां सिकुड़ती और उनकी जगह गर्म दिन पसरते नजर आने लगे हैं? यह मौसम की दगाबाजी है या कुदरत पर इनसानी कहर का नतीजा ? इसका हमारे जीवन पर क्या असर पड़ रहा है, यह जानना जरूरी है।

गोरखपुर, एम्स के चिकित्सक अचंभित हैं। उनके यहां 'हाइड्रोओ वैक्सीनफॉर्म' के मरीजों की संख्या बढ़ती जा रही है। यह दुर्लभ त्वचा रोग अति तीखी धूप के संपर्क में आने से होता है आम तौर पर इसके मरीज रेगिस्तानी इलाकों में मिलते हैं। गोरखपुर और उसके आसपास का इलाका तराई जैसा है। राजस्थान के मुकाबले वहां धूप और शुष्कता कम रहती है। मतलब साफ है धूप की प्रखरता इतनी बढ़ चली है कि मनुष्य की चमड़ी उसे सह नहीं पा रही।

अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, गोरखपुर के चिकित्सा विशेषज्ञों ने अप्रैल से लेकर अगस्त 2024 के बीच आए इन मरीजों के डाटा का गहराई से अध्ययन किया। मालूम पड़ा कि अप्रैल से अगस्त के बीच 39 दिन तापमान 40 डिग्री से अधिक था, जो सामान्य से कहीं ज्यादा है। एम्स के ये आंकड़े बताते हैं कि 2021 में गोरखपुर और उसके आसपास के इलाके में 40 डिग्री या उससे अधिक तापमान वाले महज छह दिन थे। तीन साल में छह गुना से अधिक यह बढ़ोतरी क्या कहती है ? यह सवाल तब और काबिलेगौर हो उठता है, जब हम उन भविष्यवाणियों पर नजर डालते हैं। उनके अनुसार यह वर्ष पिछले से कहीं अधिक गर्म हो सकता है। पूर्वांचल का यह इलाका अकेला मौसम का मारा नहीं है। एक अन्य शोध में पाया गया है कि भारत में 'सीजनल अफेक्टिव डिसॉर्डर' के मरीजों की आमद अब फरवरी से ही शुरू हो गई है। कुछ साल पहले ऐसे रोगी मई-जून में डॉक्टरों का दरवाजा खटखटाते थे। मैं यहां आपसे नई दिल्ली की एक बेहद चिंताजनक रिपोर्ट पर बात करना चाहूंगा। वहां के चिकित्सकों के अनुसार, 40 से अधिक बच्चे एक दुर्लभ बीमारी 'जेरोडर्मा पिगमेंटोसा' से पीड़ित हैं। यह इतना खतरनाक रोग है कि अगर धूप की महज एक किरण उनके शरीर पर पड़ जाए, तो उन्हें कैंसर हो सकता है। इन बच्चों को सिर से पांव तक ढककर रखा जाता है। वे रात में ही घर से बाहर कदम रख पाते हैं। नई उमर की नई फसल के लिए इससे घातक क्या हो सकता है ?

इस गर्म होते वातावरण में मच्छर जनित बीमारियां भी नए रिकॉर्ड रच रही हैं। रिपोर्ट बताती है कि पिछले 60 वर्षों में डेंगू फैलाने वाले मच्छर के संक्रमण में 43.3 फीसदी की बढ़ोतरी हुई है। वर्ष 2023 में तो डेंगू के मामलों ने नया विश्व रिकॉर्ड

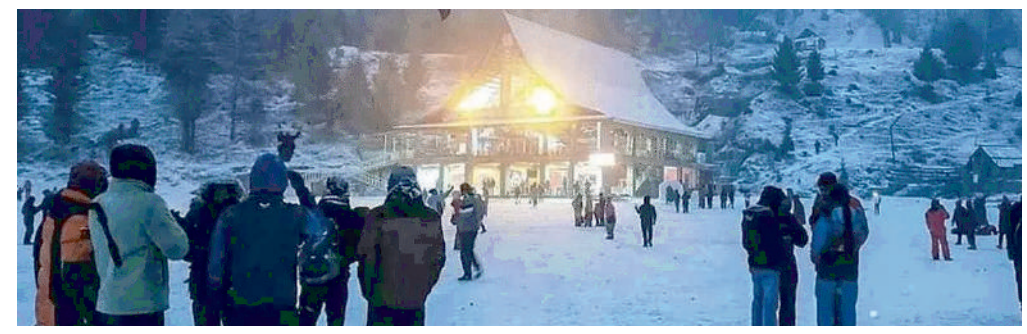

बनाया। इस वर्ष पचास लाख से अधिक लोग मच्छरों के मारे अस्पतालों तक पहुंचे।

गर्मी किस तरह जानलेवा हो गई है, यह जानने के लिए 'ग्लोबल क्लाइमेट ऐंड हेल्थ एलाएन्स' की कार्यकारी निदेशक जेनी मिलर के इस बयान पर गौर फरमाएं। मिलर ने पिछले वर्ष कहा था कि अत्यधिक गर्मी के कारण सिर्फ भारत में हीट स्ट्रोक के 40,000 से भी अधिक मामले सामने आए। इनमें से 700 लोगों ने दम तोड़ दिया। लैंसेट काउंटडाउन से जुड़े विशेषज्ञ मानव शरीर पर जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों का भी अध्ययन कर रहे हैं। उन्होंने जिन 15 पहलुओं को अपने शोध का हिस्सा बनाया, उनमें से 10 के हालात चिंताजनक हैं।

तय है, आने वाले दिन तमाम अशगुनी गाथाओं में डूबते- उतराते नजर आ सकते हैं।

मौसम के छलियेपन पर मेरा यह अनुभव सुनिए। पिछली 23 दिसंबर को मैं हर्षिल की मनोरम घाटी में था। उस दोपहर हम लोग धूम-धामकर लौटे थे कि ऐसा लगा, जैसे आसमान से रुई के फाहे बरस रहे हों। वह बर्फ थी, जो अगले 10 घंटे तक गिरती चली गई। देखते-देखते सड़कें सफेद चादर से ढक गई और यातायात रोकना पड़ा। उस दिन स्थानीय नागरिक खुशी से उछले पड़ रहे थे। उनका मानना था कि इस साल बर्फ ज्यादा पड़ेगी। वे खुशफहम साबित हुए गुजरता जाड़ा अकल्पनीय तौर पर गर्म साबित हुआ गई 26 जनवरी को नई दिल्ली में तापमान 23.7 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया था, जबकि दिल्ली और उत्तर भारत के मैदानों में ये दिन भयंकर ठंड और कोहरे के होते हैं। राजधानी से हजारों किलोमीटर दूर बेंगलुरु से भी ऐसे ही हैरान करने वाले समाचार प्राप्त हो रहे हैं। इस मनोरम शहर में तापमान फरवरी के महीने में ही 35 डिग्री सेल्सियस को पार कर गया। कई मौसम वैज्ञानिकों का कहना है कि इस बार बेंगलुरु में गर्मी दिल्ली से ज्यादा भी पड़ सकती है। देश की आर्थिक राजधानी मुंबई भी फरवरी में गर्मी से बेजार रही। वहां तापमान 38.7 डिग्री तक पहुंच गया और हवाओं ने गर्मी पकड़ ली।

मौसम की यह मार धरती के सागरों और महासागरों को भी नुकसान पहुंचा रही है। समूची दुनिया में समुद्र का जलस्तर बढ़ रहा है। आशंका है कि मुंबई, कराची, ढाका सहित तमाम शहर कुछ दशकों में अतीत की बात बन सकते हैं। हमें भूलना नहीं चाहिए कि दुनिया की लगभग 10 फीसदी आबादी उच्च ज्वार रेखा से पांच मीटर से भी कम ऊंचाई वाले तटीय क्षेत्रों में रहती है। अगर हालात इसी तरीके से बिगड़े, तो इस सदी के अंत तक 10 करोड़ लोगों को जलावतनी के लिए मजबूर होना पड़ सकता है। कुछ अन्य कारणों से देश छोड़ने के लिए मजबूर लोगों की बढ़ती संख्या ने समूची दुनिया में पहले ही संकट के हालात पैदा कर रखे हैं।

सवाल उठता है, इसका समाधान क्या है?

यह ठीक है कि अब तक किए गए उपाय सिर्फ आंशिक तौर पर सफल हो सके, लेकिन हिम्मत कायम रखने की वजहें भी मौजूद हैं। उत्तर प्रदेश और बिहार के तमाम शहरों में गिरता जलस्तर थम गया है। कई स्थानों पर तो इसमें बढ़ोतरी दर्ज की गई है। यदि इस मामले में आंशिक सफलता मिली है, तो क्यों न हम नए और महत्वाकांक्षी मापदंड स्थापित कर कड़ाई से उनका अनुपालन सुनिश्चित करें? कई देशों ने नदियों को बचाए और बनाए रखने के लिए उनको इंसानी शरीर का दर्जा दिया है। जो लोग उन नदियों को नुकसान पहुंचाते हैं, उनके खिलाफ वही कार्रवाई की जाती है, जो इंसानी देह को क्षति पहुंचाने पर होती है।

हमें हर उस मुद्दे पर ऐसी ही कड़ाई करने की जरूरत है, जो पर्यावरण के लिए क्षतिकारक साबित होते हैं। उम्मीद है, हमारे हुक्मरों और सिविल सोसायटी के लोग इस दिशा में मिलकर गंभीरता से आगे बढ़ेंगे।

**सेवानिवृत्त प्रिंसिपल शैक्षिक स्तंभकार मलोट पंजाब**

## रोट से वंडर तक:

विज्ञान की शिक्षा तथ्यों से जिज्ञासा तक कैसे विकसित हुई विजय गर्ग जबकि विज्ञान था, और अभी भी, एक कैरियर उन्मुख विषय के रूप में देखा जाता है, छात्रों को सिखाया जा रहा है क्यों कुछ हो रहा है या क्यों वे इसका अध्ययन कर रहे है के मामले कभी नहीं थे ।

H2O पानी है। CO2 कार्बन डाइऑक्साइड है। गुरुत्वाकर्षण सब कुछ नीचे खींचता है। दशकों पहले, विज्ञान को अक्सर याद करने के लिए तथ्यों के संग्रह के रूप में सिखाया जाता था - परिभाषाएँ, सूत्र और कठोर कानून जो आश्चर्य के लिए बहुत कम जगह छोड़ देते थे। एक शिक्षक ब्लैकबोर्ड पर समीकरण लिखेगा, जिसे छात्र कॉपी करेंगे, और पाठ आगे बढ़ेगा। लेकिन वर्षों से, विज्ञान सवालों के बारे में अधिक हो गया।

आज, विज्ञान शिक्षा केवल अवधारणाओं को सीखने के बारे में नहीं है, बल्कि उनका अनुभव कर रही है - अन्वेषण और जिज्ञासा की भावना के माध्यम से जो छात्रों को दुनिया को अलग तरह से देखती है। विशेषज्ञों का कहना है कि यह परिवर्तन केवल शिक्षण के बारे में नहीं था, बल्कि विज्ञान को कैसे माना जाता था, इसमें एक मौलिक बदलाव था। सबसे लंबे समय तक, इसे नौकरी हासिल करने के लिए एकदम सही विषय के रूप में देखा गया, उत्साह के बजाय स्थिरता का वादा किया। वरिष्ठ वैज्ञानिकों को याद है कि कई ने मुख्य रूप से कैरियर के अवसरों के लिए विज्ञान की डिग्री हासिल की, बजाय विषय को समझने में वास्तविक रुचि के। लेकिन वर्षों

से, वह मानसिकता बदल गई। विज्ञान जुनून का विषय बन गया, उन लोगों के लिए एक अनुशासन जो रोजगार के लिए सिर्फ एक कदम पत्थर के बजाय सीखना, तलाशना और सिखाना चाहते थे।

गर्ग ने कहा, ₹विज्ञान अब सिर्फ एक विषय नहीं है जो लोग नौकरी पाने के लिए अध्ययन करते हैं - यह जिज्ञासा, सीखने और सिखाने का क्षेत्र बन गया है,₹ वर्षों से, विज्ञान वास्तविक रुचि के क्षेत्र में विकसित हुआ है, जो अपनी अवधारणाओं को समझने के लिए उत्सुक लोगों को आकर्षित करता है।

यहां तक कि जिस तरह से विज्ञान पहुंच के मामले में विकसित हुआ है, वह भी बदल गया है, प्रौद्योगिकी के लिए धन्यवाद, गर्ग ने कहा कि दशकों पहले, शोधकर्ताओं ने अपने पीएच के दौरान वर्षों बिताए। डीएस सीखने क्या अब ऑनलाइन उपलब्ध जानकारी की विशाल राशि के साथ दो महीने से भी कम समय में समझा जा सकता है ।

जबकि विज्ञान था, और अभी भी, एक कैरियर उन्मुख विषय के रूप में देखा जाता है, छात्रों को सिखाया जा रहा है क्यों कुछ हो रहा है या क्यों वे इसका अध्ययन कर रहे है के मामले कभी नहीं थे ।

गर्ग ने कहा कि पिछले एक दशक में, विज्ञान में छात्रों की रुचि स्थानांतरित हो गई है - न केवल एक विषय के रूप में, बल्कि वास्तविक दुनिया के सिद्धांतों और खोजों में निहित एक क्षेत्र के रूप में। यह बढ़ता हुआ आकर्षण काफी हद तक अंतरिक्ष विज्ञान, उपग्रह प्रौद्योगिकी और अन्य वैज्ञानिक सफलताओं में प्रगति से प्रेरित है। ₹बच्चे अपने आसपास की दुनिया के बारे में स्वाभाविक रूप से उत्सुक हैं। जब वे इन घटनाक्रमों के बारे में देखते, पढ़ते और सुनते हैं, तो यह उनके दिमाग पर एक छाप छोड़ता है और अन्वेषण और योगदान करने की इच्छा पैदा करता है

**सेवानिवृत्त प्राचार्य शैक्षिक स्तंभकार गली कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब**

# जलवायु परिवर्तन के कारण 2000 से एशियाई पर्वतीय क्षेत्रों में बाढ़ की घटनाओं में वृद्धि

विजय गर्ग

जलवायु परिवर्तन के कारण वर्ष 2000 से एशिया के उच्च पर्वतीय क्षेत्रों (एचएमए) में बाढ़ की आवृत्ति में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। एक नए अध्ययन के अनुसार यह जानकारी सामने आई है। पर्यावरण विशेषज्ञ सोनम वांगचुक समेत विज्ञानियों की एक टीम द्वारा किए गए अध्ययन में वर्ष 1950 से अब तक आई 1,015 बाढ़ों का विश्लेषण किया गया। वर्ष 1950 से अब तक इस क्षेत्र के औसत तापमान में लगातार वृद्धि देखी गई है, जो प्रति दशक 0.3 डिग्री सेल्सियस की दर से बढ़ रही है। विज्ञानियों ने कहा कि इस बीच वर्षा के पैटर्न में स्थान और समय दोनों के संदर्भ में जटिल तरीके से बदलाव आया है।

उन्होंने कहा कि यह तेजी से बढ़ता तापमान, वर्षा के पैटर्न में बदलाव के साथ मिलकर क्षेत्र के जल चक्र को प्रभावित कर रहा है और बाढ़ के जोखिम को बढ़ा रहा है। शोध लेखकों ने कहा, ₹समय के रुझानों के संदर्भ में वर्ष 2000 के बाद से दर्ज बाढ़ की घटनाओं की आवृत्ति आम तौर पर पहले की अवधि की तुलना में बढ़ी है, जिसमें वर्षा बाढ़ और बर्फ पिघलने से होने वाली बाढ़ में काफी वृद्धि देखी गई है। अंतरराष्ट्रीय एकीकृत पर्वतीय विकास केंद्र (आइसीआइएमओडी) ने एक बयान में कहा कि बाढ़ की आवृत्ति बढ़ी है, लेकिन एक महत्वपूर्ण अतिरिक्त निष्कर्ष बाढ़ के समय में अप्रत्याशितता में वृद्धि हुई है, जबकि अधिकांश घटनाएं मानसून के दौरान होती रहती हैं। इन समयों के बाहर होने वाली बाढ़ की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। एचएमए को 'एशियन वाटर टावर' के रूप में भी जाना जाता है। यह ध्रुवीय क्षेत्रों के बाहर जमे हुए पानी का सबसे बड़ा स्रोत है। यह 10 प्रमुख नदियों को पानी देता है जो दो सौ करोड़ से अधिक लोगों को सहारा देती हैं। अपनी उच्च ऊंचाई और विशाल बर्फ कवर के कारण एचएमए जलवायु परिवर्तन के प्रति बेहद संवेदनशील है। पहले के अध्ययनों से पता चलता है कि इस क्षेत्र में तापमान वैश्विक औसत से दोगुना बढ़ रहा है, जिससे वर्षा पैटर्न बदल रहा है। इससे बाढ़ का खतरा बढ़ गया है, खास तौर पर ग्लेशियल झील के फटने से होने वाली बाढ़ (जीएलओएफ), जो आम होती जा रही है। उदाहरण के लिए, 2023 की गर्मियों में भारत, नेपाल और पाकिस्तान के दक्षिणी हिमालय में मानसून के कारण आई बाढ़ में 1,500 से ज्यादा लोग मारे गए। आइसीआइएमओडी ने कहा कि तेल, कोयला और गैस जलाने से इस क्षेत्र में बाढ़ की आवृत्ति बढ़ रही है। बाढ़ के सबसे आम प्रकार भारी बारिश और बर्फ पिघलने के कारण बाढ़ होते हैं। कम बार होने वाली लेकिन कहीं ज्यादा अचानक और विनाशकारी जीएलओएफ और भूस्खलन बांध वाली झील के फटने से होने वाली बाढ़ (एलएलओएफ) है। आईसीआईएमओडी ने कहा कि जनसंख्या वृद्धि और बढ़ते बुनियादी ढांचे के कारण बाढ़ के जोखिम बढ़ रहे हैं। इन बातों पर देना होगा ध्यान : सोनम वांगचुक ने चेतावनी दी कि एक भी मानसून बादल फटने या हिमनदों के ढहने से विनाशकारी आपदाएं आ सकती हैं, जो बिना तैयारी वाले क्षेत्रों को प्रभावित कर सकती हैं। हमें संवेदनशील घाटियों में बाढ़ की निगरानी को प्राथमिकता देनी चाहिए। उच्च जोखिम वाले क्षेत्रों में बुनियादी ढांचा की परियोजनाओं को प्रतिबंधित करना चाहिए व उच्च पर्वतीय एशिया देशों के बीच डाटा साझाकरण समझौतों को मजबूत करना चाहिए।

# रंगों के त्योहार होली के पीछे का विज्ञान

विजय गर्ग

रंगों का त्योहार होली भारत के विभिन्न कोनों में पूर्णिमा के दिन धूमधाम और उल्लास के साथ मनाया जाता है

फाल्गुन माह में जो ग्रेगोरियन कैलेंडर के अनुसार मार्च का महीना है। हम सभी इस बात से भी वाकिफ हैं

राक्षस राजा हिरण्यकश्यप और उसके पुत्र प्रह्लाद और बहन होलिका की कथा ।

मैं उस कहानी को दोहराना नहीं चाहता। क्या आपने कभी सोचा है कि हमारे द्वारा मनाए जाने वाले त्योहारों के पीछे कोई वैज्ञानिक कारण हो सकता है? यहाँ, मैं होली के त्योहार के पीछे के विज्ञान का पता लगाना चाहता हूँ। आइए जानें-

होली वसंत ऋतु में खेली जाती है जो सर्दियों के अंत और गर्मियों के आगमन के बीच की अवधि होती है। हम आम तौर पर सर्दियों और गर्मियों के संक्रमण चरण से गुजरते हैं। यह अवधि वातावरण के साथ-साथ शरीर में बैक्टीरिया के विकास को प्रेरित करती है। जब होलिका जलाई जाती है, तो आस-पास के क्षेत्र का तापमान लगभग 50-60 डिग्री सेल्सियस बढ़ जाता है। परंपरा के अनुसार जब लोग परिक्रमा करते हैं (अलाव/चिता के चारों ओर घूमते हैं), तो अलाव से निकलने वाली गर्मी शरीर में मौजूद बैक्टीरिया को मार देती है और उसे साफ कर देती है।

देश के कुछ हिस्सों में होलिका दहन के बाद लोग राख को माथे पर लगाते हैं और आम के पेड़ के पत्तों और फूलों के साथ चंदन (चंदन की लकड़ी का लेप) मिलाकर खाते हैं। ऐसा माना जाता है कि इससे स्वास्थ्य अच्छा रहता है।

यह वह समय है, जब लोगों को आलस्य का अहसास होता है। मौसम में बदलाव के कारण शरीर में आलस्य का अनुभव होना स्वाभाविक है। वातावरण में ठंड से लेकर गर्मी तक। इस आलस्य को दूर करने के लिए लोग ढोल, मंजीरा और अन्य पारंपरिक वाद्यों के साथ गीत (फाग, जोगीरा आदि) गाते हैं। इससे मानव शरीर को तरोताजा होने में मदद मिलती है। रंगों के साथ खेलते समय उनकी शारीरिक हरकतें भी इस प्रक्रिया में मदद करती हैं।

रंग मानव शरीर की तंदुरुस्ती में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। किसी विशेष रंग की कमी से बीमारी हो सकती है और उस रंग तत्व को आहार या दवा के माध्यम से पूरा करके ठीक किया जा सकता है। प्राचीन समय में, जब लोगों ने होली खेलना शुरू किया, तो उनके द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले रंग हल्दी, नीम, पलाश (टेसू) आदि जैसे प्राकृतिक

स्रोतों से बनाए गए थे। इन प्राकृतिक स्रोतों से बने रंगों को चंचल तरीके से डालना और फेंकना मानव शरीर पर उपचारात्मक प्रभाव डालता है। यह शरीर में आयनों को मजबूत करने और इसे स्वास्थ्य और सुंदरता प्रदान करने का प्रभाव है।

**पौधों पर आधारित रंगों के स्रोत :**

**रंग सूत्रों का कहना है**

**हरा** मेहंदी और गुलमोहर के सूखे पत्ते, वसंत ऋतु की फसलों और जड़ी-बूटियों के पत्ते, पालक के पत्ते, रोडोडेंड्रोन के पत्ते और देवदार की सुइयां

**पीला** हल्दी पाउडर, बेल फल, अमलतास, गुलदाउदी की प्रजातियाँ, और गेंदा, सिंहपर्णी, सूरजमुखी, गेंदा, डैफोडिल और डहलिया की प्रजातियाँ, बेसन

**लाल** गुलाब या क्रैब एप्पल वृक्ष की छाल, लाल चंदन की लकड़ी का पाउडर, लाल अनार की छाल, टेसू वृक्ष (पलाश) के फूल, सुगंधित लाल चंदन की लकड़ी, सूखे हिबिस्कस फूल, मजीठ वृक्ष, मूली और अनार

**केसर** टेसू के पेड़ (पलाश) के फूल, हल्दी पाउडर के साथ चूना मिलाकर संतरे के पाउडर, बरबेरी का एक वैकल्पिक स्रोत बनाया जाता है

**नीला** नील, भारतीय जामुन, अंगूर की प्रजातियाँ, नीला हिबिस्कस और जकारांडा फूल

**बैंगनी** चुकंदर

**भूरा** सूखी चाय की पत्तियां, लाल मेपल के पेड़, कत्था

**काला** अंगूर की कुछ प्रजातियाँ, आंवला फल

आजकल, बाजार में सिंथेटिक रंगों की भरमार है और हर्बल रंग पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध नहीं हैं। सिंथेटिक रंग सस्ते भी होते हैं और लोगों को लगता है कि हमें इन्हें दूसरों पर डालना है, खुद पर नहीं, इसलिए वे इन्हें चुनते हैं। लेकिन वे एक बात भूल जाते हैं कि हर कोई एक ही तरह से सोचता है और दूसरे भी आपको वही सिंथेटिक रंग डालते हैं। बाजार में उपलब्ध सिंथेटिक रंगों में लेड ऑक्साइड, डीजल, क्रोमियम आयोडीन और कॉपर सल्फेट जैसे जहरीले तत्व होते हैं जो त्वचा पर चकत्ते, एलर्जी, पिगमेंटेशन, घुंघराले बाल और आंखों में जलन पैदा करते हैं। गंभीर मामलों में, यह गंभीर त्वचा रोग और बालों के क्यूटिकल्स के बंद होने का कारण बन सकता है जिससे बालों को गंभीर नुकसान हो सकता है। इसलिए हमें जानबूझकर हर्बल रंगों का चयन करना चाहिए, भले ही यह महंगा हो। अगर मांग बढ़ती है, तो लागत स्वाभाविक रूप से कम हो जाएगी।

**कुछ सामान्य सिंथेटिक रंगों से होने वाली समस्याएँ:**

**हरा** - इसमें कॉपर सल्फेट हो सकता है और इससे आंखों में एलर्जी और अस्थायी अंधेपन जैसी समस्याएं हो सकती हैं।

**लाल** - इसमें मरकरी सल्फाइड हो सकता है, जिससे त्वचा कैंसर, मानसिक विकलांगता, पक्षाघात और दृष्टि दोष हो सकता है।

**बैंगनी** - इसमें क्रोमियम आयोडाइड हो सकता है, जिससे ब्रोन्कियल अस्थमा और एलर्जी जैसी स्वास्थ्य समस्याएं हो सकती हैं।

**चांदी** - इसमें एल्युमिनियम ब्रोमाइड हो सकता है, जो कैंसरकारी है।

**नीला** - इसमें प्रुशियन नीला रंग हो सकता है, जो त्वचाशोथ का कारण बन सकता है।

**काला** - इसमें लेड ऑक्साइड हो सकता है, जिससे गुर्दे की विफलता और सीखने की अक्षमता जैसी स्वास्थ्य समस्याएं हो सकती हैं।

इसलिए होली को प्राकृतिक रंगों से खेलने की कोशिश करें। मुझे पता है कि यह अचानक संभव नहीं है। इस बीच, आप कुछ सरल उपायों का पालन करके सिंथेटिक रंगों के दुष्प्रभावों को कम कर सकते हैं। ये हैं-

**टिप्स: होली खेलने से पहले**

**शरीर:** रंगों को आपकी त्वचा के सीधे संपर्क में आने से रोकने के लिए अपने चेहरे और शरीर के अन्य खुले भागों पर मॉइस्चराइजर, पेट्रोलियम जेली या नारियल तेल की एक मोटी परत लगाना भी एक अच्छा विचार है।

**बाल:** अपने बालों और सिर की त्वचा पर जैतून, नारियल या अरंडी का तेल लगाएँ। रासायनिक रंगों से होने वाले रूसी और संक्रमण को रोकने के लिए इसमें नींबू के रस की कुछ बूँदें मिलाएँ।

**कपड़े:** आप जो भी पहनें, उससे आपके शरीर का ज़्यादातर हिस्सा ढका होना चाहिए। गहरे रंग के पूरे आस्तीन वाले सूती कपड़े पहनें। सिंथेटिक कपड़े चिपचिपे हो सकते हैं और डेनिम भारी हो सकते हैं, क्योंकि रंग या पानी से भरी बाल्टी आप पर गिर सकती है।

**होंठ और आंखें:** लेंस न पहनें। ज़्यादातर लोग आपके चेहरे पर सरप्राइज़ रंग लगाने में रुचि रखते हैं और लेंस से आपकी आँखें चोटिल हो सकती हैं। अपनी आँखों को रंग भरे डाट्र्स या पानी के जेट से बचाने के लिए सन ग्लास का इस्तेमाल करें। अपने होठों पर लिप बाम लगाएँ।

**पानी:** होली खेलने से पहले खूब पानी पिएं। इससे आपकी त्वचा हाइड्रेट रहेगी। होली खेलते समय पानी की चुस्की लेते रहें।

**भांग/शराब:** यदि आप हृदय रोगी हैं तो भांग का सेवन न करें, अत्यधिक सेवन से दिल का दौरा/फेल हो सकता है।

**टिप्स: होली खेलने के बाद**

साबुन से रंग न छुड़ाएँ। साबुन में एस्टर होते हैं जो त्वचा की परतों को नष्ट कर देते हैं और अक्सर चकत्ते पैदा करते हैं। रंग छुड़ाने के लिए क्रीम-आधारित क्लींजर का उपयोग करें या आप तेल का भी उपयोग कर सकते हैं, और फिर स्नान करें। त्वचा को हाइड्रेट रखने के लिए बहुत सारी मॉइस्चराइजिंग क्रीम लगाएँ।

यदि आपकी त्वचा पर अभी भी रंग बचे हैं तो आप रंग हटाने के लिए दूध/दूध की मलाई के साथ बेसन का लेप अपने शरीर पर लगा सकते हैं।

अपने चेहरे को साफ करने के लिए केरोसिन, स्प्रिट या पेट्रोल का इस्तेमाल न करें। क्रीम-आधारित क्लींजर या बेबी ऑयल का इस्तेमाल करें।

गर्म पानी का इस्तेमाल न करें, इससे रंग आपके शरीर पर चिपक जाएगा। सामान्य पानी का इस्तेमाल करें।

रंग हटने तक धूप से दूर रहें।

आंखों में खुजली या लालिमा सामान्य हो सकती है लेकिन अगर यह कुछ घंटों से अधिक समय तक जारी रहे तो तुरंत डॉक्टर से संपर्क करें।

**सेवानिवृत्त प्रिंसिपल शैक्षिक स्तंभकार मलोट पंजाब**

# टैरिफ वॉर ने बढ़ाया सोने का भाव, चांदी भी चमकी; चेक करें लेटेस्ट प्राइस

परिवहन विशेष न्यूज

अमेरिकी टैरिफ वॉर के चलते सोने की कीमतों में जबरदस्त उछाल देखा गया जहां 24 कैरेट सोना 1100 रुपये बढ़कर 89000 रुपये प्रति 10 ग्राम पर पहुंच गया। चांदी भी 1500 रुपये उछलकर 98000 रुपये प्रति किलोग्राम हो गई। कमजोर अमेरिकी आर्थिक डेटा और ब्याज दरों में कटौती की उम्मीद ने बुलियन मार्केट को सपोर्ट किया जिससे सोने की कीमतों में और तेजी संभव है।

**नई दिल्ली।** अमेरिकी टैरिफ वॉर के बीच सुरक्षित निवेश की मांग बढ़ने से मंगलवार को सोने की कीमतों में जबरदस्त उछाल आया। राष्ट्रीय राजधानी में सोना 1,100 रुपये बढ़कर फिर से 89,000 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर पहुंच गया। ऑल इंडिया सर्राफा एसोसिएशन के मुताबिक, ज्वेलर्स और स्टॉकिस्ट्स की बढ़ी हुई खरीदारी और वैश्विक बाजारों में मजबूती के चलते यह तेजी देखने को मिली।

24 कैरेट शुद्धता वाला सोना 1,100 रुपये की उछाल के साथ 89,000 रुपये प्रति 10 ग्राम हो गया। वहीं, 99.5 फीसदी शुद्धता वाला सोना 1,100 रुपये चढ़कर 88,600 रुपये प्रति 10 ग्राम पर पहुंच गया।

ट्रेडर्स के अनुसार, अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने मंगलवार से कनाडा, मैक्सिको और चीन पर भारी टैरिफ लगाने की पुष्टि की, जिसके बाद बुलियन मार्केट में तेजी आई। इसके जवाब में चीन और कनाडा ने भी अमेरिका के खिलाफ जवाबी टैरिफ लगाने की घोषणा कर दी, जिससे वैश्विक व्यापार तनाव और बढ़ गया।

**चांदी भी 98,000 रुपये के पार**

सोने की मजबूती का असर चांदी पर भी पड़ा, जो 1,500 रुपये उछलकर 98,000 रुपये प्रति किलोग्राम पर पहुंच गई। इससे पहले सोमवार को यह 96,500 रुपये प्रति किलोग्राम पर बंद हुई थी।

मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज (MCX) पर अप्रैल डिलीवरी वाला सोना 806 रुपये बढ़कर 86,190 रुपये प्रति 10 ग्राम हो गया। वहीं, मई डिलीवरी वाली चांदी 472 रुपये उछलकर 96,482 रुपये प्रति किलोग्राम पर पहुंच गई।

**वैश्विक बाजारों में भी सोने में तेजी**

अंतरराष्ट्रीय बाजार में कॉमेक्स (COMEX) पर अप्रैल डिलीवरी वाला सोना 32.70 डॉलर यानी 1.13% की बढ़त के साथ 2,933.80 डॉलर प्रति औंस पर पहुंच गया। वहीं, स्पॉट गोल्ड भी 1% बढ़कर 2,921.42 डॉलर प्रति औंस पर ट्रेड कर रहा था।

**क्या है गोल्ड में तेजी की वजह?**

HDFC सिक्योरिटीज के सीनियर एनालिस्ट सौमिल गांधी के मुताबिक, अमेरिका में सोमवार को जारी हुआ ISM मैन्युफैक्चरिंग PMI डेटा उम्मीद से कमजोर रहा। इससे अर्थव्यवस्था को लेकर चिंता और गहरा गई। इसके अलावा, बीते हफ्ते कमजोर हाउसिंग डेटा, बढ़ती बेरोजगारी दर और घटती उपभोक्ता खर्च रिपोर्ट ने निवेशकों को डरा दिया।

इस डेटा के बाद उम्मीदें बढ़ गई हैं कि अमेरिकी फेडरल रिजर्व ब्याज दरों में कटौती जल्द कर सकता है। कम ब्याज दरों का मतलब होता है कि सोने जैसी नॉन-यील्ड (ब्याज न देने वाली) संपत्तियों की मांग और बढ़ेगी, जिससे इसकी कीमतों में और तेजी आ सकती है।

# रिलायंस को ₹24,500 करोड़ का नोटिस; प्राकृतिक गैस उत्पादन और बिक्री से हुए लाभ से जुड़ा है मामला

परिवहन विशेष न्यूज

पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्रालय ने रिलायंस इंडस्ट्रीज को 2.81 अरब डॉलर का नोटिस भेजा है। मामला ओएनजीसी के आसपास के ब्लॉक से प्राकृतिक गैस के उत्पादन और बिक्री से हुए लाभ से जुड़ा है।

**नई दिल्ली।** सरकार ने ओएनजीसी के आसपास के ब्लॉक से प्राकृतिक गैस के उत्पादन और बिक्री से हुए लाभ पर रिलायंस इंडस्ट्रीज को 2.81 अरब डॉलर (करीब 24,500 करोड़ रुपये) का मांग नोटिस भेजा है। यह नोटिस 14 फरवरी को आए दिल्ली हाईकोर्ट के फैसले के बाद भेजा गया है। हाईकोर्ट ने एक अंतरराष्ट्रीय मध्यस्थता न्यायाधिकरण के उस फैसले को पलट दिया था, जिसमें रिलायंस और यूके की उसकी साझेदार फर्म बीपी पीएलसी को नजदीकी ब्लॉक से गैस उत्पादन और बिक्री के लिए किसी भी हर्जाने की देनदारी नहीं बताई गई थी।

कंपनी ने शेयर बाजार को भेजी सूचना में कहा, खंडपीठ के फैसले के बाद पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्रालय से 3 मार्च, 2025 को मांग पत्र प्राप्त हुआ है। इसमें रिलायंस इंडस्ट्रीज, बीपी एक्सप्लोरेशन (अल्फा) लि. और कनाडा की कंपनी निको (एनईसीओ) लि. से 2.81 अरब डॉलर की मांग की गई है।

**सरकार ने दायर की थी अपील**

दरअसल, सरकार ने 2016 में ओएनजीसी के आसपास के क्षेत्रों से केजी-डी6 ब्लॉक में स्थानांतरित हुई गैस की मात्रा के लिए रिलायंस और उसके भागीदारों से 1.55 अरब डॉलर की मांग की थी। रिलायंस ने इस दावे का विरोध किया था। जुलाई, 2018 में मध्यस्थता न्यायाधिकरण ने भी कहा कि कंपनी मुआवजे के भुगतान के लिए बाध्य नहीं है।

इस फैसले के खिलाफ दायर सरकार की अपील को दिल्ली हाईकोर्ट की एकल पीठ ने मई, 2023 में खारिज करते हुए मध्यस्थता निर्णय को बरकरार रखा था। हाईकोर्ट की ही एक खंडपीठ ने पिछले महीने रिलायंस और उसके भागीदारों के खिलाफ फैसला सुनाते हुए एकल न्यायाधीश के आदेश को खारिज कर दिया था।

**2013 में शुरू हुआ था विवाद**

यह विवाद जुलाई, 2013 में उस समय शुरू हुआ था, जब ऑयल एंड नैचुरल गैस कॉरपोरेशन (ओएनजीसी) को संदेह हुआ कि उसके केजी-डी5 और जी-4 ब्लॉक का क्षेत्र रिलायंस के केजी-डी6 ब्लॉक से जुड़ा हुआ है। सरकारी कंपनी लगा कि केजी-डी5 ब्लॉक के सटे इलाके में रिलायंस की ओर से खोदे गए कम-से-कम चार कुओं ने उसके संसाधनों का भी दोहन किया है।

**बैटरी संयंत्र की समयसीमा में चूक पर लगा जुर्माना**

सरकार ने रिलायंस इंडस्ट्रीज की अनुषंगी कंपनी रिलायंस न्यू एनर्जी बैटरी स्टोरेज लि. पर बैटरी सेल संयंत्र लगाने की समयसीमा में चूक के लिए जुर्माना लगाया है। इसके लिए कंपनी को उत्पादन से जुड़े प्रोत्साहन दिए गए थे। रिलायंस ने बताया, उसकी अनुषंगी कंपनी को तीन मार्च को भारी उद्योग मंत्रालय से एक पत्र मिला, जिसमें एक जनवरी, 2025 से हर दिन की देरी के लिए प्रदर्शन सुरक्षा (50 करोड़ रुपये) की 0.1 फीसदी की दर से क्षतिपूर्ति वसूलने का निर्देश दिया गया है।

# क्या यह होम लोन लेने का सबसे सही समय है? समझिए पूरा हिसाब

परिवहन विशेष न्यूज

आरबीआई ने हाल ही में रेपो रेट घटाया है। इससे होम लोन लेने वालों की ईएमआई कम होगी जिससे घर खरीदना आसान हो सकता है। अगर आप ऊंची ब्याज दरों के कारण घर खरीदने से हिचक रहे थे तो यह सही समय हो सकता है। क्या कम ब्याज दरों से होम लोन सस्ता हो जाएगा? क्या होम लोन री-फाइनेंसिंग से और फायदा मिल सकता है? आइए जानते हैं पूरी डिटेल!

**नई दिल्ली।** घर खरीदना हर किसी का सपना होता है। हालांकि, हर किसी के पास घर खरीदने के लिए जरूरी बजट नहीं होता। इसके लिए हम होम लोन का सहारा लेते हैं। लेकिन, होम लोन सही समय पर लेना काफी जरूरी है। आपको होम लोन लेने से पहले ब्याज दर, बाजार की हालत, आपकी वित्तीय सेहत और सरकार की नीतियों को ध्यान में रखकर ही कोई फैसला लिया जाना चाहिए। लेकिन, सवाल यह है कि क्या अभी होम लोन लेना सही रहेगा? आइए जानते हैं विस्तार से।

**ब्याज दर यह सही समय है?**

आरबीआई ने अपनी फरवरी की एमपीसी मीटिंग में रेपो रेट को 6.50 फीसदी से 25 बीपीएस कम कर 6.25 फीसदी कर दिया है। बेसिक होम लोन के को-फाउंडर और सीईओ अतुल मोंगा का कहना है कि मॉनेटरी पॉलिसी कमेटी ने पांच साल में पहली बार रेट में कटौती की है। इसके आधार पर वित्तीय संस्थानों ने होम लोन की ब्याज दर भी घटाई है। यह उन लोगों के लिए बड़ी राहत है, जो होम लोन लेना चाहते हैं।

**ईएमआई पर छोटी और लगातार बचत**

अतुल मोंगा के मुताबिक, आरबीआई के फैसले से होम लोन लेने वाले उपभोक्ताओं को फायदा हुआ है। इससे उनकी लोन की लागत कम हो जाएगी और घर खरीदना कुछ आसान हो जाएगा। ब्या दर कम होने से उनकी ईएमआई कम होगी, इस तरह घर खरीदने वालों पर आर्थिक बोझ कम होगा। आइए इसका कैलकुलेशन समझते हैं।

उदाहरण के लिए, मान लीजिए आपने 30 साल के लिए 8.75 फीसदी की दर पर 30 लाख रुपये का लोन लिया है। पहले आपकी मासिक ईएमआई तकरीबन 23,601 रुपये होती थी। हालांकि, अब ब्याज दर में बदलाव के कारण उनकी ईएमआई कम होकर 23,067 रुपये हो जाएगी। इस तरह कुल 1,92,098 रुपये की बचत होगी। अगर आप पहले वाली राशि के बराबर ईएमआई चुकाते हैं तो आपका लोन जल्दी खत्म हो जाएगा।

ऐसे में यह उन लोगों के लिए होम लोन लेने का सही समय है, जो ऊंची ब्याज दर और प्रॉपर्टी की आसमान छूती कीमतों के चलते घर खरीदने से हिचक रहे थे। अब वे मौजूदा स्थिति का लाभ उठाकर अपने पसंदीदा रिहायशी प्रोजेक्ट में निवेश कर सकते हैं। हालांकि कोई भी फैसला लेने से पहले आपको कई जरूरी पहलुओं पर विचार कर लेना चाहिए, जैसे कि मार्केट का ट्रेंड, प्रॉपर्टी की लोकेशन, और आपकी अपनी फाइनेंशियल स्टेबिलिटी।

**होम लोन री-फाइनेंस के विकल्प**

कई बार हो सकता है कि होम लोन लेने वालों को ऐसा लगे कि उनकी मंथली ईएमआई में मामूली-सी कमी आई है। लेकिन, यह छोटी-सी कमी भी लंबे समय में उन्हें बड़ी बचत का फायदा देगी। अगर आपका क्रेडिट स्कोर अच्छा है तो आप और भी बेहतर ब्याज दर पर री-फाइनेंस का विकल्प पा सकते हैं। बैंक और वित्तीय संस्थान भी कम रिस्क को ध्यान में रखते हुए ही लोन देते हैं।

**हाउसिंग सेक्टर की बढ़ेगी रफ्तार**

आरबीआई हाउसिंग को अधिक सुलभ बनाकर आर्थिक विकास को बढ़ावा देने चाहता है। इससे खासतौर पर ऐसे इलाकों में रिहायशी प्रॉपर्टीज़ की मांग बढ़ेगी जहां बुनियादी सुविधाएं मौजूद हैं और बेहतर सुविधाओं के चलते प्रॉपर्टी की कीमतें बढ़ चुकी हैं। ऐसे में कम ब्याज पर लोन मिलने से खासतौर पर महानगरों में प्रॉपर्टी की ऊंची कीमतों के कारण होने वाला दबाव कुछ कम होगा।

**होम लोन पर मिलने वाले फायदे**

सरकार घर खरीदने वालें की मदद के लिए भी योजना चलाती है। जैसे कि अगर आप प्रधानमंत्री आवास योजना (PMAY) योजना के तहत पहली बार घर खरीदते हैं, तो आपको सब्सिडी का लाभ मिलेगा। आप होम लोन पर ओल्ड टैक्स रिजीम में सेक्शन 80C और 24(b) के तहत टैक्स छूट का लाभ भी उठा सकते हैं। अगर आप अपनी पत्नी या मां यानी महिला के साथ मिलकर ज्वाइंट होम लोन लेते हैं, तो आपको ब्याज दर पर कुछ अतिरिक्त छूट मिल सकती है।

**होम लेते वक्त इन बातों का रखें ध्यान**

होम लोन लेते समय आपकी वित्तीय स्थिति सबसे अहम होती है। आपको अपने आप से कुछ सवाल करने चाहिए। जैसे कि:

क्या आपकी मासिक आय स्थिर है?

क्या आपके पास इमरजेंसी फंड है?

क्या आप EMI का बोझ उठाने के लिए तैयार हैं?

क्या आपने डाउन पेमेंट के लिए जरूरी बचत की है?

अगर आपकी वित्तीय स्थिति मजबूत है और आप लंबी अवधि की प्लानिंग कर सकते हैं, तो अभी होम लोन लेना अच्छा विकल्प हो सकता है। आर्थिक जानकारों का मानना है कि आरबीआई इस साल रेपो रेट में और भी कटौती कर सकता है। इसका भी आपको लाभ मिलेगा।

# 2 या 3 फीसदी... कितना बढ़ेगा महंगाई भत्ता, कब होगा एलान?

परिवहन विशेष न्यूज

होली से पहले केंद्र सरकार अपने कर्मचारियों को महंगाई भत्ते (DA) में बढ़ोतरी का तोहफा दे सकती है। इसका फायदा लाखों सरकारी कर्मचारियों और पेंशनर्स को फायदा मिलेगा। आइए जानते हैं कि डीए में कितनी बढ़ोतरी हो सकती है? DA हाइक का एलान कब होगा? महंगाई भत्ता कैसे तय किया जाता है? और नए DA हाइक के बाद कितनी सैलरी बढ़ेगी?

**नई दिल्ली।** होली से पहले केंद्र सरकार अपने कर्मचारियों को बड़ा तोहफा देने जा रही है। खबरों की मानें तो सरकार जल्द ही महंगाई भत्ते (Dearness Allowance - DA) में बढ़ोतरी की घोषणा कर सकती है। अभी तक सरकार की ओर से कोई आधिकारिक बयान नहीं आया है। पहले मीडिया रिपोर्ट में अंदाजा लगाया जा रहा था कि सरकारी कर्मचारियों को 3 फीसदी का डीए हाइक मिल सकता है। लेकिन, अब हालिया डेटा से संकेत मिलता है कि कर्मचारियों को निराशा हो सकती है।

**होली से पहले हो सकता है एलान**

इस बार होली 14 मार्च को है। माना जा रहा है कि मोदी सरकार 14 मार्च से पहले DA हाइक का एलान करके सरकारी कर्मचारियों को बड़ा तोहफा दे सकती है। इतना ही नहीं, महंगाई भत्ते के साथ-साथ Dearness Relief (DR) में भी बढ़ोतरी होने की उम्मीद है। इसका मतलब है कि पेंशनभोगियों की पेंशन भी बढ़ जाएगी।

**साल में दो बार होता है DA संशोधन**

7वें वेतन आयोग (7th Pay Commission) के नियमों के अनुसार, महंगाई भत्ते में साल में दो बार संशोधन किया जाता है। पहली बढ़ोतरी 1 जनवरी से लागू होती है। इसकी घोषणा आमतौर पर मार्च में की जाती है। वहीं, दूसरी बढ़ोतरी 1 जुलाई से लागू होती है, जिसका एलान सितंबर में होता है। इस बार जनवरी 2025 से लागू होने वाले DA बढ़ोतरी की घोषणा इसी महीने यानी मार्च में होने की उम्मीद है।

**कैसे तय होता है महंगाई भत्ता?**

केंद्र सरकार कर्मचारियों के वेतन में महंगाई भत्ते की बढ़ोतरी All India Consumer Price Index for Industrial Workers (AICPIN-IW) के आधार पर करती है। यह सूचकांक देश में महंगाई और उपभोक्ता मूल्य स्तर को दर्शाता है। सरकार इस आंकड़े का छह महीने का औसत निकालकर DA बढ़ोतरी का फैसला लेती है।

**इस बार कितना बढ़ सकता है DA?**

लेबर ब्यूरो (Labour Bureau) का डेटा बताता है कि दिसंबर 2024 में CPI-IW 143.7 पर पहुंच गया है। इस आधार पर केंद्रीय कर्मचारियों के DA में 2 फीसदी की बढ़ोतरी होने का अनुमान है। यह वृद्धि जनवरी 2025 से प्रभावी होगी। पहले अनुमान लगाया जा रहा था कि सरकारी कर्मचारियों को 3 फीसदी डीए हाइक का लाभ मिल सकता है।

**DA हाइक के बाद कितना मिलेगा भत्ता?**

7वें वेतन आयोग के तहत, मौजूदा महंगाई भत्ता 53.98 फीसदी है। यह 2 फीसदी की बढ़ोतरी के बाद यह 55.98 फीसदी हो जाएगा। इसका सीधा फायदा लाखों केंद्रीय कर्मचारियों और पेंशनर्स को मिलेगा।

**कब होगी आधिकारिक घोषणा?**

हालांकि सरकार की ओर से अभी तक कोई औपचारिक घोषणा नहीं हुई है, लेकिन यह उम्मीद की जा रही है कि मार्च के पहले या दूसरे हफ्ते में डीए बढ़ोतरी के बारे में बड़ा अपडेट आ सकता है। इससे सरकारी कर्मचारियों को होली का तोहफा भी मिल जाएगा।

# एमएसएमई को वैश्विक स्तर पर मिलेगी पहचान, UPI से मिलेगा लोन; जानिए सरकार का प्लान

परिवहन विशेष न्यूज

एमएसएमई मंत्रालय भारतीय एमएसएमई को वैश्विक स्तर का बनाने की कोशिश में लगा है। आने वाले दिनों में इसको लेकर कई बदलाव देखने को मिल सकते हैं। इन दिनों एमएसएमई खासकर मीडियम इंटरप्राइजेज के लिए फ्रेमवर्क तैयार किया जा रहा है। इस माह के आखिर तक एमएसएमई को यूपीआई से कर्ज देने की शुरुआत हो सकती है। मुख्य रूप से माइक्रो उद्यमियों के लिए यह सुविधा होगी।

**नई दिल्ली।** एमएसएमई मंत्रालय और नीति आयोग इन दिनों जर्मनी की तरह भारतीय एमएसएमई को वैश्विक स्तर का बनाने की कवायद में जुटा है। सरकार एमएसएमई को वैश्विक सप्लाई चेन का हिस्सा बनाना चाहती है ताकि निर्यात में उनकी भागीदारी बढ़े।

इसे ध्यान में रखते हुए इन दिनों एमएसएमई खासकर मीडियम इंटरप्राइजेज के लिए फ्रेमवर्क तैयार किया जा रहा है। पिछले महीने पेश बजट में एमएसएमई को वैश्विक सप्लाई चेन बनाने की घोषणा की गई थी। जर्मनी के जीडीपी में एमएसएमई की हिस्सेदारी 55 प्रतिशत है। भारतीय जीडीपी में एमएसएमई का योगदान लगभग 30 प्रतिशत है।

**टेक्नोलाजी के मामले में भारतीय एमएसएमई पीछे**

विशेषज्ञों का कहना है कि जर्मनी एमएसएमई पर आधारित अर्थव्यवस्था है और एमएसएमई में टेक्नोलाजी के अधिकाधिक इस्तेमाल से ऐसा संभव हो पाया है। भारतीय एमएसएमई अभी टेक्नोलाजी के इस्तेमाल में यूरोपीय देशों के काफी पीछे हैं। इसलिए नीति आयोग एमएसएमई सेक्टर में टेक्नोलाजी के इस्तेमाल को लेकर पूरा सर्वे करा रहा है और यह भी समझने की कोशिश की जा रही है कि भारतीय एमएसएमई में इस्तेमाल होने वाली टेक्नोलाजी वैश्विक स्तर के अनुरूप है या नहीं।

**इस बात पर दिया जा रहा खास ध्यान**

टेक्नोलाजी को अपनाने में यूरोपीय देशों के साथ भारतीय एमएसएमई का तुलनात्मक अध्ययन किया जा रहा है। वैश्विक स्तर पर एमएसएमई के रुख का भी विश्लेषण किया जा रहा है ताकि उसे देखते हुए भारतीय एमएसएमई को तैयार किया जा सके।

सूत्रों के मुताबिक विशेष रूप से मीडियम इंटरप्राइजेज को वैश्विक सप्लाई चेन का हिस्सा बनाने पर विशेष फोकस किया जा रहा है। फरवरी में पेश बजट में एमएसएमई की परिभाषा बदल दी गई और अब 100 से 500 करोड़ रुपए तक का सालाना कारोबार करने वाले मीडियम श्रेणी में आएंगे।

सूत्रों के मुताबिक मीडियम श्रेणी क्रेडिट पर फोकस किया जाएगा क्योंकि उन्हें क्रेडिट को लेकर कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। हालांकि इस बार के बजट में इन चुनौतियों को समाप्त करने की कोशिश की गई है। एमएसएमई से जुड़ी सभी स्कीम को एक जगह मिलाकर उसका सरलीकरण किया जाएगा। ताकि वे स्कीम के लिए आसानी से आवेदन कर सके। क्लस्टर आधारित औद्योगिक हब भी विकसित किए जाएंगे।

**अप्रैल से पहले एमएसएमई को यूपीआई से कर्ज देने की शुरुआत**

दूसरी तरफ, इस माह के आखिर तक एमएसएमई को यूपीआई से कर्ज देने की शुरुआत हो सकती है। मुख्य रूप से माइक्रो उद्यमियों के लिए यह सुविधा होगी। पिछले साल जुलाई में पेश बजट में वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने इसकी घोषणा की थी। यूपीआई से कर्ज देने के लिए अलग से एक पोर्टल तैयार किया गया है। एसबीआई पायलट के रूप में यूपीआई से लोन देने की शुरुआत कर चुका है। सभी बैंक यूपीआई के माध्यम से लोन देने के फ्रेमवर्क को तैयार कर रहे थे।

# निवेश के लिए युवाओं की पहली पसंद बन रहा शेयर बाजार, क्या है इसकी वजह?

परिवहन विशेष न्यूज

भारत में 35 साल से कम उम्र के 45% युवा निवेश के लिए शेयर बाजार (Stock Market) को प्राथमिकता दे रहे हैं। वित्तीय जागरूकता (Financial Awareness) टेक्नोलॉजी (Technology) लॉन्ग-टर्म वेल्थ क्रिएशन (Long-term Wealth Creation) और डिजिटल प्लेटफॉर्म (Digital Platforms) की मदद से निवेश आसान हो गया है। हालांकि बाजार की अस्थिरता (Market Volatility) को लेकर 51% निवेशक चिंतित हैं।

**नई दिल्ली।** भारत में 35 साल से कम उम्र के 45 फीसदी युवा निवेश के लिए शेयर बाजार (Stock Market Investment) को प्राथमिकता दे रहे हैं। रिसर्च फर्म 1Lattice और StockGro की लेटेस्ट रिपोर्ट के मुताबिक, युवाओं का इक्विटी निवेश (Equity Investment) की ओर रुझान बढ़ने का मुख्य कारण वित्तीय जागरूकता (Financial Awareness), टेक्नोलॉजी की मदद से बेहतर निवेश विकल्प और लॉन्ग-टर्म वेल्थ क्रिएशन (Long-term Wealth Creation) का लक्ष्य है।

**इक्विटी इन्वेस्टमेंट पर क्यों फोकस कर रहे हैं युवा?**

रिपोर्ट के अनुसार, 81% उत्तरदाताओं ने शेयर बाजार में निवेश कर रखा है, जो दर्शाता है कि युवा पारंपरिक बचत योजनाओं से हटकर सीधे इक्विटी मार्केट (Direct Equity Market) में निवेश कर रहे हैं। हालांकि, 42% गैर-निवेशकों को लगता है कि उनके पास निवेश शुरू करने के लिए जरूरी जानकारी की कमी है, जबकि 44% निवेशक स्टेप-बाय-स्टेप गाइडेंस चाहते हैं।

**डिजिटल प्लेटफॉर्म और AI से निवेश सीखना आसान**

डिजिटल निवेश प्लेटफॉर्म की बढ़ती लोकप्रियता के चलते 68% निवेशक डिजिटल माध्यमों का उपयोग कर ट्रेडिंग और निवेश सीखना पसंद कर रहे हैं। इसके अलावा, 38% लोग ऑनलाइन वीडियो कोर्स के जरिए निवेश की जानकारी लेना पसंद करते हैं।

AI-बेस्ड इन्वेस्टमेंट रिकमेंडेशन (AI-based Investment Recommendations), रियल-टाइम डेटा (Real-time Data) और वर्चुअल ट्रेडिंग एक्सपीरियंस (Virtual Trading Experience) जैसी सुविधाओं ने निवेश को अधिक आसान बना दिया है। करीब 50% नए निवेशक रियल मनी लगाने से पहले वर्चुअल मनी से अभ्यास करते हैं।

**बाजार में अस्थिरता को लेकर निवेशकों की चिंता**

हालांकि, 51% निवेशक संभावित बाजार गिरावट (Market Volatility) को लेकर चिंतित हैं। पिछले कुछ महीनों में सेंसेक्स और निफ्टी करीब 15 फीसदी तक गिर चुके हैं। इससे निवेशकों की चिंता बढ़ रही है। हालांकि, उन्हें उम्मीद भी है कि मार्केट में जल्द रिकवरी होगी।

रिपोर्ट बताती है कि डिजिटल निवेश प्लेटफॉर्म (Digital Investment Platforms) छोटे शहरों तक अपनी पहुंच बना रहे हैं, जिससे अधिक लोग वित्तीय साक्षरता हासिल कर रहे हैं।

**डिजिटल प्लेटफॉर्म निवेश को बना रहे आसान**

StockGro के फाउंडर और CEO अजय लाखोटिया ने कहा, ₹युवा निवेशक डिजिटल निवेश और इक्विटी बाजार में बदलाव का नेतृत्व कर रहे हैं। ऐसे में वित्तीय साक्षरता (Financial Literacy) पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण हो गई है।₹

1Lattice के CEO अमर चौधरी के अनुसार, ₹इक्विटी निवेश को अब वेल्थ क्रिएशन (Wealth Creation) और पैसिव इनकम (Passive Income) के रूप में अपनाया जा रहा है।₹ हालांकि, बढ़ती रुचि के बावजूद, फाइनेंशियल एजुकेशन (Financial Education) एक बड़ी चुनौती बनी हुई है।

# मीरा बाई: एक भक्ति संत और कवयित्री।

मीरा बाई एक महान भक्ति संत और कवयित्री थीं, जिन्होंने अपने जीवनकाल में भगवान कृष्ण के प्रति अपने प्रेम और भक्ति को व्यक्त करने के लिए कई सुंदर कविताएँ और गीत लिखे। उनकी कविताओं में भगवान कृष्ण के प्रति उनका गहरा प्रेम और समर्पण दिखाई देता है, और उनकी भक्ति की गहराई और सच्चाई ने उन्हें एक महान संत और कवयित्री बनाया।

मीरा बाई की कविताएँ और गीत भगवान कृष्ण के प्रति उनके प्रेम और भक्ति को व्यक्त करते हैं। यहाँ कुछ उनकी प्रसिद्ध कविताएँ और गीत हैं:

1. ₹पायल बाजे री धुन₹ - यह कविता मीरा बाई की सबसे प्रसिद्ध कविताओं में से एक है, जिसमें उन्होंने भगवान कृष्ण के प्रति अपने प्रेम को व्यक्त किया है।
2. ₹मेरे तो गिरधर गोपाल₹ - इस कविता में, मीरा बाई ने भगवान कृष्ण को अपना पति माना है और उनके प्रति अपने प्रेम को व्यक्त किया है।
3. ₹मैं तो सुनी री पुकार₹ - इस कविता में, मीरा बाई ने भगवान कृष्ण की पुकार सुनी है और उनके प्रति अपने प्रेम को व्यक्त किया है।
4. ₹चल मीरा तेरी प्यारी₹ - इस कविता में, मीरा बाई ने भगवान कृष्ण के प्रति अपने प्रेम को व्यक्त किया है और उनके साथ जाने की इच्छा व्यक्त की है।
5. ₹मीरा के प्रभु गिरधर नागर₹ - इस कविता में, मीरा बाई ने भगवान कृष्ण को अपना प्रभु माना है और उनके प्रति अपने प्रेम को व्यक्त किया है।

इन कविताओं में, मीरा बाई ने भगवान कृष्ण के प्रति अपने प्रेम और भक्ति को व्यक्त किया है, और उनकी कविताएँ आज भी लोगों को भगवान कृष्ण के प्रति प्रेम और भक्ति की भावना को जगाती हैं।

मीरा बाई का जन्म 1498 में मेड़ता में हुआ था, जो वर्तमान में राजस्थान में है। उनके पिता रतन सिंह एक राजा थे, और उनकी माता वीर कुंवर एक रानी थीं। मीरा बाई का विवाह राणा सांगा से हुआ था, लेकिन उनका दिल भगवान कृष्ण के प्रति समर्पित था, और वे अपने पति को भगवान कृष्ण का रूप मानती थीं।

मीरा बाई की कविताएँ भगवान कृष्ण के प्रति उनके प्रेम और भक्ति को व्यक्त करती हैं, और उनकी कविताओं में संगीत और नृत्य का महत्व भी दिखाई देता है। उनकी कविताओं में भगवान कृष्ण के साथ उनके प्रेम के खेल और उनकी भक्ति की गहराई का वर्णन किया गया है, और उनकी कविताएँ आज भी लोगों को भगवान कृष्ण के प्रति प्रेम और भक्ति की भावना को जगाती हैं।

मीरा बाई की मृत्यु 1547 में हुई थी, लेकिन उनकी कविताएँ और उनकी भक्ति की गहराई आज भी लोगों को प्रेरित करती हैं। वे एक महान संत और कवयित्री थीं, जिन्होंने अपने जीवनकाल में भगवान कृष्ण के प्रति अपने प्रेम और भक्ति को व्यक्त करने के लिए कई सुंदर कविताएँ और गीत लिखे, और उनकी कविताएँ आज भी लोगों को भगवान कृष्ण के प्रति प्रेम और भक्ति की भावना को जगाती हैं।

मीरा बाई के जीवन में भगवान कृष्ण के प्रति आकर्षण की शुरुआत उनके बचपन से हुई थी। उनके माता-पिता भगवान कृष्ण के भक्त थे, और वे घर में भगवान कृष्ण की पूजा और भजन करते थे। मीरा बाई को भगवान कृष्ण की कहानियाँ और भजन सुनने को मिलते थे, और वे भगवान कृष्ण के प्रति आकर्षित हो गईं।

एक कहानी के अनुसार, मीरा बाई को भगवान कृष्ण की मूर्ति देखने को मिली थी, और वे उस मूर्ति के प्रति आकर्षित हो गईं। उन्होंने भगवान कृष्ण को अपना पति मान लिया और उनके प्रति अपने प्रेम और भक्ति को व्यक्त करने लगीं।

मीरा बाई के विवाह के बाद भी, उनका मन भगवान कृष्ण के प्रति आकर्षित रहा, और वे अपने पति को भगवान कृष्ण का रूप मानती थीं। उनके पति की मृत्यु के बाद, मीरा बाई ने भगवान कृष्ण के प्रति अपने प्रेम और भक्ति को और भी गहराई से व्यक्त करना शुरू किया, और उन्होंने अपने जीवन को भगवान कृष्ण के प्रति समर्पित कर दिया।

इस प्रकार, मीरा बाई के जीवन में भगवान कृष्ण के प्रति आकर्षण की शुरुआत उनके बचपन से हुई थी, और उनका यह आकर्षण उनके जीवन भर बना रहा।

**डॉ.मुश्ताक अहमद शाह**
**सहज हरदा मध्य प्रदेश**

## तहरीर किताबों में छिपा रख्खी है,

बात दिल की है मगर मेंने आंखों में छुपा रख्खी है,
ज़ुल्फों की घनी छाँव, आग दिल में लगा रख्खी है

तेरी आँखों की कशिश बयां क्यों कर हो बताये कोई,
इक हसरत है जो तुने भी दिल में अपने दबा रख्खी है,

अल्फ़ाज़ दिल के कागज़ पर तो उतर आये हैं लेकिन,
इज़हारे वफ़ा से डर, तहरीर किताबों में छिपा रख्खी है,

दिल तेज़ धडकता बस इक तेरे ख्याल से क्यों मेरा?
तसवीरे यार मैंने अपनी इन आंखों में छुपा रख्खी है ,

बहुत लंबा है ये सफ़र जिंदगी का इसलिए मेरे यारों,
कुछ उम्मीदे वफ़ा मैने उसके वादों से लगा रख्खी है,

उसकी आमद का पता जो मुझको चल गया मुश्ताक़,
दर और दीवारें घर की मेंने भी सब ही सजा रख्खी है,

**डॉ मुश्ताक अहमद शाह**
**सहज़ हरदा मध्यप्रदेश**

# (गायन-लेखन और शिक्षण के सारथी) : अपनी कला के जरिये संस्कृति को बचाने की कोशिश में लगे मास्टर छोटूराम

**डॉ. सत्यवान सौरभ**

प्राचीन समय से ही इंसान का विभिन्न कलाओं के प्रति अटूट रिश्ता रहा है। कभी कलाकारों के फ़न ने तो कभी कलाओं के मुरीद लोगों ने इस ज़माने में नए-नए रंग बिखेरे है। ये माना जाता है कि आत्मा की तरह कला अजर-अमर है, ये एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक हस्तांतरित होती है और नया रूप लेती है। आज कला के रूप बदरंग हो गए है। कलाकार अपने उद्देश्यों से भटक गए है और पैसों के पीछे दौड़ पड़े है जो एक तरह कला को बेचने जैसा है। आज कला के नाम पर परोसी जा रही अश्लीलता समाज को लील रही है। मगर इन सबके बीच आज भी देश में कुछ ऐसे कलाकार है जो भारत की प्राचीन सभ्यता को नए रंग देकर उन आदर्श और मूल्यों को बचाने की कोशिश में लगे है। जी हाँ, उनमे से एक है हरियाणा के भिवानी जिले के कस्बे सिवानी के गाँव बड़वा की माटी में जन्मे मास्टर छोटूराम। किसान परिवार में जन्मे मास्टर छोटूराम का जीवन संघर्षों से भरा रहा है। इनके पिता स्वर्गीय रिछपाल गैदर एक किसान थे जिनसे इनको संघर्ष करने और धैर्य रख आगे बढ़ने की सीख मिली। छोटी उम्र में पिता का साया उठने के बाद भी ये अपनी पढाई को जारी रखते हुए शिक्षा और कला के क्षेत्र में आगे बढ़ते गए। पिछले चार-पांच दशकों से मास्टर छोटूराम अपने लिखे गीतों के जरिये समाज को भारत की प्राचीन संस्कृति से जोड़ने का अतुल्य प्रयास कर रहे है। पेशे से सरकारी अध्यापक मास्टर छोटूराम एक आशु कवि और हरियाणवी-हिंदी के जाने माने गायक है। देश भर में हज़ारों स्टेज कार्यक्रम दे चुके मास्टर छोटूराम हमारे देश के वीर-शहीदों; शहीद भगतसिंह, सुभाष चद्र बोस, लाल बहादुर शास्त्री, शहीद उद्यम सिंह के साथ-साथ अन्य सपूतों की जीवनी को जब अपने गीतों और किस्सों के माध्यम से स्टेज पर प्रस्तुत करते है तो देशभक्ति की रसधार बहने लगती है। लोगों को आज के अश्लील दौर में एक सभ्य और जीवन मूल्यों से भरे गीतों को सुनंने का सुनहरा अवसर मिलता है।

इन सबके अलावा मास्टर छोटूराम यू ट्यूब एवं सोशल मीडिया के जरिये भारत की प्राचीन संस्कृति से जुड़े किस्सों को वीडियो और ऑडियो रूप में फ्री में शेयर करते है, ताकि प्राचीन संस्कृति को बचाया जा सके। हरियाणवी संस्कृति के विभिन्न रंगों को इन्होने अपनी रागनियों और नाटकों में बखूबी पिरोया है और लोगों के मनों तक पहुँचाया है। देश भर में आकाशवाणी एवं टीवी पर समय-समय पर इनके ये कार्यक्रम देखे व सुने जा सकते है। गायक कवि कलाकार मास्टर छोटूराम अपने सिद्धांतों और कला से किसी भी क़ीमत पर समझौता नहीं करते। आज जब नग्न संस्कृति गीतों और किस्सों में हावी है। तब भी इन्होने अपने मूल्यों को बनाये रखा और हमारे ऐतिहासिक और पौराणिक किस्सों को जेब से पैसे लगाकर रिलीज़ करवाया है। बेशक आज के तड़क भड़क वाले अश्लील वीडियो की तुलना में उनको कम शेयर किया गया है लेकिन वास्तव में उन्होंने हमारी धरोहर को सहेजने कि दिशा में अपना अमूल्य योगदान दिया है। पितृभक्त श्रवण कुमार-कुमार और फैशन की फटकार इनके पहले दो ऑडियो एल्बम है जिनको लोग आज बीस साल बाद भी सुन रहे है और सोशल मीडिया पर शेयर कर रहें है। 'कड़े गए वह नाथू-सुरजा' हरियाणा की बदलती संस्कृति पर फ़ल्मिाया गया उनका सुपर हिट गीत है जिसको बहुत पसंद और शेयर किया गया है। ऐसतिहासिक 'नरसी का भात' किस्सा दर्शकों को पूरी रात भर सुनने को मजबूर कर देता है। वास्तव में अपनी प्राचीन कला को बनाये रखना बहुत बड़ी बात है। आज के दौर में युवा पीढ़ी यू ट्यूब और अन्य सोशल प्लेटफार्म पर घटिया स्तर के वीडियोस और ऑडियो को पसंद करती नज़र आ रही है। ऐसे में मास्टर छोटूराम के सामाजिक गीतों के प्रयास बड़ी छाप छोड़ रहें है। मीडिया को ऐसे कलाकारों के प्रयासों को जोर-शोर से प्रचारित-प्रसारित करना चाहिए।ताकि हमारे प्राचीन मूल्यों को आज की इस शोषणकारी और अश्लील संस्कृति से दूर रखा जा सके।

जब मास्टर छोटूराम जैसे कलाकर पैसों के लिए अपनी कला से समझौता नहीं करते तो हम क्यों घर बैठे कर रहें है। अश्लील गीतों को समाज से बाहर करने के लिए हमें अच्छे गीतों और अच्छे कलाकरों को उचित मान-सम्मान देना ही होगा, तभी हम कला को वास्तविक रूप देकर एक रहने योग्य समाज आने वाली पीढ़यों को देकर जा पाएंगे। लोक कलाएँ वास्तव में किसी भी समाज की नब्ज होती है। हमें अपने बच्चों को इन कलाओं से अवश्य रूबरू करवाना चाहिए। साथ ही ये भी ध्यान रखना चाहिए कि आज के इस इंटरनेट युग में हमारे बच्चे क्या देख रहें है क्या सुन रहें है। अच्छे कलाकार और उनकी कलाएँ समाज के सच्चे पथ प्रदर्शक है लेकिन उनको चुनना हमारी जिम्मेवारी है। प्रदेश एवं केंद्र सरकार को आज की बिगड़ती संस्कृति के लिए दोषी तड़क-भड़क के गानों को खासकर यू ट्यूब जैसे प्लेटफार्म पर बैन करना चाहिए। मास्टर छोटूराम जैसे कलाकारों को ढूँढकर उनके लिए-लिए एक सरकारी प्लेटफार्म एवं आर्थिक पैकेज की व्यस्था करने की ज़रूरत है ताकि वह हमारी संस्कृति को बचाने के लिए कर रहें प्रयासों को और आगे गति दे सके। हमारे वीर सपूतों की जीवनियों को मास्टर छोटूराम की तरह रागिनी, नाटक और किस्सों के जरिये अब बदलते दौर के डिजिटल उपकरणों के माध्यम से घर-घर तक पहुँचाने की ज़रूरत है ताकि आने वाली पीढ़ी हमारे वीरों के आदर्शों को अगली पीढ़ी तक सौंप सके और हम एक अच्छे अपने हिंदुस्तान को उनके हाथों में सौंप सके। जिसका सपना हमारे शहीदों ने अपनी जान देते वक़्त देखा था। इसलिए ज़रूरी है कि केंद्र सरकार ऐसे ज़मीन से जुड़े सच्चे कलाकरों के लिए अलग से कानून बनाकर हर राज्य सरकार को अपने क्षेत्र के हिसाब से लागू करवाए, तभी हमारी संस्कृति, संस्कार और धरोहर बच पाएंगे।

# कम नहीं है त्रिभाषा नीति के पालन में आने वाली चुनौतियाँ

**प्रियंका सौरभ**

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) २०२० बहुभाषी शिक्षा को बढ़ाने और भाषाई विविधता की सुरक्षा के उद्देश्य से त्रि-भाषा ढांचा प्रस्तुत करती है। आठवीं अनुसूची में मान्यता प्राप्त २२ आधिकारिक भाषाओं और बोलियों की समृद्ध विविधता के साथ, क्षेत्रीय आवश्यकताओं और राष्ट्रीय एकता के बीच संतुलन हासिल करना काफ़ी चुनौतीपूर्ण है। गैर-हिंदी भाषी राज्यों की चिंताएँ कथित भाषाई प्रभुत्व से सम्बंधित मुद्दों और इस नीति को कार्यान्वित करने में व्यावहारिक कठिनाइयों पर ज़ोर देती हैं। त्रि-भाषा नीति का लक्ष्य बहुभाषिकता को प्रोत्साहित करना है, जिससे राष्ट्रीय एकता और सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा मिलेगा और भारत का भाषाई परिदृश्य समृद्ध होगा। उदाहरण के लिए, उत्तर भारतीय स्कूलों में तमिल पढ़ाने से सांस्कृतिक समझ को बढ़ावा मिल सकता है और क्षेत्रीय अंतर को पाटने में मदद मिल सकती है। बहुभाषिकता को अपनाने से न केवल संज्ञानात्मक क्षमताएँ, समस्या समाधान कौशल और रचनात्मकता बढ़ती है, बल्कि समग्र शैक्षणिक सफलता भी बढ़ती है।

अनेक भाषाओं, विशेषकर क्षेत्रीय भाषाओं में दक्षता से सरकारी नौकरियों, अनुवाद और पर्यटन में विभिन्न कैरियर के रास्ते खुलते हैं। इसके अलावा, कूटनीति और बहुराष्ट्रीय निगमों में पदों के लिए बहुभाषी कौशल अक्सर आवश्यक होते हैं। नीति में यह अनिवार्य किया गया है कि सीखी जाने वाली कम से कम दो भाषाएँ भारत की मूल भाषाएँ हों, जिससे देश की भाषाई विरासत और साहित्य का संरक्षण हो सके। भारत की शास्त्रीय और क्षेत्रीय भाषाई परंपराओं को बनाए रखने के लिए संस्कृत, बंगाली, तेलुगु और मराठी जैसी भाषाओं का प्रचार-प्रसार अत्यंत महत्वपूर्ण है। हालाँकि, तमिलनाडु, कर्नाटक और पश्चिम बंगाल जैसे राज्य इस नीति को हिन्दी को धीरे-धीरे थोपने की नीति के रूप में देखते हैं। चूंकि शिक्षा एक समवर्ती विषय है, इसलिए केंद्रीकृत भाषा सीखने की नीति लागू करना संघीय सिद्धांतों के लिए चुनौतियाँ उत्पन्न करता है। तमिलनाडु सरकार ने एनईपी २०२० की तीन-भाषा आवश्यकता का पालन नहीं करने का विकल्प चुना है, जिसके परिणामस्वरूप राज्य के लिए समग्र शिक्षा अभियान के तहत वित्त पोषण में देरी हो रही है।

इसके अतिरिक्त, कई राज्यों को इन अतिरिक्त भाषाओं के लिए योग्य शिक्षकों की कमी का सामना करना पड़ रहा है, जिससे सरकारी स्कूलों में कार्यान्वयन जटिल हो रहा है। उदाहरण के लिए, ओडिशा और केरल के स्कूलों को सीमित उपलब्धता के कारण हिन्दी शिक्षकों को ढूँढने में संघर्ष करना पड़ रहा है। अतिरिक्त भाषा पाठ्यक्रम शुरू करने से भी छात्रों पर दबाव बढ़ सकता है, जिससे गणित जैसे आवश्यक विषयों में उनकी दक्षता प्रभावित हो सकती है। क्षेत्रीय दलों का प्रतिरोध भाषा नीतियों को अपनाने में महत्वपूर्ण चुनौतियाँ उत्पन्न करता है। गैर-हिंदी भाषी राज्यों में राजनीतिक समूह अक्सर इन नीतियों को अपने स्थानीय शासन में घुसपैठ के रूप में देखते हैं, जिसके परिणामस्वरूप विरोध होता है। कई ग्रामीण छात्रों को दूसरी भाषा सीखने में कठिनाई होती है, जिससे तीसरी भाषा सीखने की प्रक्रिया जटिल हो जाती है। उदाहरण के लिए, ग्रामीण बिहार में 40% छात्रों को अंग्रेज़ी भाषा सीखने में कठिनाई होती है, जिससे उनकी अन्य भाषाएँ सीखने की क्षमता में बाधा आती है।

राज्य हिन्दी की अपेक्षा अपनी क्षेत्रीय भाषाओं को प्राथमिकता देते हैं, जिससे केंद्रीय नीतियों के साथ उनका सम्बंध टूट जाता है। पश्चिम बंगाल में बंगाली-अंग्रेज़ी शिक्षा पर अधिक ज़ोर दिया जाता है तथा अनिवार्य हिन्दी शिक्षा को अस्वीकार कर दिया जाता है। सरकारी स्कूलों में, विशेषकर आर्थिक रूप से वंचित राज्यों में, अक्सर भाषा शिक्षकों, संसाधनों और डिजिटल भाषा प्रयोगशालाओं के लिए आवश्यक धन की कमी होती है। पूर्वोत्तर भारत में तीसरी भाषा पढ़ाने के लिए योग्य शिक्षकों की कमी से प्रभावी नीति कार्यान्वयन में बाधा आती है। राज्यों के लिए एक मानकीकृत त्रि-भाषा नीति का पालन करने की बजाय अपनी क्षेत्रीय भाषा चुनने की स्वतंत्रता होना अधिक लाभदायक होगा। उदाहरण के लिए, कर्नाटक सरकार हिन्दी लागू करने के बजाय कन्नड़, अंग्रेज़ी और विद्यार्थी की पसंद की भाषा पढ़ाने पर ध्यान केंद्रित कर सकती है। शिक्षक प्रशिक्षण को बढ़ावा देना, ई-लर्निंग संसाधनों का विकास करना, तथा भाषा अध्ययन के लिए छात्रवृत्ति प्रदान करना स्थिति में काफ़ी सुधार ला सकता है।

आंध्र प्रदेश में डिजिटल भाषा प्रयोगशालाएँ पहले से ही प्रौद्योगिकी के माध्यम से स्थानीय भाषा शिक्षा को बढ़ावा देने में प्रगति कर रही हैं। छात्रवृत्ति, कैरियर प्रोत्साहन और व्यावहारिक भाषा प्रशिक्षण की पेशकश से छात्रों को स्वेच्छा से अतिरिक्त भाषाएँ सीखने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है। यूजीसी संस्कृत, पाली और फारसी में अध्ययन के लिए छात्रवृत्ति प्रदान करता है, जिससे भाषाई विविधता को बनाए रखने में मदद मिलती है। केंद्र सरकार को भाषा नीति पर चर्चा में राज्यों को शामिल करना चाहिए ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि यह स्थानीय आवश्यकताओं को पूरा करती है। संयुक्त शिक्षा समिति की स्थापना से राज्यों को कार्यान्वयन प्रक्रिया में अधिक आवाज़ मिल सकेगी। मूल समस्या, शिक्षा में भाषा मानक और शिक्षण गुणवत्ता में गिरावट। कोचिंग सेंटरों ने विज्ञान और गणित में बढ़त ले ली है, तथा भाषा शिक्षा को पीछे छोड़ दिया है। यद्यपि कई सरकारी स्कूलों में अंग्रेज़ी एक अनिवार्य विषय बन गया है, फिर भी प्रवीणता का स्तर निराशाजनक रूप से निम्न बना हुआ है।

शिक्षकों का सीमित अंग्रेज़ी कौशल सीधे तौर पर छात्रों की पढ़ाई पर प्रभाव डालता है, जैसा कि आंध्र प्रदेश में अंग्रेज़ी माध्यम की शिक्षा की ओर बदलाव से स्पष्ट है। हिन्दी के लिए भी स्थिति बहुत बेहतर नहीं है; इस भाषा में शिक्षण स्तर का भी उतना ही अभाव है। हिन्दी और अन्य क्षेत्रीय भाषाओं को अक्सर सक्रिय शिक्षण के लिए आवश्यक उपकरण के बजाय मात्र सांस्कृतिक प्रतीक के रूप में देखा जाता है। इसके अतिरिक्त, पढ़ने की आदतों में गिरावट भाषा शिक्षा के क्षेत्र में अधिक महत्वपूर्ण चुनौतियों की ओर इशारा करती है। स्कूलों में पढ़ने की संस्कृति को बढ़ावा नहीं दिया जा रहा है, जिससे अंततः दीर्घकालिक भाषा कौशल पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। भारत की विविधता में एकता बनाए रखने के लिए एक समेकित भाषाई ढांचा तैयार करना आवश्यक है। भाषा के चयन में लचीलापन प्रदान करना, शिक्षक प्रशिक्षण को बढ़ाना, तथा क्षेत्रीय भाषा शिक्षा को बढ़ावा देना कार्यान्वयन सम्बंधी बाधाओं को दूर करने में सहायक हो सकता है।

अनुवाद और डिजिटल शिक्षा के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग भाषाई विभाजन को प्रभावी ढंग से पाट सकता है। केंद्र और राज्य के बीच सकारात्मक बातचीत और व्यावहारिक समझौता ही आगे का सबसे अच्छा रास्ता है। आपातकाल के दौरान शिक्षा को समवर्ती सूची में डाल दिया गया, जिसका अर्थ है कि यह एक संयुक्त जिम्मेदारी है। तीसरी भाषा से सम्बंधित विवादों के कारण समग्र शिक्षा, जो एक आवश्यक शिक्षा पहल है, के वित्तपोषण में बाधा नहीं आनी चाहिए।

## हो 'परिपक्व' खोलों खाता-बही...!

'कुढ़-कुढ़' के ही क्यों? है जीना,
गम के आँसू क्यों हरदम पीना।
अपने ही व्यक्ति को दोष देना,
अपना रोना हरेक बार ही रोना।
जब था दम क्यों? न बढे.कदम,
अब 'रंज' ना कर न ढ़ा सितम।

'कुढ़-कुढ़' के ही क्यों? है जीना,
गम के आँसू क्यों हरदम पीना।
हर कोई 'सिद्ध' हस्त नहीं होता,
शिक्षा ली उसकी तरंग न खोता।
तू कब होगा 'बड़ा' शरीर से नहीं,
हो 'परिपक्व' खोलों खाता-बही।

'कुढ़-कुढ़' के ही क्यों? है जीना,
गम के आँसू क्यों हरदम पीना।
उम्र अभी-भी है बहुत-सी जाकी,
सुख-चैन की बाँसूरी बजा साकी।
'चल' निकल पड़ दिखा दें झाँकी,
कर कुछ ऐसा कसर न रहे बाकी।

**संजय एम तराणेकर**

# क्या दिल्ली के खिलाड़ियों की चमकेगी किस्मत? सीएम रेखा ने उठाया ये कदम

भारत की स्टार टेबल टेनिस खिलाड़ी मनिका बत्रा ने दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता से मुलाकात कर राजधानी में खेलों के विकास से जुड़े अहम मुद्दों पर चर्चा की। बत्रा ने कहा यह देखकर उत्साहवर्धक लगा कि सरकार खेलों के बुनियादी ढांचे में सुधार युवा खिलाड़ियों को अधिक अवसर प्रदान करने और जमीनी स्तर पर खेल कार्यक्रमों को मजबूत करने के लिए प्रतिबद्ध है।

**नई दिल्ली।** भारत की स्टार टेबल टेनिस खिलाड़ी मनिका बत्रा ने दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता से मुलाकात कर राजधानी में खेलों के विकास से जुड़े अहम मुद्दों पर चर्चा की। इस दौरान खास तौर पर जमीनी स्तर पर खिलाड़ियों को सशक्त बनाने और राज्य के एथलीटों के कल्याण पर चर्चा हुई। मनिका बत्रा ने कहा, "मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता के साथ हमारी मुलाकात नई खेल नीतियों पर केंद्रित रही, जिसमें जमीनी स्तर पर खिलाड़ियों के विकास और राज्य के एथलीटों के कल्याण पर विशेष ध्यान दिया गया।₹

बत्रा ने कहा, "यह देखकर उत्साहवर्धक लगा कि सरकार खेलों के बुनियादी ढांचे में सुधार, युवा खिलाड़ियों को अधिक अवसर प्रदान करने और जमीनी स्तर पर खेल कार्यक्रमों को मजबूत करने के लिए प्रतिबद्ध है।"

**खेल जगत में बदलाव की अटकलें तेज**

बता दें कि दिल्ली में रेखा सरकार बनने के बाद खेल जगत में बदलाव की अटकलें तेज हो गई हैं। खास तौर पर उन खिलाड़ियों को लेकर चर्चा है जो पुरानी सरकार के रवैये से परेशान होकर दूसरे राज्यों का रुख कर चुके हैं। क्या भाजपा सरकार की नीतियां उन्हें फिर से दिल्ली का रुख करने के लिए प्रेरित करेंगी या फिर वे अपने मौजूदा संघों और संगठनों में लौट जाएंगे?

**दिल्ली को छोड़कर अन्य राज्य से खेलने वाले खिलाड़ियों की सूची**

**वंतिका अग्रवाल** - शतरंज की मास्टर वंतिका अग्रवाल दिल्ली से खेलती थीं। उन्होंने अपनी सारी पढ़ाई दिल्ली से ही की। हालांकि, बेहतर सुविधाएं न मिलने के कारण इस खिलाड़ी ने उत्तर प्रदेश के लिए खेलना शुरू कर दिया। उत्तर प्रदेश सरकार ने उन्हें 2 करोड़ रुपए की पुरस्कार राशि दी।

**ऋचा मिश्रा और चारू मिश्रा** - ऋचा मिश्रा और चारू मिश्रा दिल्ली से तैराकी प्रतियोगिताओं में भाग लेती थीं। लेकिन, यहां पदक जीतने के बाद भी उन्हें कोई आर्थिक सहायता नहीं दी गई। इस वजह से दोनों बहनों ने दिल्ली छोड़कर कर्नाटक और आंध्र प्रदेश से खेलना शुरू कर दिया। आज दोनों बहनें CISF में कार्यरत हैं।

**अंकुर धामा** - अंकुर धामा एक एथलीट हैं। वे पहले दिल्ली से खेलते थे और वे अंधे हैं। वर्तमान में उनकी उम्र 29 वर्ष है। हालाँकि, एशियाई चैंपियनशिप में पदक जीतने के बाद, उन्हें पूर्व दिल्ली सरकार द्वारा कोई पुरस्कार राशि नहीं दी गई थी। जिसके कारण आज यह एथलीट हरियाणा से खेल रहा है।

**नीरज यादव** - नीरज यादव डिस्कस थ्रो करते हैं। वह एक दिव्यांग खिलाड़ी हैं। एशियाई पदक जीतने के बाद भी उन्हें सरकार की तरफ से कोई मदद या नौकरी नहीं दी गई, जिसके कारण उन्होंने दिल्ली छोड़कर उत्तर प्रदेश से खेलना शुरू कर दिया।

**विजय तोमर** - विजय तोमर 100 मीटर लंबी कूद के एथलीट हैं। वह पोलियो के मरीज भी हैं। एशियाई रजत पदक जीतने के बाद भी दिल्ली सरकार की तरफ से कोई मदद नहीं की गई। जो मदद दी गई, उससे एथलीट का खर्च भी पूरा नहीं हो पाया। जिसके कारण उन्होंने उत्तर प्रदेश से खेलने का फैसला किया।

**मदन** – मदन टी-11 ब्लाइंड हैं। वे राष्ट्रीय स्तर के स्वर्ण पदक विजेता रह चुके हैं। वे वर्तमान में हरियाणा के लिए खेल रहे हैं। खिलाड़ी सरकार के खिलाफ विरोध प्रदर्शन नहीं कर पा रहे हैं। इनके अलावा कई ऐसे खिलाड़ी भी हैं जो आगे नहीं आते और सरकार का विरोध नहीं कर पाते। हालांकि, दिल्ली में सत्ता परिवर्तन के साथ ही इन खिलाड़ियों की दिल्ली में वापसी की उम्मीदें बढ़ गई हैं।

दिल्ली में राष्ट्रीय स्तर पर जीतने वाले खिलाड़ियों को प्रथम स्थान के लिए 1000 रुपये, दूसरे स्थान के लिए 75000 रुपये और तीसरे स्थान के लिए 50000 रुपये की आर्थिक सहायता दी जाती है। जो दिल्ली के खिलाड़ियों के लिए नाकाफी है।

# फोटो को लेकर विवादों में पीसीसी अध्यक्ष, लिंगराज मंदिर के अंदर ली गई फोटो अब वायरल

**मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओड़िशा**

**भुबनेश्वर:** पीसीसी अध्यक्ष भक्त चरण दास एक फोटो पोस्ट कर विवाद में घसीटे गए हैं। माना जा रहा है कि उन्होंने लिंगराज मंदिर के अंदर फोटो खींची थी, जिसकी फोटो सोशल मीडिया पर वायरल हो रही है। पीसीसी अध्यक्ष ने लिंगराज मंदिर के अंदर अपने समर्थकों के साथ फोटो खिंचवाई।

प्रतिबंध के बाद भी उन्होंने मंदिर के अंदर तस्वीरें लीं।इसलिए, तस्वीरें लेने का प्रश्न ही नहीं उठता, क्योंकि लिंगराज मंदिर के अंदर मोबाइल फोन ले जाना प्रतिबंधित है। लेकिन पीसीसी अध्यक्ष ने इस नियम का उल्लंघन कर मंदिर के अंदर अपने समर्थकों के साथ फोटो खिंचवाने के बाद विवाद खड़ा कर दिया है। इस बात पर सवाल उठ रहे हैं कि मंदिर के अंदर यह फोटो किसने ली।



# अधिकारीयों ने नेता क्या मुख्यमंत्री के आदेशों की धज्जियां उड़ा रहे हैं

**मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओड़िशा**

भूबनेश्वर : मुख्यमंत्री ने शिकायतकर्ता को सलाह दी कि वह अधिक खर्च करके भुवनेश्वर न आएं। उन्होंने लोगों से ब्लॉक और जिला स्तर पर शिकायतें दर्ज कराने की अपील की और अधिकारियों को उनका समाधान करने के निर्देश दिए। तो सवाल यह उठता है कि आखिर अधिकारी को मुख्यमंत्री के आदेशों की अवहेलना करने की हिम्मत कहां से मिलती है? जनता की सरकार में दाहगंज जनता है। सुनवाई तो होती है, लेकिन समाधान नहीं होता। और इसके लिए शिकायतकर्ता को बार-बार मुख्यमंत्री के शिकायत कक्ष तक दौड़ना पड़ता है। मुख्यमंत्री जिला स्तर पर समाधान के निर्देश दे रहे हैं, लेकिन सरकारी अधिकारी इस ओर ध्यान नहीं दे रहे हैं।अधिकारी मुख्यमंत्री के आदेशों की धज्जियां उड़ा रहे हैं। यह हम नहीं कह रहे हैं, बल्कि मुख्यमंत्री शिकायत प्रकोष्ठ में आने वाले अधिकांश आम लोगों के मुंह से यही सुनने को मिल रहा है। सरकार ने स्वयं ही आरोप स्वीकार कर लिए हैं। मुख्यमंत्री के आदेश के बाद भी शिकायतों का निवारण न होने पर सरकार ने कटक के 48 सरकारी कर्मचारियों का वेतन रोक दिया है। शिकायतकर्ता ने भुवनेश्वर में सुनवाई के बावजूद जिला स्तर पर शिकायत का समाधान नहीं होने पर असंतोष व्यक्त किया है। दूसरी ओर, मंत्री ने बाबू के मानसिक स्वास्थ्य को लेकर कार्रवाई की चेतावनी दी है। मोहन माझी ने नई सरकार के नौ महीने के कार्यकाल में नौवीं बार मुख्यमंत्री शिकायत प्रकोष्ठ में लोगों की समस्याएं सुनीं। मुख्यमंत्री ने कहा कि अब तक 8,737 शिकायतें दर्ज की गई हैं, जबकि 7,331 शिकायतों का समाधान किया जा चुका है। सरकार ने गांवों से आने वाली शिकायतों के त्वरित समाधान पर जोर दिया है। उधर, लोगों का कहना है कि बार-बार ब्लॉक में दौड़ने के बावजूद अधिकारी नहीं सुन रहे हैं। शिकायतकर्ता को भारी खर्च पर भुवनेश्वर न आने की सलाह दी गई।

# टाटा शहर को दुल्हन की तरह सजा कर कंपनी ने दी संस्थापक को भावभीनी श्रद्धांजली

**कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड**

**जमशेदपुर**, झारखंड स्थित देश का सर्वाधिक पुरानी लौह नगरी में कार्यक्रम की भव्य शुरुआत संस्थापक को श्रद्धांजलि अर्पित करने के साथ हुई. इस अवसर पर वरिष्ठ अधिकारियों, टाटा वर्कर्स यूनियन के पदाधिकारियों, समूह कंपनियों के अधिकारियों और जमशेदपुर के नागरिकों ने संस्थापक को श्रद्धांजलि अर्पित की. इसके बाद, जमशेदपुर शहर के पोस्टल पार्क में भी संस्थापक को श्रद्धांजलि अर्पित की गई. संस्थापक दिवस की पूर्व संध्या पर एन चंद्रशेखरन ने टाटा स्टील और समूह कंपनियों के वरिष्ठ नेताओं के साथ जुबिली पार्क में विद्युत सजावट की औपचारिक शुरुआत की. इस सजावट ने पूरे शहर को उत्सवमय बना दिया, जो जमशेदपुर के नागरिकों और आगंतुकों के लिए आकर्षण का केंद्र बने ।






संस्थापक दिवस समारोह की एक प्रमुख विशेषता थी जमशेदपुर के 20 से अधिक प्रतिष्ठित स्थलों, प्रमुख इमारतों और गोलचक्करों की भव्य विद्युत सजावट. यह रंग-बिरंगी सजावट पूरे शहर को एक अद्भुत रूप में परिवर्तित कर दिया. इस ऐतिहासिक अवसर को और यादगार बनाने के लिए जुबिली पार्क को 3 से 5 मार्च तक आम नागरिकों के लिए खोला जाएगा, जिससे वे इस अद्भुत आयोजन का हिस्सा बन सकेंगे और उसकी भव्यता का आनंद ले सके।इस वर्ष के संस्थापक दिवस की थीम ₹बाजार तकनीक और लागत में नेतृत्व₹ रही यह थीम टाटा स्टील के संकल्प को दोहराती है कि ग्राहकों की आवश्यकताओं को प्राथमिकता देंगे और वैश्विक लागत नेतृत्व हासिल करने के लिए प्रौद्योगिकी का प्रभावी उपयोग करेंगे ।

1 मार्च को टाटा स्टील के वरिष्ठ प्रबंधन द्वारा नए प्रेम ज्योति प्रांगण स्कूल का उद्घाटन किया गया. यह नया स्कूल भवन आधुनिक और सतत शिक्षा के लिए अनुकूल वातावरण प्रदान करेगा. इसके अलावा, क्षेत्र के पहले पेट क्रेमेटोरियम का भी उद्घाटन किया गया, जो पालतू पशुओं के सम्मानजनक और पर्यावरणीय रूप से अनुकूल अंतिम संस्कार के लिए सुविधा प्रदान करता

3 मार्च को मेहरबाई टाटा मेमोरियल अस्पताल में एक ऑपरेशन थिएटर का उद्घाटन किया गया. यह सुविधा अस्पताल में कैंसर सर्जरी की सेवाएं उपलब्ध कराएगी, जिससे मरीजों को इलाज के लिए अन्य स्थानों पर जाने की आवश्यकता नहीं होगी. इसके बाद, 4 मार्च को टाटा मेन अस्पताल में एक स्पाइन क्लिनिक का उद्घाटन किया जाएगा, जो जटिल रीढ़ संबंधित समस्याओं के व्यापक प्रबंधन के लिए डिज़ाइन किया गया है.

2 और 3 मार्च को टाटा स्टील स्पोर्ट्स डिवीजन ने जमशेदपुर के जेआरडी टाटा स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स में विभिन्न खेल गतिविधियों का आयोजन किया. यह आयोजन टाटा स्टील के सामुदायिक विकास और खेलों के प्रति प्रतिबद्धता का प्रतीक था.

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023